अधिकतम :23° C
न्यूनतम: 11° C

खबरें छुपाता नहीं, छापता है

शाह टाइम्स

हल्द्वानी, बुधवार 26 नवम्बर 2025 हल्द्वानी संस्करण: वर्ष 23 अंक 91 पृष्ठ 12 मूल्य रुपये 5.00

विस्तृत खबरों के लिए QR कोड स्कैन करें। मुफ्त पढ़ें E-paper

shahtimes2015@gmail.com मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष 6 विक्रमी सम्वत् 2082 4 जमादिउल उखरा1447 हिजरी नई दिल्ली, मुजफ्फरनगर, देहरादून, हल्द्वानी, मुरादाबाद, बरेली, मेरठ व लखनऊ से प्रकाशित

दुनिया के लिए मार्गदर्शक है भारत का संविधानः बिरला पेज 2

टी-20 विश्वकपः 15 फरवरी को होगी भारत-पाकिस्तान की भिड़ंत खेल टाइम्स

यूपी विधानसभा चुनावों में ओवैसी का अखिलेश यादव से मुलाकात का वादा सम्पादकीय

पाकिस्तान ने की आधी रात अफगानिस्तान में तीन एयरस्ट्राइक, 10 की मौत पेज 12

संक्षिप्त समाचार

ज्वालामुखी विस्फोट के कारण प. एशिया की कई उड़ानें रद्द

नई दिल्ली। इथोपिया में हेली गुब्बी ज्वालामुखी विस्फोट से निकले राख के बादलों की वजह से भारत से पश्चिम एशियाई शहरों को जाने वाली कई उड़ानें रद्द करनी पड़ी हैं। टाटा समूह की विमान सेवा कंपनी एयर इंडिया ने मंगलवार को बताया कि उसने सोमवार और मंगलवार को अबतक कुल 13 उड़ानें रद्द की हैं। अकासा एयर ने भी बताया कि उसने सोमवार और मंगलवार को जेद्दा, कुवैत और अबु धाबी को जाने वाली अपनी सभी उड़ानें रद्द कर दी हैं। एयर इंडिया ने बताया कि सोमवार को सात उड़ानें रद्द कीं। इनमें अमेरिका के नेवार्क से दिल्ली, न्यूयॉर्क से दिल्ली, दुबई से हैदराबाद, कतर के दोहा से मुंबई, दुबई से चेन्नई, दम्मम से मुंबई और दोहा से दिल्ली की उड़ानें शामिल हैं। एयरलाइंस ने मंगलवार को चेन्नई-मुंबई, हैदराबाद- दिल्ली, मुंबई-हैदराबाद, हैदराबाद-मुंबई, मुंबई-कोलकाता और कोलकाता मुंबई उड़ानें रद्द की हैं। एयरलाइंस ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर बताया कि वह जो विमान ज्वालामुखी से निकले राख के बादलों वाले इलाकों से होकर गुजरे हैं उनकी जांच की जा रही है। उसने बताया कि प्रभावित यात्रियों को ग्राउंड टीम हरसंभव सहायता मुहैया कराई जा रही है।

ज्वालामुखी विस्फोट के कारण फिलहाल चिंता की बात नहीं

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने मंगलवार को कहा कि वह इथोपिया में हेली गुब्बी ज्वालामुखी के फटने के बाद स्थिति पर लगातार नजर रख रही है और फिलहाल उड़ानों को लेकर चिंता की बात नहीं है। नागरिक उड्डयन मंत्रालय ने मंगलवार को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक पोस्ट में बताया कि ज्वालामुखी से निकले राख के बादल पूर्व दिशा में बढ़ रहे हैं। ऐसे में एटीसी, मौसम विभाग, विमान सेवा कंपनियों और अंतर्राष्ट्रीय विमानन एजेंसियों के साथ वह भी निर्बाध समन्वय सुनिश्चित कर रहा है। भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण (एएआई) ने पायलटों के लिए जरूरी नोटिस जारी किया है।

राजस्थान-मप्र के 16 शहरों में तापमान 10 डिग्री से नीचे

नई दिल्ली। देश के पहाड़ी राज्यों में बर्फबारी और सर्द हवाओं से मैदानी राज्यों में ठिठुरन बढ़ने लगी है। राजस्थान में सोमवार को कोटा, उदयपुर समेत कई जिलों में दिन के तापमान में 2 डिग्री सेल्सियस तक गिरावट हुई। 10 शहरों में न्यूनतम तापमान 10 डिग्री से कम रहा। फतेहपुर में सबसे कम, 5.8 डिग्री तापमान दर्ज हुआ। मध्य प्रदेश में भी सर्द हवाओं ने ठिठुरन बढ़ा दी है। नौगांव, राजगढ़, नरसिंहपुर और रीवा में सोमवार को तापमान 8 से 10 डिग्री के बीच रहा। भोपाल सहित कई जिलों में लगातार तीसरे दिन बादल छाए रहे। मौसम विभाग ने राज्य में अगले चार दिन तक शीतलहर से राहत की संभावना जताई है। इधर, बिहार में सर्दी के साथ घने कोहरे का असर बढ़ गया है। बीते दिन, पटना, खगड़िया, गोपालगंज, सारण, बेगूसराय समेत 10 शहरों में सुबह-सुबह घना कोहरा देखने को मिला।

हिरासत में हिंसा और मौत सिस्टम पर धब्बाः सुप्रीम कोर्ट

शीर्ष अदालत की सख्त टिप्पणीः देश नहीं करेगा बर्दाश्त

शाह टाइम्स ब्यूरो

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने कड़ी टिप्पणी करते हुए कहा कि पुलिस हिरासत में हिंसा और मौतें हमारी व्यवस्था पर एक 'बड़ा दाग' है और देश अब इसे किसी भी हालत में बर्दाश्त नहीं करेगा।

सुप्रीम कोर्ट एक मामले का स्वत: संज्ञान लेते हुए सुनवाई कर रहा है, जो देशभर के पुलिस थानों में सीसीटीवी के ठीक से न चलने से जुड़ा है। अदालत ने इस दौरान राजस्थान में आठ महीनों में 11 हिरासत में मौतों पर गहरी चिंता जताई। दो जजों की बेंच न्यायमूर्ति विक्रम नाथ और संदीप मेहता ने मामले में कहा कि देश अब ऐसी घटनाओं को बर्दाश्त नहीं करेगा। यह सिस्टम पर धब्बा है। हिरासत में मौतें नहीं हो सकतीं। वहीं सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने कहा कि हिरासत में मौत को कोई भी व्यक्ति सही नहीं ठहरा सकता, लेकिन कोर्ट इस बात से नाराज हुआ कि केंद्र सरकार ने अब तक अपनी अनुपालन रिपोर्ट दाखिल नहीं की है। अदालत ने इस पर तीखा सवाल किया और पूछा कि केंद्र सरकार इस अदालत को हल्के में क्यों ले रही है? इसके बाद केंद्र ने तीन हफ्ते के भीतर हलफनामा देने का वादा किया।

सुप्रीम कोर्ट ने राजस्थान में आठ महीनों में 11 हिरासत में मौतों पर गहरी चिंता जताई

आर्मी अफसर की बर्खास्तगी सही, अपील खारिज

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को आर्मी के एक पूर्व ईसाई अफसर की उस याचिका को खारिज कर दिया, जिसमें उसने अपनी बर्खास्तगी को चुनौती दी थी।

अफसर पर आरोप था कि उसने अपने तैनाती स्थल पर रेजिमेंट की धार्मिक गतिविधियों में भाग लेने से इन्कार किया था। इसके बाद आर्मी ने उसे बर्खास्त कर दिया। सीजेआई सूर्यकांत और जस्टिस जॉयमाल्या बागची की बेंच ने अफसर को आर्मी के लिए मिस फिट माना और हाईकोर्ट के फैसले को बरकरार रखा। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि यह

- कहा- आप सेना के लायक नहीं, धार्मिक आदेश न मानने पर सेना से निकाले गए थे

आचरण गंभीर अनुशासनहीनता है और सेना जैसी संस्था में इसे बर्दाश्त नहीं किया जा सकता। यह मामला 2017 का है। अफसर सैमुअल कमलेसन 3तक कैवेलरी रेजिमेंट में लेफ्टिनेंट बने। उनकी यूनिट में मंदिर और गुरुद्वारा था, जहां हर हफ्ते धार्मिक परेड होती थी। वे अपने सैनिकों के साथ वहां तक जाते थे, लेकिन मंदिर के सबसे अंदर वाले हिस्से में पूजा, हवन या आरती के दौरान जाने से मना करते थे। उनका कहना था कि उनकी ईसाई मान्यता इसकी अनुमति नहीं देती और उनसे किसी देवी-देवता की पूजा करवाना गलत है।

महाराष्ट्र स्थानीय निकाय चुनाव मामले की सुनवाई टली

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय नेमहाराष्ट्र स्थानीय निकाय चुनावों से संबंधित मामले की सुनवाई को शुक्रवार तक के लिए स्थगित कर दिया। राज्य सरकार ने आरक्षण की 50 प्रतिशत सीमा से जुड़े मुद्दों पर राज्य चुनाव आयोग के साथ परामर्श जारी रहने का हवाला देते हुए समय मांगा था। मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत और न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची की पीठ को आयोग ने बताया कि 242 नगर परिषदों और 42 नगर पंचायतों के चुनाव के लिए दो दिसम्बर की तारीख पहले ही अधिसूचित की जा चुकी है।

अयोध्या में राम मंदिर में ध्वजारोहण की प्रक्रिया हुई पूरी

सदियों के घाव अब भर रहे हैं: मोदी

अयोध्या, वार्ता

- कहा- हमारा बहुत पुराना सपना अब पूरा हुआ, हम ऐसा समाज बनाएं, जहां कोई गरीब न हो
- बटन दबते ही मंदिर के शीर्ष पर फहराया ध्वज, मोदी हुए भावुक, आंसू पोछते दिखे साधु-संत

राम मंदिर में ध्वजारोहण की प्रक्रिया पूरी हुई। इस मौके पर पीएम मोदी ने अपार जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि हमारा बहुत पुराना सपना अब पूरा हुआ। सदियों पुराने घाव थे अब वह धीरे-धीरे भरने शुरू हुए। पीएम ने कहा कि हम ऐसा समाज बनाएं, जहां कोई गरीब न हो। कोई पीड़ित न हो। यह ध्वज युगों-युगों तक श्री राम के आदेशों और प्रेरणाओं को मानव मात्र तक पहुंचाएगा।

उन्होंने हर दानवीर, श्रमवीर, कारीगर, योजनाकार, वास्तुकार का अभिनंदन किया। यही वह नगरी है, जहां से श्रीराम ने अपना जीवन पथ शुरू किया था। विकसित भारत बनाने के लिए समाज की सामूहिक शक्ति की आवश्यकता है। यहां सप्त मंदिर बने हैं। यहां निषाद राज का मंदिर बना है, जो साधन नहीं साध्य और उसकी भावनाओं को पूजती है। यहां जटायु जी और गिलहरी की भी मूर्ति है, जो बड़े संकल्प की सिद्धि के लिए हर छोटे से छोटे प्रयास को दिखाती है। पीएम मोदी के बटन दबाते ही झंडा धीरे-धीरे ऊपर चढ़ता हुआ मंदिर के शीर्ष पर विराजमान हो गया। जैसे-जैसे झंडा ऊपर चढ़ता गया पीएम मोदी टकटकी लगाए उसे देखते रहे। पीएम मोदी इन पलों में भावुक नजर आए। ध्वजारोहण के समय सामने की कतार में साधु-संत बैठे हुए थे। वह भी भावुकता में अपने आंसू पोछते हुए नजर आए। इस कार्यक्रम में देश-दुनिया के करीब आठ हजार लोग आमंत्रित किए गए थे। निर्धारित शुभ मुहूर्त में प्रधानमंत्री ने राम मंदिर के मुख्य शिखर पर धर्मध्वज फहराया। जैसे ही केसरिया ध्वज पवन के संग लहराया, पूरा परिसर 'जय श्री राम' के उद्घोष से गूंज उठा। क्षण भर में वातावरण आध्यात्मिक ऊर्जा से भर गया और श्रद्धालुओं की भावनाएं उमंग में बदल गईं। धर्मध्वज फहराने से पहले वैदिक मंत्रोच्चार के बीच व्यापक पूजन-अर्चन सम्पन्न हुआ। यज्ञकुंडों से उठती आहुतियों की सुगंध और नगाड़ों की गूंज ने समारोह को भव्यता प्रदान की। पीएम ने ध्वजारोहण कर राष्ट्र को सनातन परंपरा की अखंडता, आस्था और सांस्कृतिक स्वाभिमान का संदेश दिया। इस अवसर पर देश-दुनिया से आए संत-महंत, विशिष्ट अतिथि और हजारों श्रद्धालु मौजूद रहे। सुरक्षा के कड़े इंतजामों के बीच राम नगरी उत्सव के रंग में डूबी रही। मंदिर परिसर से लेकर सरयू तट तक हर ओर दीप, पुष्प और रंगोलियों से सजा माहौल इस ऐतिहासिक उत्सव का साक्षात अनुभव करा रहा था। इस मौके पर सर संघचालक मोहन भागवत ने कहा कि आज हम सबके लिए सार्थकता का दिन है। इसके लिए जितने लोगों ने प्राण न्योछावर किए, उनकी आत्मा तृप्त हुई होगी। अशोक जी को वहां पर शांति मिली होगी। आज मंदिर का ध्वजारोहण हो गया। राम राज्य का ध्वज जो कभी अयोध्या में फहराता था, आज वह फहरा गया है। इस भगवा ध्वज पर रघुकुल का प्रतीक कोविदार वृक्ष है। यह वृक्ष रघुकुल की सत्ता का प्रतीक है। यह वह वृक्ष है जिसके लिए कहा जाता है, कि वृक्ष सबके लिए छाया देते हैं, स्वंय धूप में खड़े रहकर, फल भी दूसरों के लिए देते हैं। जाते जितनी कठिनाईयां हों, सूर्य भगवान उस संकल्प का प्रतीक है। इसमें सिर्फ एक ही पहिया है। जैसे सपना उन लोगों ने देखा था, बिल्कुल वैसा ही या यूं कहें कि उससे भी भव्य मंदिर बन गया है। सीएम योगी आदित्यनाथ के संबोधन में एक नई ऊर्जा दिखाई दी।

ये भारतीय सभ्यता के पुनर्जागरण का ध्वज

आज अयोध्या नगरी भारत की सांस्कृतिक चेतना के एक और उत्कर्ष-बिंदु की साक्षी बन रही है। श्रीराम जन्मभूमि मंदिर के शिखर ध्वजारोहण उत्सव का यह क्षण अद्वितीय और अलौकिक है। ये धर्म ध्वजा केवल एक ध्वज नहीं, ये भारतीय सभ्यता के पुनर्जागरण का ध्वज है। ये ध्वज संघर्ष से सृजन की गाथा है, सदियों से चले आ रहे स्वप्नों का साकार स्वरूप है, संतों की साधना और समाज की सहभागिता की सार्थक परिणीति है..

- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

चुनाव आयोग अब बीजेपी आयोग बन गयाः ममता बनर्जी

बोनगांव। पश्चिम बंगाल की सीएम ममता बनर्जी ने मंगलवार को कहा कि चुनाव आयोग अब निष्पक्ष नहीं रहा। यह 'बीजेपी आयोग' बन गया है। उन्होंने कहा कि अगर उन्हें बंगाल में चुनौती दी गई, तो वे पूरे देश में बीजेपी की नींव हिला देंगी।

ममता बोनगांव में एंटी-एसआईआर रैली को संबोधित कर रही थीं। ममता ने दावा किया कि यदि राज्य के मतुआ-बहुल क्षेत्रों में रहने वाले लोग नागरिकता (संशोधन) अधिनियम: सीएए के तहत स्वयं को विदेशी घोषित करते हैं, तो उन्हें तुरंत वोटर लिस्ट से हटा दिया जाएगा। इधर टीएमसी के 10 सांसद 28 नवम्बर को चुनाव आयोग से मिलेंगे। इसके लिए मंगलवार को पार्टी सांसद डेरेक ओ ब्रायन ने चीफ इलेक्शन कमिश्नर (सीईसी) ज्ञानेश कुमार को लेटर लिखकर सभी 10

- कहा: यह निष्पक्ष संस्था नहीं, 10 टीएमसी सांसद 28 नवम्बर को इलेक्शन कमीशन से मिलेंगे

सांसदों के नाम भेजे हैं। ममता ने पूछा- अगर एसआईआर का मकसद अवैध बांग्लादेशियों को हटाना है, तो बीजेपी शासित राज्यों में एसआईआर क्यों कराया जा रहा है? क्या बीजेपी यह स्वीकार कर रही है कि उसके 'डबल इंजन' वाले राज्यों में भी घुसपैठिए मौजूद हैं? अगर बांग्लादेशी समस्या है, तो आप मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश में एसआईआर क्यों चला रहे हैं? एक बार एसआईआर के बाद आई ड्राफ्ट वोटर लिस्ट सामने आ जाएगी, तब लोग समझ जाएंगे कि चुनाव आयोग और बीजेपी ने कितना बड़ा 'विनाश' किया है। मुझे बांग्लादेश एक देश के रूप में बहुत पसंद है, क्योंकि हमारी भाषा एक जैसी है। मैं बीरभूम से हूं, लेकिन एक दिन वे मुझे बांग्लादेशी कहेंगे। प्रधानमंत्री मोदी को 2024 में इसी वोटर लिस्ट के आधार पर वोट मिले थे। अगर आपका नाम हटा दिया जाता है, तो केंद्र सरकार को भी हटा देना चाहिए। इतनी जल्दी में एसआईआर क्यों चलाया जा रहा है? जब तक मैं यहां हूं, मैं उन्हें आपको बाहर (वोटर लिस्ट से) नहीं निकालने दूंगी। कोई भी आपको बाहर नहीं निकाल सकता।

तृणमूल नेताओं से मिलने पर चुनाव आयुक्त ने जताई सहमति

नई दिल्ली। मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार ने पश्चिम बंगाल में एसआईआर मामले में बढ़ते तनाव को लेकर तृणमूल कांग्रेस के नेताओं से मिलने के लिए सहमति जताई है। यह मुलाकात 28 नवम्बर को पूर्वाह्न 11 बजे होगी। श्री कुमार ने यह फैसला आगामी चुनावों से पहले राजनीतिक दलों से मिलकर उनकी चिंताओं को दूर करने की कोशिशों के तहत लिया है।

विधानसभा में सीएम सरमा बोले- सिंगर जुबीन का मर्डर हुआ

गुवाहाटी। असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने मंगलवार को विधानसभा में बताया कि सिंगर जुबीन गर्ग की मौत कोई हादसा नहीं, बल्कि हत्या थी। सरमा ने कहा कि यह गैर इरादतन हत्या या आपराधिक साजिश नहीं, बल्कि साफ-साफ मर्डर था। सीएम ने दावा किया कि एक आरोपी ने सिंगर की जान ली। वहीं अन्य लोगों ने हत्या में उसकी मदद की।

असम विधानसभा में विपक्षी पार्टियां जुबीन की मौत पर चर्चा के लिए स्थगन प्रस्ताव लेकर आई थीं। जिस पर सीएम सरमा ने विधानसभा में शीतकालीन सत्र के पहले दिन जवाब दिया। सीएम ने बताया कि एसआईटी ने अब तक इस मामले में सात लोगों को गिरफ्तार किया है, 252 गवाहों से पूछताछ की है और 29 सामान जब्त किए हैं। सीएम ने बताया कि गिरफ्तार आरोपियों में 4 से 5 लोगों पर हत्या का मामला दर्ज किया गया है। 52 साल के सिंगर-म्यूजिशियन जुबीन की 19 सितम्बर को सिंगापुर में समुद्र में तैरते समय संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई थी। वे नॉर्थ ईस्ट इंडिया फेस्टिवल (एनईआईएफ) में भाग लेने गए थे। उनकी मौत के खिलाफ राज्य भर में 60 से अधिक मामले दर्ज हुए थे। जुबीन की मौत मामले में पुलिस ने एनईआईएफ इवेंट के आयोजक श्यामकानु महंत, जुबीन के चचेरे भाई और पुलिस अधिकारी संदीपन गर्ग, मैनेजर सिद्धार्थ शर्मा, उनके बैंड के दो मेंबर- शेखर ज्योति गोस्वामी और अमृतप्रभा महंत को गिरफ्तार किया है। जुबीन के निजी सुरक्षा अधिकारियों- नंदेश्वर बोरा और प्रबीन बैश्य को भी गिरफ्तार कर लिया गया, जब पुलिस को उनके खातों से 1.1 करोड़ रुपये से अधिक के बड़े वित्तीय लेनदेन का पता चला। गिरफ्तार किए गए सभी सात लोग अभी न्यायिक हिरासत में हैं।

- मौत हादसा नहीं, एक आरोपी ने जान ली
- बाकियों ने मदद की, अब तक सात गिरफ्तार

अब भारत खरीदार नहीं, तकनीक का निर्माताः रक्षा मंत्री

राजनाथ बोलेः देश में स्वदेशीकरण आंदोलन चल रहा है, भारत की समुद्री शक्ति में हुई बढ़त

शाह टाइम्स ब्यूरो

नई दिल्ली। दिल्ली में आयोजित भारतीय नौसेना के सेमिनार 'स्वावलंबन 2025' में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने देश की बढ़ती आत्मनिर्भरता और बदलते रक्षा ढांचे पर बड़ा बयान दिया। उन्होंने कहा कि भारत अब केवल हथियार खरीदने वाला देश नहीं, बल्कि तकनीक बनाने, विकसित करने और निर्यात करने वाली ताकत बन रहा है। उनके मुताबिक देश में चल रहा स्वदेशीकरण आंदोलन सिर्फ नीतियों का परिणाम नहीं, बल्कि वैज्ञानिकों, इनोवेटर्स, स्टार्टअप्स और युवाओं की कड़ी मेहनत का प्रमाण है।

राजनाथ सिंह ने कहा कि भारत रक्षा क्षेत्र में आयातक नहीं, बल्कि निर्माता और अगुआ बनते हुए दुनिया को नई दिशा दिखा रहा है। उन्होंने बताया कि इनोवेशन और प्रोटोटाइप्स ने यह साबित कर दिया है कि भारत अब तकनीक का उपभोक्ता नहीं, बल्कि निर्यातक बनने की राह पर मजबूती से आगे बढ़ चुका है। उन्होंने कहा कि यह परिवर्तन वास्तविक स्वावलंबन की ओर बढ़ते राष्ट्रीय संकल्प का संकेत है। रक्षा मंत्री ने कहा कि भारत को विदेशी रक्षा उपकरणों पर निर्भरता कम करनी होगी। उन्होंने बताया कि किसी भी बड़े उपकरण को विदेश से खरीदना सिर्फ तत्काल लागत का मामला नहीं होता, बल्कि उसके रखरखाव, मरम्मत और स्पेयर पार्ट्स की दीर्घकालिक लागत भी देश को झेलनी पड़ती है। इसीलिए उन्होंने मजबूत और आत्मनिर्भर आपूर्ति श्रृंखला की जरूरत पर जोर दिया। उनके अनुसार भारत की सुरक्षा प्रणाली तभी मजबूत होगी, जब उसका तकनीकी ढांचा पूरी तरह भारत में विकसित और संचालित हो। स्वावलंबन 2025 में बोलते हुए सिंह ने कहा कि भारत आज समुद्री शक्ति के रूप में उभर रहा है और इसमें नौसेना के साथ देश के इनोवेटर्स का भी बड़ा योगदान है। उन्होंने कहा कि आज दुनिया में बहु-उपयोगी तकनीक का महत्व तेजी से बढ़ रहा है और भारत के युवा इनोवेटर्स इसी दिशा में नई ऊंचाइयों को छू रहे हैं। सिंह ने कहा कि वह जब भी इन युवा शोधकर्ताओं और स्टार्टअप्स से मिलते हैं, तो उनके अंदर समस्याओं को हल करने का आत्मविश्वास दिखाई देता है, जो उभरते भारत की पहचान है।

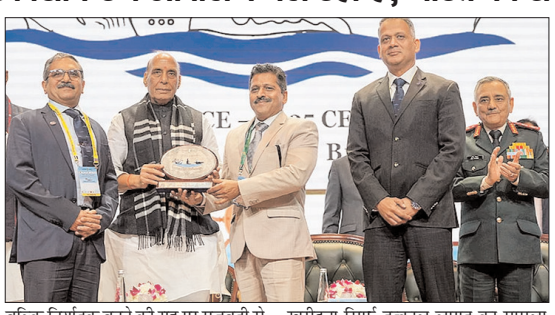

- भारत रक्षा क्षेत्र में आयातक नहीं, बल्कि निर्माता और अगुआ बनते हुए दुनिया को नई दिशा दिखा रहा

संक्षिप्त समाचार

दुनिया के लिए मार्गदर्शक है भारत का संविधान: बिरला

नई दिल्ली। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने संविधान को देश की आत्मा करार देते हुए कहा है कि भारत का संविधान दुनिया के अन्य देशों के लिए भी मार्गदर्शक है। श्री बिरला ने संविधान दिवस के उपलक्ष्य में जयपुर स्थित मणिपाल विश्वविद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में युवाओं से संवैधानिक जागरूकता का आह्वान करते हुए कहा कि संविधान को जानो, अपनाओ और संविधान के अनुसार जियो। उन्होंने कहा कि हमारे देश में बोली, भाषा, खानपान सहित अनेक विविधताएं हैं, लेकिन देश की समस्त विविधताओं को एक करने का काम हमारा संविधान करता है। हर विद्यालय- महाविद्यालय के शिक्षण पाठ्यक्रम में संविधान का अध्ययन होना चाहिए।

यूपीएस में शामिल होने के इच्छुक कर्मचारी जल्द करें आवेदन

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने एकीकृत पेंशन योजना (यूपीएस) में शामिल होने के इच्छुक पात्र कर्मचारियों से जल्द आवेदन करने की अपील की है। राष्ट्रीय पेंशन योजना (एनपीएस) के अंतर्गत पात्र कर्मचारियों और सेवानिवृत्त लोगों के लिए यूपीएस चुनने की अंतिम तिथि 30 नवम्बर 2025 है। यूपीएस का विकल्प चुनने के बाद वे एनपीएस में भी वापस जा सकते हैं। केंद्रीय वित्त मंत्रालय ने मंगलवार को एक प्रेस विज्ञप्ति जारी कर कहा कि यूपीएस में जाने की अंतिम तिथि नजदीक आने के मद्देनजर सभी संबंधित एनपीएस सबस्क्राइबर सीआरए प्रणाली के माध्यम से अपना यूपीएस अनुरोध ऑनलाइन प्रस्तुत कर सकते हैं। उन्हें 30 नवम्बर तक अपने संबंधित नोडल कार्यालय में विधिवत भरा हुआ आवेदन पत्र जमा करना होगा।

उदित राज ने भीम रैली की अनुमति न देने पर उठाए सवाल

नई दिल्ली, वार्ता

■ अंबेडकर और भीम शब्द से बीजेपी को नफरत

दलित, ओबीसी, अल्पसंख्यकऔर आदिवासी संगठनों के डोमा परिसंघ के अध्यक्ष डा. उदित राज ने कहा है कि उनके परिसंघ की 30 नवम्बर को यहां रामलीला मैदान में होने वाली भीम रैली की बाकायदा अनुमति ली गई थी, लेकिन अब रैली में भारी भीड़ जुटने की संभावना का हवाला देते हुए इस अनुमति को रद्द कर दिया गया है।

डा. उदित राज ने कहा कि वे पहले करीब ऐसे बीस कार्यक्रम वह कर चुके हैं, लेकिन कभी भारी भीड़ जुटने का कारण बताकर अनुमति रद्द नहीं की गई, लेकिन लगता है डा. अंबेडकर और भीम शब्द से भाजपा को घृणा और अंदरूनी नफ़रत है। दूसरा कारण संविधान और वोट बचाने जैसे मुद्दे से भाजपा की भारी असहमति है। मोदी सरकार को संविधान बचाने, आरक्षण सीमा 50 प्रतिशत से बढ़ाने, वोट चोरी रोकने एवं बैलेट पेपर से चुनाव, जाति जनगणना, वक्फ़ बोर्ड में हस्तक्षेप रोकना, निजीकरण पर रोक, समान शिक्षा, धार्मिक आजादी, किसानों को न्यूनतम मूल्य की गारंटी, आदिवासियों को जल, जंगल तथा जमीन से वंचित करने से रोकने, पुरानी पेंशन बहाली आदि से नफ़रत है।

एसआईआर का मकसद इंडिया गठबंधन के वोट काटना: कांग्रेस

नई दिल्ली, वार्ता

■ यूपी में एसआईआर के जरिये विपक्ष के वोटर्स की संख्या कम की जाएगी

कांग्रेस को चिंता है कि यूपी में चल रहे स्पेशल इंटेंसिव रीविजन (एसआईआर) की वजह से 2024 में इंडिया ब्लॉक द्वारा जीती गई हर पार्लियामेंट्री सीट पर लगभग 50,000 वोट कम हो जाएंगे। कांग्रेस और समा. जवादी पार्टी के नेतृत्व वाले ब्लॉक ने 2024 के लोकसभा चुनाव में राज्य की कुल 80 लोकसभा सीटों में से 43 जीती थीं।

इनमें कांग्रेस ने 6 और सपा ने 37 सीटें जीती थीं, जिससे बीजेपी को बड़ा झटका लगा था, जिससे 2019 के मुकाबले इसकी सीट 62 से घटकर 33 रह गई थी। राज्य में 2026 में लोकल बॉडी इलेक्शन और 2027 में असेंबली इलेक्शन होंगे जो बीजेपी और इंडिया ब्लॉक दोनों के लिए अहम होंगे। हालांकि कांग्रेस डर है कि यूपी में चल रहे स्पेशल इंटेंसिव रीवीजन के जरिए विपक्ष के वोटर्स की संख्या कम की जाएगी, जैसा कि बिहार में किया गया था, जहां इंडिया ब्लॉक हाल ही में एनडीए से चुनाव हार गया था। कांग्रेस के यूपी इंचार्ज अविनाश पांडे ने बताया कि यह बीजेपी की प्लानिंग है। उन्होंने बिहार में विपक्ष के हजारों वोट कम कर दिए। हमने बिहार में एसआईआर से जुड़े कई सवाल उठाए थे, लेकिन चुनाव आयोग ने इस पर कोई सफाई नहीं दी। अब वही एसआईआर उत्तर प्रदेश में जल्दबाजी में लागू किया जा रहा है। इस काम का असली मकसद 2024 में इंडिया ब्लॉक द्वारा जीती गई लोकसभा सीटों पर विपक्ष के बड़े वोट कम करना है। यह 2027 के चुनावों को ध्यान में रखकर किया जा रहा है। बीजेपी ने पहले से ही एक छोटी वोटर लिस्ट तैयार कर ली थी और इसलिए वोटरों और जमीन पर बीएलओ दोनों को होने वाली एडमिनिस्ट्रेटिव दिक्कतों की परवाह किए बिना उत्तर प्रदेश में एसआईआर को जल्दबाजी में लागू कर रही थी।

आरएसएस शुरू से ही रहा संविधान पर हमलावर

नई दिल्ली। कांग्रेस ने कहा है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) शुरु से ही संविधान विरोधी रहा है और इसीलिए इसे अपनाए जाने के तत्काल बाद से ही उसने संविधान पर हमला शुरु कर दिया था। कांग्रेस संचार विभाग के प्रभारी जयराम रमेश ने मंगलवार को सोशल मीडिया एक्स पर एक पोस्ट में कहा कि 76 साल पहले आज ही के दिन जब संविधान सभा के अध्यक्ष डा. भीमराव अम्बेडकर ने सभा के समक्ष भारतीय संविधान का मसौदा पेश किया था और इस मौके पर अत्यधिक ओजस्वी भाषण दिया था, जिसे आज भी याद किया जाता है। लेकिन इसके अगले ही दिन आरएसएस ने संविधान पर तीखा हमला शुरु कर दिया था और उसका यह हमला आज भी जारी है। रमेश ने कहा कि डा. आंबेडकर ने संविधान सभा में संविधान के मसौदे को औपचारिक रूप से अपनाने का प्रस्ताव रखा था। इस भाषण में उन्होंने कांग्रेस के अनुशासन की तारीफ की और कहा कि उसके कारण ही यह व्यवस्थित संविधान तैयार हो सका है। इस मौके पर दिया गया उनका समापन भाषण निस्संदेह 20वीं सदी में दुनिया के किसी भी व्यक्ति द्वारा दिए गए सबसे महान भाषणों में से एक है।

अयोध्या में राम मंदिर पर हुए कार्यक्रम में बोले सीएम योगी

ध्वजारोहण मात्र यज्ञ नहीं, नए युग की शुरुआत

अयोध्या, वार्ता

हम नए भारत का दर्शन कर रहे हैं, जहां विकास और विरासत का बेहत. रीन समन्वय है, यह इसे नई ऊंचाई प्रदान कर रहा

■ ध्वजारोहण उस सत्य का उद्घोष है कि धर्म का प्रकाश अमर है और रामराज्य के मूल्य कालजई है

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने यहां मंगलवार को राम मंदिर के शिखर पर ध्वजारोहण समारोह के दौरान कहा कि ध्वजारोहण यज्ञ की पूर्णाहूति नहीं, बल्कि नए युग का शुभारंभ है।

प्रभु श्रीराम का भव्य मंदिर 140 करोड़ भारतीयों की आस्था, सम्मान एवं आत्मगौरव का प्रतीक है। योगी ने अपनी बातों का आगाज सियावर रामचंद्र भगवान, माता जानकी, सरयू मैया की जय, भारत माता की जय और हर हर महादेव के उद्घोष के साथ किया। मुख्यमंत्री के साथ ही समूचा मंदिर परिसर जय-जयकार से गूंज उठा। मुख्यमंत्री ने भव्य मंदिर के निर्माण में योगदान देने वाले कर्मयोगियों का भी अभिनंदन किया। उन्होंने कहा कि आज का पावन दिन उन पूज्य संतों, योद्धाओं, श्रीरामभक्तों की अखंड साधना-संघर्ष को समर्पित है, जिन्होंने आंदोलन व संघर्ष के लिए जीवन को समर्पित किया। विवाह पंचमी का दिव्य संयोग इस उत्सव को और भी पावन बना रहा है। उन्होंने कहा कि ध्वजारोहण उस सत्य का उद्घोष है कि धर्म का प्रकाश अमर है और रामराज्य के मूल्य कालजई हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 2014 में जब नेतृत्व संभाला था, उसी दिन भारतवासियों के मन और हृदय में जिस संभावना, संकल्प व विश्वास का सूर्योदय हुआ, आज वही तपस्या, अनगि. नत पीढ़ियों की प्रतीक्षा आपके कर कमलों के माध्यम से साकार होकर भव्य राम मंदिर के रूप में भारतवासियों एवं सनातन धर्मावलंबियों के समक्ष है। योगी ने कहा कि श्रीराम मंदिर पर फहराता केसरिया ध्वज धर्म, मर्यादा, सत्य- न्याय एवं राष्ट्रधर्म का भी प्रतीक है। यह विकसित भारत की संकल्पना का प्रतीक है। मुख्यमंत्री ने कहा कि संकल्प का कोई विकल्प नहीं होता। सभी ने 11 वर्ष में बदलते भारत को देखा है। हम नए भारत का दर्शन कर रहे हैं, जहां विकास और विरासत का बेहतरीन समन्वय है। यह इसे नई ऊंचाई प्रदान कर रहा है। 80 करोड़ लोगों को राशन, 50 करोड़ लोगों को निशुल्क स्वास्थ्य सुविधा, हर जरूरतमंद को आवास, हर व्यक्ति बिना भेदभाव शासन की योजनाओं का लाभ पा रहा है, तो यह रामराज्य की वह उद्घोषणा है, जिसका आधार विकसित भारत है।

माघ मेले की सुरक्षा कड़ी बिना अनुमति ड्रोन उड़ाने पर रोक

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में लगने वाले माघ मेला की तैयारियां जोर-शोर से चल रही हैं। वही देश की राजधानी दिल्ली में हुए धमाकों के बाद प्रशासन और अधिक सतर्क हो गया है। इसी को ध्यान में रखते हुए मेला क्षेत्र में सुरक्षा व्यवस्था को बेहद कड़ा कर दिया गया है। बिना अनुमति ड्रोन उड़ाने पर रोक रहेगी। माघ मेला 3 जनवरी से शुरू होकर 15 फरवरी तक चलेगा। मेला क्षेत्र के विभिन्न हिस्सों में बम डिस्पोजल स्क्वाड और डॉग स्क्वाड टीमें लगातार जांच कर रही हैं। बन रहे अस्थाई ढांचों और चल रहे निर्माण कार्यों की बारीकी से जांच की जा रही है। मेले के हर संवेदनशील स्थान पर सुरक्षा कर्मी पैनी नजर बनाए हुए हैं।

राहुल-प्रियंका ने गुरु तेग बहादुर की शहीदी दिवस पर किया नमन

नई दिल्ली, वार्ता

कांग्रेस नेता राहुल गांधी और कांग्रेस महाचिव प्रियंका गांधी वाड्रा ने मंगलवार को गुरु तेग बहादुर साहिब की 350वें शहीदी पर्व पर उन्हें नमन करते हुए कहा कि उनका बलिदान सभी के लिए हमेशा प्रेरणादायक रहेगा।

गांधी ने सोशल मीडिया एक्स पर लिखा, सिख धर्म के नौवें गुरु, 'हिद की चादर' श्री गुरु तेग बहादुर जी की शहीदी दिवस पर उन्हें सादर नमन। उनके आदर्श, मूल्य, त्याग और बलिदान मानवता के लिए सदैव प्रेरणाोत रहेंगे। कांग्रेस महासि. चव वाड्रा ने कहा कि नौवें गुरु तेग बहादुर जी ने विश्व को शांति और मानवता का रास्ता दिखाया। श्रीमती वाड्रा ने सोशल मीडिया पर लिखा, सिख धर्म के नौवें गुरु श्री तेग बहादुर जी के शहीदी दिवस पर उन्हें सादर नमन। गुरु तेग बहादुर जी ने धर्म, मानवता, सेवा, त्याग, प्रेम और एकता का प्रकाश फैलाकर विश्व को रास्ता दिखाया। उन्होंने कहा कि उनकी प्रेरणा सदैव हम सबका मार्गदर्शन करेंगी।

मोदी ने गुरु तेग बहादुर को किया नमन

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मंगलवार को गुरु तेग बहादुर को उनकी शहादत की 350वीं वर्षगांठ पर श्रद्धापूर्वक उन्हें नमन किया। मोदी ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा कि श्री गुरु तेग बहादुर जी की शहादत की 350वीं वर्षगांठ पर हम उनके अद्वितीय साहस और बलिदान को नमन करते हैं।

सेंसेक्स 84587.01
निफ्टी 25884.80

सोना रु. 127190
प्रति 10 ग्राम (24 कैरेट)

अर्थ व्यापार

चांदी रु. 167000
प्रति किलो

शेयर बाजारों में गिरावट जारी सेंसेक्स 314 अंक लुढ़का

मुंबई, वार्ता

विदेशों से मिले सकारात्मक संकेतों के बीच घरेलू शेयर बाजारों में मंगलवार को लगातार तीसरे दिन गिरावट देखी गई और बीएसई का 30 शेयरों वाला संवेदी सूचकांक सेंसेक्स 313. 70 अंक (0.37 प्रतिशत) टूटकर 84,587.01 अंक पर आ गया।

नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का निफ्टी-50 सूचकांक भी 74.70 अंक यानी 0.29 प्रतिशत गिरकर 25,884. 80 अंक पर बंद हुआ। आईटी, एफएमसीजी, टिकाऊ उपभोक्ता उत्पाद, ऑटो, तेल एवं गैस और मीडिया सेक्टरों की कंपनियों में बिकवाली का जोर रहा। रियलिटी, बैंकिग, फार्मा, धातु और स्वास्थ्य सेक्टरों की कंपनियों में लिवाली देखी गई। दिग्गज कंपनियों के उलट मझौली और छोटी कंपनियों में निवेशकों ने विश्वास दिखाया।

निफ्टी मिडकैप-50 सूचक. ांक 0.56 प्रतिशत और स्मॉलकैप-100 सूचकांक 0.19 प्रतिशत की बढ़त में बंद हुआ। एनएसई में जिन 3,214 कंपनियों के शेयरों में कारोबार हुआ, उनमें से 1,596 के शेयरों में तेजी और 1,540 में गिरावट रही जबकि 78 कंपनियों के शेयर दिन भर के उतार-चढ़ाव के बाद अंततः अपरिवर्तित रहे। सेंसेक्स की 30 कंपनियों में से 24 के शेयर लाल निशान में और अन्य छह के हरे निशान में बंद हुए। टाटा मोटर्स पैसेंजर व्हीकल्स में सबसे अधिक 1.62 फीसदी की गिरावट रही। ट्रेंट का शेयर 1.59 फीसदी, इंफोसिस का 1.25, पावरग्रिड का 0.99, एचडीएफसी बैंक का 0. 92 और एचसीएल टेक्नोलॉजीज का 0.82 प्रतिशत टूट गया। कोटक महिंद्रा बैंक, बजाज फाइनेंस, महिंद्रा एंड महिंद्रा, आईसीआईसीआई बैंक, आईटीसी, टीसीएस, टाइटन और सनफार्मा के शेयर भी आधा फीसदी से ज्यादा लुढ़क गए। मारुति सुजुकी, एलएंडटी, हिदुस्तान यूनीलिवर और एक्सिस बैंक के शेयर भी लाल निशान में रहे।

सोने में तूफानी तेजी, चांदी ने भी मारी छलांग

नई दिल्ली। शादियों के सीजन के बीच सर्राफा बाजार में सोने-चांदी की कीमतों में तूफानी तेजी आई है। मंगलवार को देश के अलग-अलग शहरों में सोना महंगा हुआ है। राजधानी में सोने की कीमत में 2120 रुपये प्रति ग्राम की बड़ी तेजी आई है।चांदी की कीमत में भी 4000 रुपये प्रति किलो का उछाल आया। 24 कैरेट सोने की कीमत 1910 रुपये प्रति 10 ग्राम तक महंगा हुआ, जिसके बाद इसका भाव 1,27,190 रुपये प्रति 10 ग्राम हो गया। यूपी की राजधानी लखनऊ में 24 कैरेट सोने का भाव 2120 रुपये के उछाल के बाद 1,27,490 रुपये प्रति 10 ग्राम हो गया। मेरठ में इसका भाव 1,27,500 रुपये प्रति 10 ग्राम रहा।

बाजार खुलने के साथ आज चांदी 4000 रुपये प्रति किलो महंगा हुआ है, जिसके बाद उसका भाव 1,67,000 रुपये प्रति किलो हो गया। सर्राफा बाजार में सोने-चांदी की बढ़ती कीमतों की एक वजह ये भी है कि अब यह निवेशकों की पसंद बन रही है। लोग ज्वैलरी में कम और निवेश के लिहाज से इसकी ज्यादा खरीदारी कर रहे हैं। एचएसबीसी ने अपनी थिंक फ्यूचर्स 2026 रिपोर्ट में कहा है कि गोल्ड की कीमतों में तेजी जारी रहने की संभावना है। इसकी वजह केंद्रीय बैंकों की तरफ से गोल्ड की खरीदारी है। इसके अलावा गोल्ड ईटीएफ में भी निवेश जारी रहेगा। इससे गोल्ड की कीमतों को सपोर्ट मिलेगा। एचएसबीसी की रिपोर्ट के मुताबिक गोल्ड की कीमतें अभी कंसालिडेशन के फेज में प्रति औंस +4,000 के करीब चल रही हैं। शॉर्ट टर्म में कंसालिडेशन कुछ समय तक जारी रह सकता है। उसके बाद गोल्ड के फिर से रफ्तार पकड़ने की उम्मीद है।

चावल, चीनी में टिकाव, गेहूं नरम दालों, खाद्य तेलों में घट-बढ़

नई दिल्ली। दिल्ली थोक जिंस बाजारों में मंगलवार को चावल के भाव स्थिर रहे। चीनी में भी टिकाव रहा। आवक बढ़ने से गेहूं में नरमी देखी गई। दालों और खाद्य तेलों में उतार-चढ़ाव रहा। औसत दर्जे के चावल की औसत कीमत 3,854.80 रुपये प्रति क्विंटल पर लगभग स्थिर रही। गेहूं तीन रुपये सस्ता हुआ और 2,855.62 रुपये प्रति क्विंटल के भाव बिका।

आटे की कीमत पांच रुपये बढ़ गई। दालों में घट-बढ़ रही। उड़द दाल की औसत कीमत सात रुपये प्रति क्विंटल गिर गई। मूंग दाल भी 18 रुपये सस्ती हुई। चना दाल के भाव लगभग गत दिवस के स्तर पर ही रहे। मसूर दाल 11 रुपये और तुअर दाल नौ रुपये प्रति क्विंटल महंगी हुई। विदेशों में बुरसा मलेशिया डेरिवेटिव एक्सचेंज में पाम ऑयल का फरवरी वायदा 65 रिंगिट फिसलकर 3,990 रिंगिट प्रति टन पर आ गया। अमेरिकी सोया तेल का जनवरी वायदा भी 0.67 प्रतिशत टूटकर 50.18 डॉलर बोला गया। स्थानीय बाजारों में सरसों तेल औसतन नौ रुपये प्रति क्विंटल महंगा हुआ। मूंगफली तेल की कीमत भी 19 रुपये प्रति क्विंटल बढ़ गई। सोया तेल के भाव 22 रुपये और सूरजमुखी तेल के 37 रुपये प्रति क्विंटल टूट गए। वनस्पति 77 रुपये और पाम ऑयल 45 रुपये प्रति क्विंटल सस्ता हुआ। मीठे के बाजार में आज गुड़ औसतन तीन रुपये प्रति क्विंटल महंगा हुआ, जबकि चीनी की कीमत में टिकाव देखा गया। सरकारी वेबसाइट पर जारी खाद्यान्नों के दिन के औसत थोक भाव इस प्रकार रहे: दाल-दलहन: दाल चना 7868.92 रुपये, मसूर काली 8163.74 रुपये, मूंग दाल 10097.91 रुपये, उड़द दाल 10370.43 रुपये, तूअर दाल 10619.48 रुपये प्रति क्विंटल। अनाज: (भाव प्रति क्विंटल) गेहूं दड़ा 2855. 62 रुपये और चावल 3854.80 रुपये प्रति क्विंटल। आटा (गेहूं) 3307.63 प्रति क्विंटल। चीनी.गुड़: चीनी एस 4323.02 रुपये और गुड़ 4988.45 रुपये प्रति क्विंटल बोले गए।

कैप्टन सैंड्रिमा अशोक चुने गए बेस्ट ऑल-राउंड अधिकारी

कमांडेंट की रोलिंग ट्रॉफी से सम्मानित, एमओबीसी का सफल समापन

लखनऊ। मेडिकल ऑफिसर्स बेसिक कोर्स (एमओबीसी)-254 के सफल समापन पर ऑफिसर्स ट्रेनिंग कॉलेज (ओटीसी), आर्मी मेडिकल कोर सेंटर एवं कॉलेज में मंगलवार को एक कोर्स समापन परेड आयोजित की गई। नौ सप्ताह के इस कोर्स में युवा आर्म्ड फोर्सेज मेडिकल और डेंटल ऑफिसर्स को इंटेंसिव काम्बैट मेडिकल सपोर्ट ट्रेनिंग दी जाती है, जिससे वे अपनी ड्यूटी अच्छे से कर सकें और इन युवा प्रोफेशनल्स को यूनिफॉर्म में मेडिकल और डेंटल ऑफिसर्स में बदला जा सके।

इस मौके पर कैप्टन सैंड्रिमा अशोक को कोर्स का बेस्ट ऑल राउंड ऑफिसर चुना गया और उन्हें कमांडेंट की रोलिंग ट्रॉफी दी गई। उन्हें फील्ड इवेंट्स में बेस्ट ऑफिसर चुने जाने के लिए भी मेजर लैशराम ज्योतिन सिंह, अशोक चक्र मेमोरियल ट्रॉफी दी गई। मध्य कमान के जनसंपर्क अधिकारी शांतनु प्रताप सिंह ने बताया कि ऑफिसर्स ने ट्रॉमा लाइफ सपोर्ट (एटीएलएस) प्रोवाइडर कोर्स में भी हिस्सा लिया। उन्हें लेटेस्ट टेक्नोलॉजी के बारे में सिखाया गया, जो आज की पीढ़ी के युद्धों को आकार दे रही है। उन्होंने बताया कि इस पाठ्यक्रम में त्रिसेवा प्रतिनिधित्व वाली 34 महिला अधिका. रियों सहित 123 अधिकारी शामिल थे। परेड को सैन्य परंपराओं के साथ आयोजित किया गया। कोर्स समापन परेड की समीक्षा सेना चिकित्सा कोर केंद्र एवं कॉलेज के ऑफिसिएटिंग कमांडेंट मेजर जनरल कंवरजीत सिंह ने की। कार्यक्रम के दौरान 200 से अधिक गौरवान्वित माता-पिता और अधिकारियों के करीबियों के साथ बड़ी संख्या में सशस्त्र बल चिकित्सा सेवा अधिकारियों ने परेड देखी। युवा ऑफिसर्स को संबोधित करते हुए समीक्षा अधिकारी मेजर जनरल कंवरजीत सिंह ने मेडिकल ऑफिसर्स बेसिक कोर्स (एमओबीसी)-254 के ऑफिसर्स की तरफ से परेड के बहुत अच्छे संचालन के लिए ऑफिसर्स ट्रेनिंग कॉलेज के कमांडेंट और चीफ इंस्ट्रक्टर मेजर जनरल वीके पात्रा की तारीफ की। जनरल ऑफिसर ने कोर्स ऑफिसर्स को उनके शानदार टर्नआउट के लिए भी बधाई दी। उन्होंने ऑफिसर्स को ऑफिसर्स ट्रेनिंग कॉलेज में दिए गए ज्ञान को लगातार अपग्रेड करने और उस पर काम करने की भी सलाह दी।

राजस्व सेवा के प्रशिक्षु अफसरों ने राष्ट्रपति मुर्मू से मुलाकात की

नई दिल्ली। भारतीय राजस्व सेवा (सीमा शुल्क और अप्रत्यक्ष कर) के 76वें बैच के प्रशिक्षु अधिकारियों ने मंगलवार को यहां राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से मुलाकात की, जहां राष्ट्रपति ने उन्हें आशीर्वाद देते हुए सेवाक. ाल में नवोन्मेषी और आदर्श बने रहने की सलाह दी।

श्रीमती मुर्मू ने प्रशिक्षु अधिकारियों को संबोधित करते हुए कहा कि राष्ट्र निर्माण के लिए राजस्व संग्रह महत्वपूर्ण है, क्योंकि राजस्व ही बुनियादी ढांचे, शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक कल्याण का वित्तपोषक है। यही वित्त पोषण राष्ट्र-निर्माण प्रक्रिया में सक्रिय भागीदार बनता है इसलिए कर संग्रह की सुचारू प्रक्रिया होनी चाहिए, जिसमें करदाता को न्यूनतम असुविधा हो। उन्होंने कहा कि प्रशिक्षु अधिकारी राजस्व सेवा अधिकारी प्रशासक, जांचकर्ता, व्यापार के सुविधा प्रदाता और कानून के प्रवर्तक सहित कई रूप में अपनी भूमिकाएं निभाएंगे। राजस्व अधिकारी देश की आर्थिक सीमाओं के प्रहरी हैं। राजस्व अधिकारी तस्करी, वित्तीय धोखाधड़ी और अवैध व्यापार के खिलाफ देश की रक्षा करते हैं और वैध वाणिज्य और वैश्विक व्यापार साझेदारी को सुविधाजनक बनाते हैं।

राष्ट्रीय संविधान दिवस समारोह आज

नई दिल्ली। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु की अध्यक्षता में बुधवार को यहां संविधान सदन के केंद्रीय कक्ष में राष्ट्रीय संविधान दिवस समारोह होगा, जिसमें प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के अलावा अन्य मंत्री शामिल होंगे। संसदीय कार्य मंत्रालय ने मंगलवार को बताया कि संविधान दिवस 2025 के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय समारोह बुधवार को पूर्वाह्न 11:00 बजे संविधान सदन के केंद्रीय कक्ष में आयोजित किया जाएगा। यह अवसर भारत द्वारा संवैधानिक मूल्यों और लो. कतांत्रिक परंपराओं के प्रति अपनी प्रतिबद्धता की पुनः पुष्टि का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रपति इस समारोह की अध्यक्षता करेंगी। उपराष्ट्रपति सी पी राधाकृष्णन, प्रधानमंत्री, लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला, केंद्रीय मंत्री और दोनों सदनों के सांसद इस कार्यक्रम में शामिल होंगे। कार्यक्रम के दौरान श्री बिरला और श्री राधाकृष्णन सभा को संबोधित करेंगे।

शाह टाइम्स क्लासीफाईड्स Sale

स्त्री के सामने लज्जित होने से बेहतर है
आज ही इलाज करा लेना खोई हुई मर्दाना ताकत दोबारा प्राप्त करने के लिए आज ही मिलें या फोन करें।
काजीजादा, अमरोहा-UP
हाशमी दवाखाना
9997161320, 8272800800

काम कोर्स उदास क्यों?
अधिक संतुष्टि, हैरतअंगेज़ पावर, शीघ्रपतन, नपुंसकता, बचपन की गलतियों से हमेशा के लिए छुटकारा।
फोन कर घर बैठे औषधियां डाक द्वारा प्राप्त करें।
ऋषि इन्टरनेशनल
08899787114
09808917010

Cipzer
HEALTH WITH CARE
जॉन्डिस क्योर
लिवर का जिगरी दोस्त
भूख की कमी, बदहज़मी, जॉन्डिस, फैटी लीवर, एल्कोहलिक लिवर डिजीज आदि से लड़ने की ताकत देता है ताकि आप रहे फिट एण्ड एक्टिव
प्रमुख मेडिकल स्टोर पर उपलब्ध।
86 8484 5757 info@cipzer.com

वैधानिक सूचना
पाठकों को सुझाव दिया जाता है कि इस अखबार में प्रकाशित होने वाले सभी विज्ञापनों पर कार्यवाही करने से पहले पूरी जांच-पड़ताल कर लें तथा उचित सलाह ले लें। कोई भी अभिदाता जो इस अखबार में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन के संदर्भ में कोई राशि भेजता है, किसी चिकित्सीय सलाह पर कोई कार्यवाही या खर्च करता है या कोई वचन देता है, तो ऐसा वह स्वविवेक, बुद्धि तथा जोखिम पर करेंगे। कम्पनी, प्रकाशक या उसका कोई कर्मचारी विज्ञापनदाता या उसके किसी उत्पाद या सेवा हेतु किये गये किसी दावे की सच्चाई का आश्वासन नहीं देते तथा ऐसे विज्ञापनों विश्वास करके किसी व्यक्ति को हुई क्षति, हानि परिणाम के लिए जिम्मेदार नहीं होंगे।

बदरीनाथ धाम के कपाट शीतकाल के लिए बन्द

शाह टाइम्स संवाददाता

चमोली।विश्व प्रसिद्ध चारधाम में शामिल बदरीनाथ धाम के कपाट मंगलवार को शीतकाल के बंद कर दिए । कपाट दोपहर 2:56 बजे विधि-विधान से बंद किए गए।करीब 5 हजार श्रद्धालु कपाट बंदी समारोह के साक्षी बने। वहीं, इस मौके पर बदरी विशाल के दरबार को फूलों से सजाया गया।

जिससे धाम की छटा देखते ही बन रही थी। श्रद्धालुओं की उपस्थिति में रावल अमरनाथ नंबूदरी ने परंपरागत रीति रिवाज से कपाट बंद किए।इस मौके पर बदरीनाथ धाम को 12 क्विंटल गेंदे के फूलों से सजाया गया था, जबकि, सेना के बैंड की धुन और भगवान बदरी विशाल के जयकारों से धाम गूंज उठा।परंपरा के अनुसार, उद्धव और कुबेर की प्रतिमाओं को गर्भगृह से बाहर लाया गया, जबकि, देवी लक्ष्मी को गर्भगृह में विराजमान किया गया। भगवान बदरी विशाल को माणा महिला मंगल दल की ओर से तैयार घृत कंबल ओढ़ाया गया। शीतकालीन प्रवास के दौरान भक्त अब भगवान बदरीनाथ के दर्शन पांडुकेश्वर स्थित योगध्यान बदरी में कर सकेंगे। भगवान बदरी विशाल की स्वयंभू मूर्ति, भगवान उद्धव और कुबेर जी मूर्ति अपने शीतकालीन प्रवास स्थल की ओर रवाना हो गई है।इस बार करीब 16 लाख 60 हजार श्रद्धालुओं ने किए भगवान बदरी विशाल के दर्शन कर पुण्य लाभ कमाया।

सीएम ने सुनी किसानों की समस्याएं लॉन में बैठकर लिया गन्ने का स्वाद

मुख्य संवाददाता शाह टाइम्स

देहरादून।मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी से मंगलवार को हरिद्वार जनपद से आए गन्ना किसानों ने मुलाकात की। किसानों ने पेराई सत्र 2025-26 के लिए गन्ना का समर्थन मूल्य घोषित करने सहित अन्य मांगों को लेकर मुख्यमंत्री को ज्ञापन सौंपा। इस मौके पर किसानों ने मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी को गन्ना भी दिया, मुख्यमंत्री ने किसानों के साथ ही धूप के बीच लॉन में ही बैठकर ही गन्ना का स्वाद लिया, साथ ही किसानों को मांगों पर सकारात्मक आश्वासन दिया।

विधायक आदेश चौहान और पूर्व कैबिनेट मंत्री स्वामी यतीश्वरानंद के नेतृत्व में मिले गन्ना किसानों ने रायसी ख बालावाली पुल तक तटबंध का निर्माण, इकबालपुर झबरेड़ा भगवानपुर क्षेत्र में शुगर मिल स्थापित किए जाने, इकबाल. पुर झबरेड़ा क्षेत्र में सिंचाई नहर

सीएम धामी से मिला हरिद्वार के गन्ना कसानों का प्रतिनिधिमंडल

निर्माण और डोईवाला मिल पर किसानों का बकाया भुगतान कराने की मांग उठाई। किसानों ने पेराई सत्र 2025-26 के लिए राज्य परामर्शित मूल्य घोषित करने की मांग उठाई। मुख्यमंत्री ने लॉन में बैठकर ही किसानों की मांगों को सुनते हुए, गन्ना मूल्य सहित अन्य सभी मांगों पर सकारात्मक निर्णय का आश्वासन दिया। मुख्यमंत्री ने किसानों के साथ जमीन पर बैठकर गन्ना का स्वाद भी लिया। इस मौके पर विधायक प्रदीप बत्रा , जिला पंचायत अध्यक्ष किरन चौधरी के साथ ही पूर्व विधायक संजय गुप्ता भी शामिल हुए।

शीतकालीन यात्रा से सालभर रोजगार के अवसर सृजित होंगे: महाराज

प्रमुख संवाददाता शाह टाइम्स

देहरादून। उत्तराखण्ड के पर्यटन, धर्मस्व, संस्कृति, पंचायतीराज, लोक निर्माण, सिंचाई, ग्रामीण निर्माण एवं जलागम मंत्री सतपाल महाराज ने बदरीनाथ धाम के कपाट बंद होने के साथ शीघ्रकालीन चारधाम यात्रा के निर्विघ्न रूप से संपन्न होने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि पूर्व की भाँति इस बार भी चारधाम यात्रा पर रिकॉर्ड श्रद्धालु पहुंचे हैं। उन्होंने यात्रा व्यवस्था में लगे सभी विभागों के अधिकारियों, कर्मचारियों, तीर्थ-पुरोहितों, होटल व्यवसायियों, स्वयंसेवी संस्थाओं और यात्रियों को गंतव्य तक पहुंचाने वाले ट्रांसपोर्टरों सहित यात्रा में आने वाले सभी श्रद्धालुओं का आभार व्यक्त किया है।महाराज ने कहा कि है कि इस बार चारधामों में दर्शन करने वाले श्रद्धालुओं का आंकड़ा 51 लाख तक पहुंच गया जो स्वयं में रिकॉर्ड है। उन्होंने कहा कि अब सरकार का पूरा ध्यान शीतकालीन यात्रा और उसकी व्यवस्थाओं पर है। अब चारधामों की पूजा अर्चना शीतकालीन प्रवास स्थलों पर होगी जहां पर श्रद्धालु शीतकालीन यात्रा में पूजा पाठ कर दर्शनों का लाभ उठा सकते हैं।महाराज ने कहा कि उत्तराखंड की शीतकालीन यात्रा को बढ़ावा देने के लिए 6 मार्च 2025 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने माँ गौंगा के शीतकालीन प्रवास स्थल मुखवा से देश विदेश के श्रद्धालुओं को शीतकालीन यात्रा पर उत्तराखंड आने के लिए प्रेरित किया था।

उन्होंने कहा कि 24 अक्टूबर 2025 से शीतकालीन चारधाम यात्रा का श्री गणेश हो चुका है। यात्रा को सुरक्षित और सुगम बनाने के लिए मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के नेतृत्व में राज्य सरकार ने पूर्व में ही सभी तैयारियां पूरी कर ली हैं।

महाराज ने कहा कि मंगलवार का दिन हमारे लिए दो शुभ अवसर का साक्षी बनने का अवसर रहा है। एक ओर चारधाम यात्रा का संपन्न होना और दूसरी ओर अयोध्या में बने भव्य श्री राम मंदिर के शिखर पर भगवा ध्वज स्थापना का महत्वपूर्ण ऐतिहासिक अवसर राम मंदिर निर्माण की पूर्णता का प्रतीक है।

ग्रीन बिल्डिंग का कार्य अगले 6 माह में पूर्ण किया जाए: सीएस

मुख्य संवाददाता शाह टाइम्स

देहरादून। मुख्य सचिव आनन्द बर्द्धन की अध्यक्षता में मंगलवार को सचिवालय में देहरादून स्मार्ट सिटी लिमिटेड की उच्च स्तरीय संचालन समिति की बैठक संपन्न हुई। बैठक के दौरान स्मार्ट सिटी के विभिन्न मुद्दों पर चर्चा कर निर्णय लिया गया।

मुख्य सचिव ने ग्रीन बिल्डिंग निर्माण में हो रही देरी पर गहरी नाराजगी जताई। उन्होंने कहा कि ग्रीन बिल्डिंग, स्मार्ट सिटी का फ्लैगशिप प्रोजेक्ट था। मुख्य सचिव ने ग्रीन बिल्डिंग निर्माण कार्य अगले 6 माह में पूर्ण कराए जाने हेतु जिलाधिकारी / सीईओ स्मार्ट सिटी को निर्देशित किया। उन्होंने कार्यदायी संस्था सीपीडब्ल्यूडी को भी 3 शिफ्ट में कार्य कराए जाने हेतु निर्देशित किया

3 शिफ्ट में कराया जाए कार्य, जिलाधिकारी देहरादून को लगातार मॉनिटरिंग के दिए निर्देश

गया। उन्होंने कहा कि अगले 6 माह में प्रत्येक कार्य की टाईमलाईन निर्धारित कर लगातार मॉनिटरिंग की जाए।

मुख्य सचिव ने कहा कि देहरादून स्मार्ट सिटी के अंतर्गत चलायी जा रही 30 इलेक्ट्रिक बसों के संचालन का कार्य परिवहन निगम द्वारा किया जाए। उन्होंने वीएमडी (एलईडी स्क्रीन) एवं पर्यावरण सेंसर को नगर निगम को हस्तांतरित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि इंटीग्रेटेड कमांड एंड कंट्रोल सेंटर को आईटीडीए के अंतर्गत ही संचालित किया जाएगा। इस अवसर पर प्रमुख सचिव आर. मीनाक्षी सुंदरम, सचिव नितेश कुमार झा, आयुक्त गढ़वाल विनय शंकर पाण्डेय, जिलाधिकारी देहरादून एवं सीईओ स्मार्ट सिटी सविन बंसल, अपर सचिव डॉ. इकबाल अहमद, एमडी परिवहन रीना जोशी सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

यूकेडी नेता व पूर्व मंत्री दिवाकर भट्ट नहीं रहे

देहरादून। फील्ड मार्शल के नाम से विख्यात उत्तराखंड क्रांति दल के वरिष्ठ नेता और उत्तराखंड के पूर्व कैबिनेट मंत्री रहे दिवाकर भट्ट का निधन हो गया। लंबी बिमारी के बाद उन्होंने हरिद्वार में अपने आवास पर शाम 4.30 बजे अंतिम सांस ली वे पिछले कुछ दिनों से देहरादून के इंदेश अस्पताल में भर्ती थे, 26 नवंबर को हरिद्वार के खड़खड़ी श्मशान घाट पर उनका अंतिम संस्कार होगा।

दिवाकर भट्ट उत्तराखंड क्रांति दल के संस्थापक सदस्यों में से एक थे, जो राज्य आंदोलन के अग्रणी नेता के रूप में शामिल रहे। उन्हें अक्सर फील्ड मार्शल के नाम से जाना जाता था, उनका जन्म साल 1946 में हुआ था, वे युवावस्था से ही उत्तराखंड राज्य निर्माण आंदोलन में सक्रिय रहे। साल 1980-90 के दशक में राज्य आंदोलन के प्रमुख चेहरा बने। उन्होंने पर्वतीय क्षेत्रों की

लम्बे समय से चल रहे थे बीमार, अपने आवास पर ली अन्तिम सांस, आज हरिद्वार में होगा अन्तिम संस्कार

उपेक्षा, पर्यावरण संरक्षण के अलावा अलग राज्य की मांग को मजबूती दी। साल 2002 में दिवाकर भट्ट यूकेडी के टिकट से देवप्रयाग विधानसभा सीट से चुनाव लड़े, मगर हार गए, इसके बाद 2007 में यूकेडी से ही विधानसभा चुनाव लड़कर विधायक बने। साल 2007-2012 के दौरान भाजपा सरकार में कैबिनेट मंत्री रहे। शहरी विकास जैसे अहम विभाग संभाले। साल 2017 में यूकेडी के केंद्रीय अध्यक्ष चुने गए, पार्टी में गुटबाजी के कारण वे भाजपा में शामिल हुए, मगर साल 2022 में वापस यूकेडी में लौट आए। साल 2012 व 2017 में चुनाव लड़े, मगर हार का सामना करना पड़ा। वहीं, साल 2022 का चुनाव उन्होंने यूकेडी की तरफ से लड़ा, लेकिन हार गए। कैबिनेट मंत्री महाराज ने फील्ड मार्शल के निधन पर शोक जताया देहरादून। प्रदेश के कैबिनेट मंत्री सतपाल महाराज ने उत्तराखंड क्रांति दल के पूर्व केंद्रीय अध्यक्ष व पूर्व कैबिनेट मंत्री दिवाकर भट्ट के निधन पर शोक संवेदना व्यक्त करते हुए इसे प्रदेश के लिए एक बड़ी क्षति बताया है। महाराज ने कहा कि फील्ड मार्शल के नाम से मशहूर दिवाकर भट्ट उत्तराखंड राज्य आंदोलन के अग्रणी नेताओं में रहे हैं। राज्य निर्माण में उनके संघर्ष को राज्य की जनता हमेशा याद रखेगी।

मुख्यमंत्री ने पूर्व कैबिनेट मंत्री दिवाकर भट्ट के निधन पर जताया दुख

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने वरिष्ठ राज्य आंदोलनकारी एवं पूर्व कैबिनेट मंत्री दिवाकर भट्ट के निधन पर गहरा दुःख व्यक्त किया है।

मुख्यमंत्री ने ईश्वर से पुण्यात्मा को श्री चरणों में स्थान देने तथा शोक संतप्त परिजनों को यह असीम दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की है। मुख्यमंत्री ने अपने शोक संदेश में कहा कि दिवाकर भट्ट के निधन का समाचार अत्यंत दुखद है, राज्य निर्माण आंदोलन से लेकर जन सेवा के क्षेत्र में उनके द्वारा किए गए कार्य सदैव अविस्मरणीय रहेंगे।

राज्य निर्माण और विकास में योगदान के लिए दिवाकर भट्ट हमेशा याद किए जाएंगे : भट्ट

देहरादून । भाजपा प्रदेशाध्यक्ष एवं राज्यसभा सांसद महेंद्र भट्ट ने पूर्व कैबिनेट मंत्री, यूकेडी के पूर्व अध्यक्ष एवं वरिष्ठ राज्य आंदोलनकारी दिवाकर भट्ट के निधन पर दुख व्यक्त किया है।अपने शोक संदेश में उन्होंने भट्ट के राज्य निर्माण आंदोलन एवं उसके विकास में दिए योगदान को अभूतपूर्व बताया। वहीं उनके निधन को राज्य के राजनैतिक, सामाजिक जगत में बहुत बड़ी क्षति बताया। उन्होंने भट्ट को दृढ़ इच्छा शक्ति, सहृदय, स्थानीय मुद्दों पर गंभीर एवं संवेदनशील व्यक्तित्व वाला व्यक्ति बताया। कहा, उनके नेतृत्व में हुए श्रीयंत्र टापू आंदोलन, राज्य निर्माण संघर्ष में मील का पत्थर साबित हुआ था । भाजपा प्रदेश मीडिया प्रमुख मनवीर सिंह चौहान ने दिवाकर भट्ट के निधन पर गहरा दुख व्यक्त करते हुए कहा कि उत्तराखंड राज्य निर्माण आंदोलन को निर्णायक मोड़ देने के इस योगदान के लिए हमेशा राज्यवासियों के मनमस्तिष्क में अंकित रहेंगे।

दिवाकर भट्ट का निधन उत्तराखंड के लिए बड़ा झटका: धीरेंद्र प्रताप

देहरादून। उत्तराखंड कांग्रेस के वरिष्ठ उपाध्यक्ष पूर्व मंत्री और चिन्हित राज्य आंदोलनकारी संयुक्त समिति के केंद्रीय मुख्य संरक्षक धीरेंद्र प्रताप ने उत्तराखंड क्रांति दल के नेता फील्ड मार्शल दिवाकर भट्ट के निधन पर गहरा दुख और शोक व्यक्त किया है। उन्होंने कहा है कि उनका निधन राज्य आंदोलनकारी शक्तियों के लिए एक बड़ा झटका है। उन्होंने कहा कि बिना दिवाकर भट्ट का नाम लिए उत्तराखंड आंदोलन का इतिहास अधूरा माना जाएगा । उन्होंने कहा कि वह अपने समय के बेजोड़ नेता थे। उन्होंने सदैव राज्य गठन के अपने उद्देश्य को निजी स्वार्थ से उपर रखा और निरंतर राज्य आंदोलन का योग्यता पूर्वक नेतृत्व करके राज्य निर्माण आंदोलन को नई दिशा दी। उन्होंने कहा कि उनके निधन से उत्तराखंड राज्य आंदोलन को बड़ा झटका लगा है।

श्रीराम मंदिर का पूर्णत्व, सनातन संस्कृति के स्वर्णिम युग का आगाज : भट्ट

कहा - युगों युगों तक यह सनातन धर्मध्वजा, विश्व कल्याण का संदेश फैलाती रहेगी

मुख्य संवाददाता शाह टाइम्स

देहरादून । भाजपा प्रदेशाध्यक्ष एवं राज्यसभा सांसद श्री महेंद्र भट्ट ने अयोध्या में श्री राम मंदिर शिखर ध्वजारोहण को विश्व में सनातन संस्कृति के स्वर्णिम युग का पुनः आगाज बताया है। उन्होंने इसे दुनिया के एक अरब से ज्यादा हिंदुओं की आस्था का को सूरज बताया, जो युगों युगों तक विश्वकल्याण का मार्ग प्रशस्त करता रहेगा।उन्होंने आज पावन अयोध्या धाम में पीएम मोदी और श्रेष्ठजनों की मौजूदगी में प्रभु श्री राम मंदिर पूर्णतत्व पर समस्त प्रदेशवासियों को बधाई दी। अपने संदेश में उन्होंने कहा, यह ऐतिहासिक, गौरवमयी और पवित्र अवसर हिंदुओं के 5 सदी के तप, बलिदान, शौर्य और धैर्य का परिणाम है। प्रभु श्री राम का यह धाम, सनातन के अमिट भाव, अविचल आस्था, अतुलनीय धैर्य और अविस्मरणीय बलिदानों का साकार रूप है। एक राजनैतिक कार्यकर्ता होने के नाते मुझे गर्व है कि सनातन संस्कृति की राजधानी में इस अभूतपूर्व इतिहास की पुनर्स्थापना में हमारी पार्टी के अनेकों सदस्यों ने अपने सर्वस्व का बलिदान दिया है। आज दुनिया में सनातन संस्कृति और परम्परा के पुनरुत्थान का यज्ञ पूर्ण हुआ है, जिसमें सभी धर्म बलिदा. नियों के प्रयासों की पूर्णाहुति भी हुई है।उन्होंने विश्वास जताते हुए कहा, आने वाले हजारों सालों तक प्रभु श्री राम का यह मंदिर, विश्व कल्याण का मार्ग प्रशस्त करता रहेगा। यहां मंदिर शिखर की यह धर्मध्वजा, दुनिया भर में हिंदू धर्म की कीर्ति संद. श पताका को फहराने में प्रेरणादायक साबित होगी।

28 नवंबर से शुरू होगा एबीवीपी का 71वां राष्ट्रीय अधिवेशन

मुख्य संवाददाता शाह टाइम्स

देहरादून : अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) का 71वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन आगामी 28 से 30 नवंबर को देहरादून स्थित परेड ग्राउंड में अस्थाई रूप से स्थापित श्भगवान बिरसा मुंडा नगरश में आयोजित होगा। जिसमें देशभर से 1500 से अधिक प्रति. निधि, जिनमें विद्यार्थी, शिक्षक, शिक्षाविद, पूर्णकालिक कार्यकर्ता के साथ भारत के प्रमुख विश्वविद्यालयों के छात्रसंघ पदाधिकारी भी सम्मिलित होंगे।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने इस राष्ट्रीय अधिवेशन के अवसर पर विभिन्न कार्यक्रमों, सत्रों और प्रदर्शनी को स्थान दिया है। अधिवेशन के मुख्य सभागार का नाम भारतीय सेना के प्रथम सीडीएस जनरल विपिन रावत के नाम पर रखा गया है। साथ ही, अधिवेशन से पूर्व होने वाली महत्वपूर्ण यात्राओं में बिरसा मुंडा की 150वीं जन्म जयंती पर

1500 से अधिक प्रतिनिधि होंगे शामिल परेड ग्राउंड में बनाए गए बिरसा मुंडा नगर में प्रथम सीडीएस जनरल विपिन रावत के नाम पर होगा मुख्य सभागार

झारखण्ड के उलिहातु से भगवान बिरसा संदेश यात्रा एवं रानी अब्बक्का के 500वीं जन्म जयंती के अवसर पर कर्नाटक स्थित उनकी जन्मस्थली से कलश यात्रा अधिवेशन में पहुंचेगी। साथ ही, गुरु तेग बहादुर सिंह के 350वें बलिदान दिवस के अवसर पर दिल्ली स्थित उनके बलिदान स्थल गुरुद्वारा शीशगंज साहिब से पवित्र जल भी इस अधिवेशन में लाया जाएगा।

राष्ट्रीय अधिवेशन का शुभारंभ आगामी 28 नवंबर को होगा, जिसके उद्घाटन सत्र में इसरो के पूर्व अध्यक्ष एस सोमनाथ मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहेंगे। अधिवेशन में अभाविप के संगठन शिल्पी प्रा. यशवंतराव केलकर की स्मृति में युवा पुरस्कार समारोह का आयोजन होगा। समाज कल्याण में महती भूमिका निभाने वाले गोरखपुर के श्रीकृष्ण पाण्डेय को प्रा. यशवंतराव केलकर पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा। इस सम्मान समारोह में उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित होंगे। अधिवेशन के दौरान शिक्षा, समाज, पर्यावरण, सेवा, खेल, तकनीकी जैसे महत्वपूर्ण समसामयिक विषयों पर गहन मनन-चिंतन होगा और प्रस्ताव समिति द्वारा देशभर से प्राप्त विभिन्न सुझावों पर चिंतन करके उन्हें पारित किया जाएगा।

अभाविप के विचार वृक्ष, संगठन के राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय अभियान, स्वतंत्रता संग्राम के महानायक, संस्कृति पुनर्जागरण की विभूतियां तथा विशेष रूप से रानी अब्बक्का के साहस को प्रभावशाली ढंग से प्रदर्शित किया गया है। इस प्रदर्शनी उद्घाटन के मुख्य अतिथि आचार्य बालकृष्ण होंगे।परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री डॉ वीरेंद्र सिंह सोलंकी ने कहा कि,अभाविप का यह 71वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन इसलिए भी विशेष है।देवभूमि उत्तराखण्ड में पहली बार यह राष्ट्रीय अधिवेशन आयोजित हो रहा है। इस आयोजन की तैयारी के लिए उत्तराखण्ड में सैकड़ों कार्यकर्ता लगे हैं, जो कि देशभर से आ रहे 1500 से अधिक प्रतिनिधियों का स्वागत करेंगे।

कंस्ट्रक्शन कंपनी का ठेकेदार गिरफ्तार

जिलेटिन ट्यूब का मामला: चट्टान के विस्फोट के लिए लाई गयीं थीं ट्यूब

शाह टाइम्स संवाददाता

अल्मोड़ा। सल्ट क्षेत्र में बीते दिनों मिले भारी मात्रा में विस्फोटक पदार्थ (जिलेटिन ट्यूब) के मामले का पुलिस ने सफलतापूर्वक अनावरण कर लिया है। एसएसपी देवेंद्र पींचा के नेतृत्व में पुलिस टीम ने मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार किया है।

दरअसल, बीते 20 नवंबर को सल्ट थाना क्षेत्र में राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय डभरा के पास झाड़ियों के पास खुले स्थान से 161 अदद बेलनाकार जिलेटिन ट्यूब बरामद होने से क्षेत्र में हड़कंप मच गया था। मामले को लेकर तत्काल एएसपी हरबन्स सिंह के पर्यवेक्षण और सीओ रानीखेत विमल प्रसाद के नेतृत्व में जनपद स्तर पर अलग-अलग चार टीमें गठित की गई थी।

इसके साथ ही बम डिस्पोजल टीम, डॉग स्क्वाड, स्थानीय एवं आसपास के थाना पुलिस, एलआईयू और आईआरबी को जांच में लगाया गया था। गठित पुलिस टीमों द्वारा घटनास्थल एवं उसके आस-पास के क्षेत्रों में सघन सर्च अभियान चलाया गया। इधर, अब जांच टीम ने मंगलवार को जिलेटिन मामले में आरोपी प्रशांत कुमार बिष्ट (35) पुत्र रविश चन्द्र बिष्ट, निवासी गरसारी थाना पाटी जनपद चम्पावत के खिलाफ विभिन्न धाराओं में मुकदमा दर्ज कर गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तारी के बाद आरोपी प्रशांत कुमार ने पूछताछ में बताया कि उसने वर्ष 2016-17 में तीन किमी लंबी रोड निर्माण का कार्य लिया था।

उस दौरान वह नजदीकी गांव में किराये का कमरा लेकर रहता था। निर्माणाधीन रोड में चट्टान आने से वर्ष 2018 में उसके पार्टनर लवी ने किसी से बात की थी तथा वहीं जिलेटिन ट्यूब विस्फोट के लिए लाया था। आरोपी ने बताया कि 6-7 वर्षों तक कमरा खाली नहीं करने पर जून 2025 को मकान मालिक हिम्मत सिंह ने किरायेदार से संपर्क किया, लेकिन अभियुक्त नहीं आया। जिसके बाद प्रशांत ने मकान मालिक को कमरे का ताला तोड़ कर सफाई करने के लिए कहा। मकान मालिक द्वारा मजदूरों से उक्त कमरे की सफाई कराकर सभी सामग्री को झाड़ियों में फेंक दिया गया। मकान मालिक को उक्त जैलेटिन ट्यूब के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। हालांकि अब भी पुलिस द्वारा मामले से जुड़े अन्य संदिग्धों के संबंध में अभियुक्त से गहनता से जानकारी जुटाई जा रही है। टीम में कोतवाल द्वाराहाट, विनोद जोशी, थानाध्यक्ष देघाट अजेंद्र प्रसाद, थानाध्यक्ष सल्ट कश्मीर सिंह, थानाध्यक्ष भतरौंजखान अवनीश कुमार, एसआई संजय जोशी, एएसआई लोमेश कुमार, लखविंदर सिंह शामिल रहे।

120 टिन लीसा पकड़ा

अल्मोड़ा। दन्या पुलिस ने 120 टिन अवैध लीसे के साथ तस्करी के एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने मौके पर तस्करी में प्रयुक्त पिकअप को सीज कर तस्कर के खिलाफ भारतीय वन अधिनियम के अंतर्गत अभियोग पंजीकृत किया गया है। मिली जानकारी अनुसार दन्या पुलिस ने मंगलवार को क्षेत्र में चेकिंग अभियान चलाया। इसी दौरान दन्या थाना गेट के पास एक पिकअप वाहन संख्या यूके 01 सीए 1134 को रोका गया। तलाशी लेने पर वाहन में बीना वैध दस्तावेज के 120 टिन लीसा बरामद किया गया। मौके पर पुलिस ने वाहन के चालक रमेश चन्द्र आर्या पुत्र किशन चन्द्र आर्या, निवासी काभड़ी पोस्ट दन्या जनपद अल्मोड़ा को गिरफ्तार किया गया। इस बीच एक व्यक्ति स्वयं को वन दरोगा बताते हुए मौके पर पहुंचा और रमन्ना काटने लगा। इस पर पुलिस ने मोबाइल का कैमरा ऑन कर दिया। मोबाइल कैमरा ऑन देख कथित वन दरोगा मौके से चला गया।

एक नजर...

कबड्डी खिलाड़ी मनीष ने किया नाम रोशन

बागेश्वर। जिले के कबड्डी खिलाड़ी मनीष गड़िया ने राज्य स्तर पर जिले का नाम रोशन किया है। उनका चयन अब राष्ट्रीय सब-जूनियर कबड्डी टीम के लिए हो गया है। वे आगामी 35वीं राष्ट्रीय सब-जूनियर कबड्डी प्रतियोगिता में प्रतिभाग करेंगे। जो आने वाले दिनों में हरियाणा में आयोजित राष्ट्रीय प्रतियोगिता में प्रतिभाग करेंगे। मनीष गड़िया को उत्तराखंड टीम का कप्तान नियुक्त किया गया है। हाल के दोनों में राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में उनका बेहतरीन प्रदर्शन रहा। उनका अब राष्ट्रीय जूनियर कबड्डी टीम में चयन हो गया है। मनीष आने वाले दिनों में 27 से 30 नवंबर को आयोजित होने प्रतियोगिता में प्रतिभाग करेंगे। उनके चयन होने पर जिले के खेल प्रेमियों ने उन्हें बधाई दी है। बधाई देने वालों में बागेश्वर कबड्डी एसोसिएशन के अध्यक्ष दिनेश मेहता, सचिव गणेश धपोला आदि शामिल है।

विधायक सुरेश गाड़िया ने किया जनसंपर्क

बागेश्वर। विधायक सुरेश गाड़िया ने कांडा-कमस्यार मंडल के तहत ग्राम पंचायत नायल बिलाड़ी, खुनौली और भतौड़ा में जनसंपर्क और जनमिलन कार्यक्रम आयोजित किया। इस दौरान उन्होंने चौपाल लगाकर स्थानीय लोगों से सीधे संवाद किया और उनकी समस्याओं को सुना। अधिकांश शिकायतों का समाधान मौके पर ही अधिकारियों से बातचीत कर किया गया, जबकि गंभीर समस्याओं के निस्तारण के लिए अधिकारियों को निर्देशित किया गया। विधायक गाड़िया ने कहा कि डबल इंजन की सरकार बेहतर काम कर रही है और केंद्र की योजनाओं से लोगों को लाभ मिल रहा है। उन्होंने आयुष्मान कार्ड के बारे में भी जानकारी दी और आशाओं को इसे बनाने की जिम्मेदारी दी। उन्होंने कहा कि कार्ड से सरकारी और निजी अस्पतालों में 5 लाख रुपये तक का इलाज संभव है। इस अवसर पर मंडल अध्यक्ष कांडा दरबान बिष्ट, ग्राम प्रधान दया देवी, भाजपा ज़िलाध्यक्ष अरुण आर्य, मंडल उपाध्यक्ष प्रवीण कार्की समेत कई अन्य जनप्रतिनिधि और ग्रामीण मौजूद रहे।

ग्राम प्रधानों को दिलाई पद की शपथ

बागेश्वर। जिले में त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव के वार्ड सदस्यों का कोरम पूरा होने के बाद 273 ग्राम प्रधानों को पद व गोपनीयता की शपथ दिलाई गई। 408 ग्राम पंचायतों में से 273 ग्राम प्रधान वार्ड सदस्यों का कोरम पूरा नहीं होने से शपथ नहीं ले पाए थे। गत दिनों चुनाव प्रक्रिया संपन्न हो गई है। सभी सदस्य निर्विरोध चुने गए। तीनों ब्लॉक मुख्यलयों में 273 प्रधानों को शपथ दिलाई गई। विकास खंड बागेश्वर में सहायक खंड विकास अधिकारी ख्याली राम के नेतृत्व में प्रधानों को शपथ दिलाई गई। सभी प्रधानों ने पद की गोपनीयता की शपथ ली। वहीं गरुड़ विकास खंड में बीसी जोशी खंड विकास अधिकारी गरुड़ ने प्रधानों को शपथ दिलाई है। जबकि कपकोट में खंड विकास अधिकारी कपकोट द्वारा नव नियुक्त प्रधानों को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई है। शपथ ग्रहण समारोह के बाद प्रधानों को उनके अधिकार एवं उनके द्वारा गांव में किए जाने वाले विकास कार्यों के बारे में जानकारी दी गई।

उज्जवला योजना के लिए करें आवेदन

बागेश्वर। उज्ज्वला योजना से वंचित रह गए ग्रामीण महिलाओं के लिए एक बार फिर योजना से जुड़ने के लिए आवेदन शुरू होने लगे हैं। इंडेन गैस एजेंसी कार्यालय बागेश्वर से मिली जानकारी के मुताबिक केंद्र सरकार की ओर से उज्ज्वला योजना के तहत आवेदन के लिए पोर्टल खोल दिया गया है। पात्र लोग अपने नजदीकी एजेंसी से आवेदन कर सकती है। एजेंसी कार्यालय से प्राप्त जानकारी के अनुसार वर्तमान में जिले से 10827 लोग योजना का लाभ उठा रहे है। हालांकि योजना का लाभ लेने के लिए परिवार की महिला को आय प्रमाण पत्र देना होगा। मानकों के अनुरूप आय होने पर ही लाभार्थी को योजना के लाभ मिल पाएगा। जिसके अनुसार परिवार के किसी भी सदस्य की प्रति माह दस हजार रुपए से कम आय वाले लाभार्थी को ही योजना का लाभ मिलेगा। बागेश्वर इंडेन एजेंसी के प्रबंधक जगदीश ने बताया कि उज्वला योजना के लिए आवेदन शुरू हो गए हैं। पत्र लाभार्थी एजेंसी में जाकर योजना का लाभ उठा सकता है।

बीच सड़क पर ट्रक खराब, लंबा जाम

बागेश्वर। बागेश्वर-गरुड़ मोटर मार्ग स्थित रवाईखाल के पास मंगलवार तड़के बीच पुल में एक ट्रक खराब हो गया। इस कारण तीन घंटे तक जाम लग गया। जाम के चलते सड़क के दोनों ओर वाहनों की लंबी कतार लग गई। दिल्ली, देहरादून जाने वाली रोडवेज की बसें फंसी रही। इसके अलावा कई अन्य छोटे व बड़े वाहन फंस गए। लोगों ने इसकी सूचना पुलिस व आपदा विभाग को दी। सूचना के बाद पुलिस मौके पर पहुंची। कड़ी मशक्कत के बाद तीन घंटे बाद जाम खुला। इसके बाद लोग गंतव्य को निकले। इधर दिन में बरातों का सीजन शुरू होते ही जगह जगह जाम लग रहा है। कांडा में करीब आधे घंटे तक लगे जाम में कई बारात की गाड़िया फंसी रही। जिसके चलते राहगीरों का आना जाना भी मुश्किल हुआ। लोगों ने पुलिस प्रशासन ने जिला मुख्यालय से बाहर जाने वाले बरातों को बाईपास से भेजने की मांग की है। जबकि नगर में दिन के समय बड़े बहनों की आवाजों रोकने की मांग की है।

प्रभारी प्रधानाचार्य से मारपीट पर मुकदमा

काशीपुर। इंटर कॉलेज में घुसकर कुछ युवकों पर प्रभारी प्रधानाचार्य से मारपीट का आरोप है। तहरीर पर पुलिस ने तीन नामजद और अज्ञात पर मुकदमा दर्ज किया है। अटल उत्कृष्ट राजकीय इंटर कॉलेज महुआखेडागंज प्रभारी प्रधानाचार्य नित्यानन्द मिश्र पुत्र शिवशंकर मिश्र ने पुलिस को दी तहरीर में कहा कि 18 नवंबर को विद्यालय के प्रार्थना स्थल पर गोलू उर्फ राजेंद्र, मनोज, राजू और उनके साथी जबरदस्ती विद्यालय गेट का ताला खुलवा कर जबरन अंदर आ गए। आरोप है कि उन्होंने राजकीय ड्यूटी के दौरान उनके साथ गाली-गलौज की और मारपीट कर जान से मारने की धमकी दी।

दुर्घटना का कारण बन सकती है क्षतिग्रस्त पुलिया

काशीपुर। रामनगर रोड पर चुंगी तिराहा के निकट बनी पुलिया क्षतिग्रस्त होने के कारण दुर्घटना का कारण बनती जा रही है।

स्थानीय नागरिकों ने बताया कि यह पुलिया ओवरलोड डंपरों के कारण क्षतिग्रस्त हुई है। कहा कि यह पुलिया रामनगर से काशीपुर को जोड़ती है। पुलिया की मिट्टी धस गई है, जिसके कारण आवागमन में दुर्घटना की संभावना बनी हुई है। उन्होंने प्रशासन से मांग की है कि इस पुलिया को शीघ्र दुरुस्त किया जाए जिससे भविष्य में होने वाली किसी दुर्घटना पर रोक लग सके।

नदारद अधिकारियों को जाएगा नोटिस

शाह टाइम्स संवाददाता

अल्मोड़ा। कैबिनेट मंत्री रेखा आर्या ने मंगलवार को विधानसभा सोमेश्वर की विकास योजनाओं की समीक्षा बैठक ली। उन्होंने अधिकारियों को योजनाओं को तय समय और गुणवत्ता के साथ पूरा करने के निर्देश दिए और बैठक से नदारद अधिकारियों को नोटिस जारी करने का आदेश दिया। मंत्री ने कहा कि अधूरी योजनाओं को मिशन मोड में पूरा किया जाए और कार्यों को निर्धारित समय के भीतर पूरा किया जाए। जो कार्य शासन स्तर से संबंधित हैं, उनकी शीघ्र जानकारी भेजी जाए, ताकि उनका समाधान उच्च स्तर पर किया जा सके। उन्होंने अधिकारियों को यह भी बताया कि केवल पत्राचार से काम नहीं चलता, बल्कि आपसी समन्वय से कार्यों को निस्तारित करना जरूरी है।

हाईकोर्ट ने दोनों शिक्षकों से विभाग के समक्ष प्रत्यावेदन देने को कहा

शाह टाइम्स संवाददाता

नैनीताल। उत्तराखंड हाईकोर्ट ने एलटी ग्रेड अंग्रेजी के दो अध्यापकों को उच्चतर माध्यमिक विद्यालय राजीवग्राम नरेंद्रनगर स्थान्तरित करने के मामले में दायर याचिकाओं को निस्तारित करते हुए इन दोनों शिक्षकों से विभाग के समक्ष प्रत्यावेदन देने व विभाग से इन प्रत्यावेदनों का नियमानुसार निस्तारण करने को कहा है। मामले की सुनवाई न्यायमूर्ति मनोज कुमार तिवारी की एकलपीठ में हुई। दोनों मामलों में पक्षकार सहायक अध्यापक एलटी ग्रेड (अंग्रेजी) के पद पर कार्यरत हैं। याचिकाओं में बताया गया कि ओम प्रकाश रनाकोटी को 26 जून 2023 को स्थानांतरित कर राजीवग्राम नरेंद्रनगर स्थित शासन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में तैनात किया गया था जहां उन्होंने 30 जून को कार्यभार भी ग्रहण किया। इसी आदेश से चन्द्र मोहन को राजीवग्राम से कौशल थौलधार स्थानांतरित किया गया था जिन्होंने जॉइनिंग के बाद याचिका दायर की। प्रतिनिधित्व के आधार पर विभाग ने उनका ट्रांस्फर आदेश वापस ले लिया जिसके बाद उन्होंने पुन: राजीवग्राम में कार्यभार संभाल लिया। परिस्थिति यह बनी कि एक ही पद पर दो शिक्षकों की तैनाती की स्थिति उत्पन्न हो गई जबकि एक शिक्षक को अस्थायी रूप से किसी अन्य विद्यालय में संबद्ध किया गया है। अदालत ने माना कि जनहित में दोनों शिक्षकों को नियमित एवं स्पष्ट पदस्थापन दिया जाना आवश्यक है। अदालत ने दोनों याचिकाओं का निस्तारण करते हुए निर्देश दिया कि शिक्षक अपने-अपने स्थानांतरण संबंधी प्रतिनिधित्व दस दिनों के भीतर सक्षम प्राधिकारी को प्रस्तुत करें। सक्षम प्राधिकारी को 6 सप्ताह के भीतर विधि अनुसार निर्णय लेने के आदेश दिए गए। साथ ही 8 सप्ताह तक या निर्णय आने तक जो भी पहले हो दोनों शिक्षकों की वर्तमान पोस्टिंग पर यथास्थिति बनाए रखने के निर्देश भी जारी किए गए।

मैचोड़ गांव में मलबे में दबे मजदूर, एक की मौत

शाह टाइम्स संवाददाता

अल्मोड़ा। डीनापानी के पास मैचोड़ गांव में मंगलवार को एक दर्दनाक हादसा हो गया। गांव में दीवार निर्माण में लगे तीन मजदूर मलबे में दब गए। जिसमें एक की मौके पर मौत हो गई। जबकि दो घायल हो गए। मिली जानकारी अनुसार डीनापानी के मैचोड़ गांव में एक घर के पीछे दीवार निर्माण का कार्य चल रहा था। अचानक पगडंडी समेत पूरा मलबा धंस गया। इस दौरान वहां कार्य कर रहे तीन मजदूर इसकी चपेट में आ गए। जबकि तीन मजदूर कुछ दूरी पर होने के चलते सुरक्षित है। सूचना के बाद एसडीआरएफ व पुलिस की टीमें घटनास्थल पहुंची। जिसके बाद रेस्क्यू अभियान चलाया गया। वहीं, जिला प्रशासन से एसडीएम संजय कुमार और डीडीएमओ विनीत पॉल भी मौके पर पहुंचे। मलबा हटाकर दो मजदूरों को बचा लिया गया। जबकि आनंद राम पूरी तरह मिट्टी में दब चुका था। जिसकी मौके पर ही मौत हो गई। दोनों घायलों को बेस अस्पताल में भर्ती कराया गया। जहां उनका उपचार चल रहा है। इधर, जिला आपदा प्रबंधन अधिकारी विनीत पॉल ने एक व्यक्ति की मौत की पुष्टि की है।

महिला हिंसा उन्मूलन दिवस लैंगिक समानता पर ज़ोर

मां अंबे इन्स्टीट्यूट में हुआ कार्यक्रम

शाह टाइम्स संवाददाता

अल्मोड़ा। राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के पीसीपी एनडीटी विभाग की ओर से मंगलवार को अन्तर्राष्ट्रीय महिला हिंसा उन्मूलन दिवस के अवसर पर मां अंबे इन्स्टीट्यूट ऑफ नर्सिंग एंड पैरामेडिकल साइंसेज अल्मोड़ा में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य महिला सुरक्षा, लैंगिक समानता और महिला हिंसा उन्मूलन के प्रति समाज को जागरूक करना रहा। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि पीसीपी एनडीटी समन्वयक धीरज साह, काउंसलर भगवत मंडन तथा सामाजिक कार्यकर्ता सुष्मिता भट्ट समेत अन्य ने दीप जलाकर किया। इस दौरान मौजूद छात्र-छात्राओं को महिला अधिकारों, घरेलू हिंसा की रोकथाम, उपलब्ध कानूनी प्रावधानों की जानकारी तथा महिलाओं के आत्मनिर्भर बनने के महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। महिलाओं के अधिकारों, सुरक्षा से जुड़े कानूनी प्रावधानों और घरेलू तथा सामाजिक हिंसा के विभिन्न रूपों पर विस्तृत जानकारी दी गई। वक्ताओं ने महिला हेल्पलाइन 1090, 181, पुलिस सहायता सेवाओं तथा त्वरित शिकायत निवारण तंत्र के बारे में जानकारी प्रदान की। महिलाओं और छात्राओं ने भी अपने विचार साझा किए और समाज में बढ़ती हिंसा को रोकने के लिए सामूहिक प्रयासों पर जोर दिया। कहा कि महिलाओं के प्रति किसी भी प्रकार की हिंसा अस्वीकार्य है और इसके खिलाफ आवाज उठाना हर नागरिक की जिम्मेदारी है। संस्थान की छात्राओं द्वारा भाषण प्रतियोगिता, जागरूकता प्रस्तुतियां तथा महिला सुरक्षा पर आधारित चर्चा सत्र आयोजित किए गए। मुख्य अतिथियों ने छात्राओं के प्रयासों की सराहना करते हुए उन्हें समाज में महिला सुरक्षा और जागरूकता के लिए सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया। यहां संस्थान के अध्यक्ष संदीप सिंह, उपाध्यक्ष डा. प्रीति पाल समेत अन्य मौजूद रहे।

देवेंद्र नयाल अध्यक्ष और विनोद जोशी महामंत्री बने

अल्मोड़ा। विकासखंड हलवाबाग के सभागार में मंगलवार को नवनियुक्त प्रधानों को पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई गई। वहीं, ब्लॉक कार्यकारिणी का भी गठन किया गया। जिसमें सर्वसम्मति से देवेंद्र सिंह नयाल को अध्यक्ष और विनोद जोशी को महामंत्री चुना गया। संगठन के नई कार्यकारिणी में अध्यक्ष और महामंत्री के अलावा वरिष्ठ उपाध्यक्ष पद पर सुंदर मटियानी, उपाध्यक्ष पद पर नवीन भट्ट, महिला उपाध्यक्ष पद पर चंद्रिका तिवारी और मंत्री पद पर प्रमोद चंद्र जोशी को चुना गया। इस मौके पर यहां ब्लॉक प्रमुख हिमानी कुंडू, ज्येष्ठ प्रमुख प्रतिनिधि भूपेंद्र भोज, भरत भूषण कुंडू, गिरीश चंद्र तिवारी, प्रदीप पालनी, दिनेश चंद्र आदि मौजूद रहे।

हुक्का बार में पुलिस की रेड

अवैध संचालन पर मालिक समेत आठ का चालान

शाह टाइम्स संवाददाता

काशीपुर। क्षेत्राधिकारी काशीपुर के निर्देश पर हौज मस्जिद के पास मोहल्ला अली खां में गत सायं पुलिस टीम द्वारा चेकिंग अभियान चलाया गया। चेकिंग के दौरान उपसरपंच की चाय की दुकान के नाम से चल रही दुकान के ऊपर बने कमरे में बिना लाइसेंस के अवैध रूप से संचालित फ्लेवर हुक्का बार का भंडाफोड़ किया गया।

पुलिस टीम के पहुंचने पर कमरे में कुछ युवक फ्लेवर वाले हुक्के पीते हुए मिले। मौके पर दुकान मालिक के खिलाफ धारा 83 पुलिस एक्ट के तहत 10,000 रूपये का कोर्ट चालान किया गया। वहीं हुक्का पीते मिले 7 युवकों के विरुद्ध धारा 81 पुलिस एक्ट के तहत 500-500 रूपये के चालान किए गए। पुलिस ने मौके से 5 हुक्के कब्जे में लेकर दुकान को बंद कर दिया। अधिकारियों ने बताया कि क्षेत्र में अवैध गतिविधियों पर रोक लगाने के लिए आगे भी इसी तरह के चेकिंग अभियान जारी रहेंगे। पुलिस टीम में वरिष्ठ उप निरीक्षक केसी आर्या, उप निरीक्षक भूपाल राम पौड़ी, उप निरीक्षक देवेंद्र सामंत, कांस्टेबल योगेंद्र सिंह, कांस्टेबल अमरदीप, कांस्टेबल नरेंद्र टम्टा शामिल थे।

संस्कृत छात्र प्रतियोगिताओं का रंगारंग समापन

शाह टाइम्स संवाददाता

बागेश्वर। पीएम श्री विक्टर मोहन जोशी स्मारक राजकीय इंटर कॉलेज बागेश्वर में द्वि दिवसीय जनपद स्तरीय संस्कृत छात्र प्रतियोगिताओं का रंगारंग समापन पुरस्कार वितरण के साथ संपन्न हुआ। उत्तराखंड संस्कृत अकादमी के द्वारा संस्कृत भाषा के संरक्षण, संवर्धन, और प्रचार-प्रसार के लिए यह प्रतियोगिताएं आयोजित की गई थीं। इस अवसर पर मुख्य अतिथि जिला पंचायत उपाध्यक्ष विशाखा खेतवाल और अति विशिष्ट अतिथि वृक्ष मित्र किशन सिंह मलडा ने संयुक्त रूप से पुरस्कार वितरित किए। मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में कहा कि संस्कृत हमारी प्राचीनतम भाषा है, सभी भाषाओं की जननी है, और एक वैज्ञानिक भाषा है। उत्तराखंड सरकार संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए

विजेताओं को पुरस्कार वितरण

प्रयत्नरत है। वृक्ष मित्र किशन सिंह मारला ने कहा कि संस्कृत के बिना जीवन शून्य है, संस्कृत वेद उपनिषदों की भाषा है। प्रतियोगिताओं में संस्कृत नाटक, संस्कृत नृत्य, संस्कृत समूह गान, संस्कृत श्लोक उच्चारण, संस्कृत आशु भाषण, और संस्कृत वाद-विवाद प्रतियोगिताएं शामिल थीं। इन प्रतियोगिताओं में कनिष्ठ और वरिष्ठ वर्ग के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया था। वरिष्ठ वर्ग नाटक प्रतियोगिता में राजीव गांधी नवोदय विद्यालय बहुली की टीम ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। नृत्य में भी राजीव नवोदय विद्यालय की टीम प्रथम स्थान पर रही। वाद-विवाद प्रतियोगिता में राजकीय इंटर कॉलेज सोंग के मोहित देवलिता और नेहा जोशी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। आशु भाषण में राजकीय इंटर कॉलेज गरुड़ के छात्र अभिनव कंडपाल ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। श्लोक उच्चारण में राजकीय इंटर कॉलेज बज्जूला की छात्रा कशक जहां ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। कनिष्ठ और वरिष्ठ वर्ग में प्रथम स्थान प्राप्त 64 प्रतिभागी राज्यस्तरीय संस्कृत प्रतियोगिता में प्रतिभाग करेंगे, जो आगामी 3 और 4 दिसंबर को हरिद्वार में संपन्न होगी। जनपद संयोजक दीपचंद्र जोशी ने उपस्थित समस्त अतिथियों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन ब्लॉक संयोजक लेफ्टिनेंट मोहन चंद्र जोशी द्वारा किया गया। इस अवसर पर जनपद सह संयोजक पंकज प्रसाद भट्ट, डा. चंद्रशेखर भट्ट, अनीता आर्य, डा. दीपा जोशी, कमला गोस्वामी, ममता जोशी, गणेश कुमार, राजेश आगरी, राकेश कुमार, डा. विवेक कुमार, हरीश दफौटी, जगदीश नारायण, ममता रावल, डा. स्वाति, और रेखा भारती आदि लोग शिक्षक-शिक्षिकाएं उपस्थित थीं।

युवाओं में वैज्ञानिक भावना जागृत करने का उत्सव

पंतनगर विश्वविद्यालय में एआईयू अनुसंधान सम्मेलन 'अन्वेषण' का भव्य शुभारम्भ

शाह टाइम्स संवाददाता

पंतनगर। पंतनगर विश्वविद्यालय में मंगलवार को भारतीय विश्वविद्यालय संघ (एआईयू) एवं पंतनगर विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वाधान में प्रतिष्ठित एआईयू अन्वेषण-उत्तर जोन छात्र अनुसंधान सम्मेलन 2025 का शुभारंभ किया गया। उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल के कुलपति प्रोफेसर डा. डीएस रावत, पंतनगर विश्वविद्यालय के कुलपति एवं नार्थ जोन अन्वेषण के संरक्षक प्रोफेसर डा. मनमोहन सिंह चौहान, एआईयू के संयुक्त निदेशक एवं नार्थ जोन अन्वेषण के संयोजक डा. अमरेंद्र पाणि, विश्वविद्यालय

कुलसचिव एवं जोनल कोऑर्डिनेटर डा. दीपा विनय तथा अधिष्ठाता कृषि व्यवसाय प्रबंधन एवं जोनल को-कोऑर्डिनेटर डा. आरएस जादौन सहित निर्णायक मण्डल के सदस्य, अधिष्ठातागण, निदेशकगण, विभिन्न समन्वयक, विभिन्न समितियों के अध्यक्ष एवं सदस्य, विभागाध्यक्ष, संकाय सदस्य एवं विश्वविद्यालय के विद्यार्थी तथा देश के विभिन्न संस्थानों से आये छात्र प्रतिभागियों ने उद्घाटन सत्र में प्रतिभाग किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि कुमाऊँ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर डीएस रावत ने अपने जीवन के अनुभवों एवं शोध के क्षेत्र में उत्कृष्टता पाने हेतु लगन एवं समर्पण पर विचार व्यक्त करते हुए अन्वेषण में प्रतिभाग कर रहे विद्यार्थियों एवं सभागार में उपस्थित वैज्ञानिकों को प्रोत्साहित किया। कुलपति प्रोफेसर मनमोहन सिंह चौहान ने कहा अन्वेषण-2025 कार्यक्रम केवल एक प्रतियोगिता नहीं बल्कि युवाओं में वैज्ञानिक भावना और नवाचार जागृत करने का उत्सव है। डा. अमरेंद्र पाणि ने एआईयू के गठन, इसके उद्देश्यों एवं इसके द्वारा शिक्षण एवं शोध के क्षेत्र में किये गये नीतिगत निर्णयों एवं उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में उपस्थित अतिथियों का स्वागत करते हुए नॉर्थ जोन अन्वेषण 2025 के सह-संयोजक डा. आरएस जादौन ने अन्वेषण 2025 के विभिन्न पहलुओं पर विस्तृत प्रकाश डाला। नॉर्थ जोन अन्वेषण 2025 में कुल 30 विश्वविद्यालयों के 1800 विद्यार्थी ने पंजीकरण किया। कुल 375 छात्रों ने दो चरणों में पोस्टर प्रस्तुति तथा चयनित प्रविष्टियों की मौखिक (पोडियम) प्रस्तुति में अपने प्रोजेक्ट प्रस्तुत किए। कार्यक्रम के अंत में नार्थ जोन अन्वेषण 2025 की संयोजक डा. दीपा विनय ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

कांग्रेसियों को एकसूत्र में पिरो रहीं अलका पाल

शाह टाइम्स संवाददाता

काशीपुर। वरिष्ठ कांग्रेसी नेत्री अलका पाल के काशीपुर महानगर अध्यक्ष बनने के बाद उपजे विरोध

के स्वर अब धीरे-धीरे थमते दिखाई दे रहे हैं। अलका पाल ने महानगर अध्यक्ष बनने के बाद पार्टी के वरिष्ठों के घर-घर पहुंच रूठे हुए को मनाने की कवायद तेज कर दी है। जिसमें वह काफी हद तक सफल भी होती दिखाई दे रही हैं। वहीं उन्हें कई जो पूर्व में विरोध के स्वर अलाप रहे थे अब उनका आशीर्वाद भी मिलता दिखाई दे रहा है। बीते दिनों अलका पाल ने मनोज अग्रवाल, संदीप सहगल, अर्पित मेहरोत्रा, त्रिलोक सिंह अधिकारी आदि कई कांग्रेसियों के घर पहुंच उन्हें मनाकर मिठाई खिलाते हुए उनका आशीर्वाद लिया। गत दिवस अलका पाल ने वरिष्ठ कांग्रेसी नेता व प्रदेश सचिव अरूण चौहान के निवास पर पहुंच उनके गिले शिकवे भी दूर करते हुए उनका भी आशीर्वाद लिया। इस मौके पर त्रिलोक सिंह अधिकारी समेत चौहान परिवार मौजूद रहा।

अजय टम्टा ने वितरित किए टैबलेट

शाह टाइम्स संवाददाता

अल्मोड़ा। इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन की सीएसआर पहल के अंतर्गत मंगलवार को अल्मोड़ा के विभिन्न विद्यालयों में अध्ययनरत 1199 विद्यार्थियों को टैबलेट प्रदान किए गए। जीआईसी सभागार में आयोजित कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि केंद्रीय राज्य मंत्री अजय टम्टा ने किया। इस दौरान उन्होंने छात्रों को टैबलेट वितरित कर कहा कि आधुनिक समय में डिजिटल शिक्षा ही विद्यार्थियों के भविष्य का आधार है। पर्वतीय क्षेत्रों में अध्ययनरत बच्चों को टैबलेट उपलब्ध कराना उनके लिए नए अवसरों के द्वार खोलेगा और प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में सहायक सिद्ध होगा। कार्यक्रम में भाजपा जिला महामंत्री दर्शन रावत, नगर अध्यक्ष विनीत बिष्ट, मानसखंड विज्ञान केंद्र प्रभारी डा. नवीन चंद्र जोशी मौजूद रहे।

राज्य में रोजगार के अवसर बढ़ेः भट्ट

सांसद अजय भट्ट व मंत्री डा. धनसिंह रावत ने किया सहकारिता मेले का शुभारंभ

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। संयुक्त राष्ट्र द्वारा 2025 को अंतरराष्ट्रीय सहकारिता वर्ष घोषित किए जाने के अवसर पर उत्तराखंड सरकार ने राज्य के सभी जनपदों में सहकारिता मेलों का आयोजन कराया जा रहा है। मंगलवार को हल्द्वानी के एमबी इंटर कॉलेज मैदान में सात दिवसीय सहकारिता मेले का शुभारंभ विधिवत मुख्यअतिथि नैनीताल-उधमसिंह के सांसद अजय भट्ट व विशिष्ट अतिथि के रूप में सहकारिता मंत्री डा. धन सिंह रावत ने फीता काटकर किया। जिसके बाद दोनो अतिथियों ने एमबी कॉलेज मैदान में लगाए गए स्टालों का निरीक्षण भी किया। इस मौके पर मुख्य अतिथि सांसद ने कहा कि सहकारिता मेले लगाने का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण आर्थिक, सामाजिक गतिविधियों को बढ़ाने के साथ ही किसान, उद्यमियों, महिला समूहों को नई पहचान दिलाने व स्थानीय उत्पादों को स्थायी बाजार उपलब्ध कराना, महिला स्वयं. सहायता समूहों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाना और ग्रामीण उद्यमिता को प्रोत्साहित करना है। सांसद श्री भट्ट ने कहा कि सहकारिता के क्षेत्र में राज्य में अनेक विकास हुए हैं। राज्य में रोजगार के अवसरों में वृद्धि हुई है सहकारिता के क्षेत्र में यहां के युवा आत्मनिर्भर हो रहे हैं।

महिला समूहों की आर्थिकी बढ़ी है। सहकारिता मंत्री डा. धन सिंह रावत ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय सहकारिता वर्ष के अंतर्गत राज्य में सहकारिता के क्षेत्र को बढ़ाए जाने के लिए प्रत्येक जिलों में सहकारिता मेले का आयोजन किया जा रहा है राज्य का यह सातवां मेला है इन मेलों में हजारों की संख्या में लोग प्रतिभाग कर लाभ उठा रहे हैं। उन्होंने कहा कि उत्तराखंड में दीनदयाल उपाध्याय किसान योजना एवं अटल आयुष्मान योजना के अंतर्गत लाभार्थियों की संख्या लगातार बढ़ रही है लोगों को इन योजनाओं से लाभ मिल रहा है, वर्तमान में यह संख्या 15 लाख हुई है।

उन्होंने कहा कि राज्य सरकार किसानों को 0 प्रतिशत ब्याज पर ऋण प्रदान कर रही है वर्तमान तक राज्य में 8000 करोड़ रुपए, शून्य प्रतिशत ब्याज पर किसानों को ऋण दे दिया गया है। इसी के साथ ही महिला समूह को भी 0 प्रतिशत पर ऋण उपलब्ध कराया जा रहा है। उन्होंने कहा कि शीघ्र ही प्रदेश में तीन महत्वपूर्ण योजनाएं लॉन्च की जा रही है जिसमें बुजुर्ग, महिला, युवा जो भी भारत यात्रा करना चाहते हैं सहकारिता बैंक के माध्यम से ऐसे समूह को 2 लाख तक का ऋण उपलब्ध कराया जाएगा। दूसरी योजना महिलाओं को 21000 रुपए से लेकर 2 लाख तक की धनराशि तक का ऋण उनको स्वरोजगार आदि कार्य के लिए बिना किसी गारंटी के सहक.ारी बैंक के माध्यम से दिया जाएगा।

तीसरी योजना जो फल, सब्जी आदि का फड़ आदि के ठेले लगाने वाले अंत्योदय परिवार के लोगों के लिए है। कार्यक्रम में कृषि, उद्यान, पशुपालन, डेयरी, हस्तशिल्प, जैविक उत्पाद एवं विभिन्न सरक.ारी विभागों सहित अन्य स्टॉल लगाए गए। मेले में आँचल कला केन्द्र की टीम द्वारा परंपरागत लोक संस्कृति, लोकगीत से सभी का स्वागत किया। इस अवसर पर विभिन्न कुल 12 लाभार्थियों को चेक भी प्रदान किए गए। कार्यक्रम का संचालन विभु कृष्णा एवं मीनाक्षी द्वारा किया गया। इस मौके पर जिला पंचायत अध्यक्ष दीपा दरम्वाल, भाजपा जिलाध्यक्ष प्रताप बिष्ट, दायित्वधारी दिनेश आर्य, सुरेश भट्ट, दीपक मेहरा, शंकर कोरंगा, नवीन वर्मा, जिला पंचायत उपाध्यक्ष देवकी देवी, दुग्ध संघ अध्यक्ष मुकेश बोरा, आंदोलनक.ारी हुकुम सिंह कुंवर, युवा मोर्चा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष शशांक रावत, रंजन बर्गली, जिलाधिकारी ललित मोहन रयाल, सहकारी बैंक के एमडी प्रदीप मल्होत्रा, संयुक्त निबंधक नीरज बेलवाल जिला विकास अधिकारी गोपाल गिरी, सिटी मजिस्ट्रेट गोपाल सिंह चौहान, सहायक निबंधक डीएस नपलचियाल सहित कई लोग मौजूद रहे।

पूर्व कैबिनेट मंत्री दिवाकर भट्ट के निधन पर शोक

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। देवभूमि उद्योग व्यापार मंडल ने उत्तराखंड क्रांति दल के प्रमुख नेता और पूर्व कैबिनेट मंत्री दिवाकर भट्ट के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया। प्रदेश कार्यालय गुरुनानक मार्केट हल्द्वानी में दिवाकर भट्ट को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस मौके पर प्रदेश आंदोलनकारी और देवभूमि उद्योग व्यापार मंडल के संस्थापक अध्यक्ष हुकम सिंह कुंवर ने गहरी संवेदना व्यक्त करते हुए कहा कि दिवाकर भट्ट ने राज्य आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। राज्य के निर्माण में उनका योगदान अविस्मरणीय रहेगा। उनके निधन से राज्य ने एक ऐसा नेता खो दिया है जो हमेशा राज्य के हितों के लिए संघर्ष करता था। श्रद्धांजलि अर्पित करने वालो में प्रदेश उपाध्यक्ष गोपाल भट्ट, प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष अनिल खंडेलवाल, प्रदेश प्रभारी जगमोहन चिलवाल, प्रदेश महामंत्री राजकुमार केसरवानी, महानगर अध्यक्ष अजय कृष्ण गोयल, हरजीत चड्डा, आफताब हुसैन, राज्य आंदोलनकारी बृजमोहन सिजवाली, डा. केदार पलड़िया, उमेश बेलवाल, मनोज खुल्वे, हर्ष जलाल, पंकज सुयाल, रमेश जोशी, योगेश कांडपाल आदि लोग मौजूद रहे।

शिक्षकों ने कैबिनेट मंत्री को सौंपा ज्ञापन

हल्द्वानी। सहकारिता मेले के दौरान शिक्षक प्रतिनिधियों ने शिक्षा मंत्री डा. धन सिंह रावत से वार्ता की और उन्हें ज्ञापन सौंपा। वार्ता के दौरान प्रति.निधियों ने पदोन्नति, स्थानांतरण, कला-संगीत एवं शारीरिक शिक्षा के लिए पद सृजन, यात्रा अवकाश बहाली और बेसिक संवर्ग के शिक्षकों को चयन-प्रोन्नत वेतनमान (आर्थिक लाभ) देने जैसे विषय उठाए। शिक्षकों ने उम्मीद जताई कि उठाए गए मुद्दों पर जल्द ही सकारात्मक पहल की जाएगी। इस दौरान जिलाध्यक्ष गिरीश जोशी, उपाध्यक्ष मदन गोस्वामी, संरक्षक धर्मेंद्र पनेरु, कुसुम पांडे, डा. सोहन मंजिला, रविंद्र कुमार, तिलक जोशी, बी पलडिया, वशी अहमद आदि शिक्षक मौजूद रहे।

शौर्य, बलिदान पर डाली रोशनी

श्री गुरुतेग बहादुर का शहीदी दिवस आस्था के साथ मनाया

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। गुरुद्वारा श्री गुरु नानक पुरा, ठंडी सड़क में श्री गुरु तेग बहादुर जी का 350वाँ शहीदी पर्व श्रद्धा और आस्था के साथ बड़े धूमधाम से मनाया गया। इस उपलक्ष्य में विशेष दीवान का आयोजन किया गया, जिसमें प्रमुख रूप से बाहर से आए कथावाचक भाई गुरसेवक सिंह ने श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी की जीवन गाथा पर प्रकाश डाला और उनके शौर्य, पराक्रम, त्याग और बलिदान को साझा किया।

कार्यक्रम के दौरान विशेष रूप से ढाढ़ी जत्था ज्ञानी गुरबाज सिंह आज़ाद ने गुरु साहिब जी की जीवन कथा को बहुत सुंदर ढाढ़ी वार के रूप में प्रस्तुत किया। दिल्ली से आए ज्ञानी सतपाल सिंह ने राग और कीर्तन के माध्यम से संगत को मंत्रमुग्ध किया। गुरुद्वारे के स्टेज सेक्रेटरी अमरजीत सिंह आनंद और महासचिव जसपाल सिंह कोहली ने जानकारी दी कि इस विशेष आयोजन को बड़े सुनियोजित और व्यवस्थित तरीके से मनाया गया, जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालु गुरुद्वारा साहिब में एकत्र हुए। श्रद्धालुओं ने गुरु की भक्ति में डूबकर गुरबाणी का आनंद लिया और गुरु साहिब जी को श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर हेड ग्रंथी ज्ञानी ठाकुर सिंह ने समापन किया और जगत कल्याण की अरदास की। कार्यक्रम के दौरान विशाल गुरु का अटूट लंगर संगत को सेवा प्रदान करता रहा।

कार्यक्रम में हल्द्वानी सिख फेडरेशन द्वारा आयोजित रक्तदान शिविर में 101 यूनिट रक्तदान करने के लिए गुरप्रीत सिंह प्रिंस को गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा सम्मानित किया गया। इस मौके पर शहर विधायक सुमित हृदयेश, ललित जोशी, डा. परमजीत सिंह ने गुरुद्वारा पहुंचे और गुरु साहिब जी को माथा टेका। कार्यक्रम में विशेष सहयोग प्रदान करने वालों में सुखमणि सोसाइटी के सदस्य, सिख मिशनरी कॉलेज द्वारा शिक्षा का लंगर, और सनातन मेडिकोज की चिकित्सकीय टीम शामिल रही, जिन्होंने निशुल्क स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान कीं। कार्यक्रम में प्रबंधक कमेटी के मुख्य सेवादार हरजीत सिंह सच्चर, रिंकल चंडोक, अमरजीत सिंह, जसपाल सिंह को.हली, प्रवक्ता हरजीत सिंह चड्डा, बलजीत कौर, जसबीर कौर चंडोक, सतवंत कौर, सुरेंद्र कौर, सतपाल सिंह गुजराल, दिलप्रीत सिंह आदि मौजूद रहे।

सीएम पुष्कर धामी आज हल्द्वानी में

हल्द्वानी। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी एक दिवसीय जनपद भ्रमण पर आ रहे हैं। उक्त जानकारी देते हुए जिलाधिक.ारी ललित मोहन रयाल ने बताया कि मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी कल यानि आज बुधवार को अपराह्न पौने दो बजे देहरादून से प्रस्थान कर हेलीकॉप्टर से 2 बजकर 40 मिनट में एफटीआई हेलीपैड हल्द्वानी पहुंचेंगे। हल्द्वानी एफटीआई हेलीपैड से कार द्वारा तीन बजे एमबी इंटर कॉलेज हल्द्वानी पहुंचकर अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता वर्ष-2025 के उपलक्ष्य में आयोजित सहकारिता मेले में प्रतिभाग करेंगे। उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी 4 बजकर 10 मिनट पर एमबी इंटर कॉलेज हल्द्वानी से एफटीआई हेलीपैड हल्द्वानी के लिए प्रस्थान करेंगे।

बैंक्वेट हॉल के बाहर से बुलेट चोरी, मुकदमा दर्ज

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। भीषण सर्दी के साथ ही शादियों का सीज़न चरम पर है। ऐसे में शहर के वाहन चोर भी पूरी तरह से सक्रिय हो चुके हैं। शहर में लगातार हो रही चोरियों के बीच चोरों ने एक बार फिर बैंक्वेट हॉल की पार्किंग पर खड़ी बुलेट पर हाथ साफ कर दिया।

पुलिस ने पीड़ित की तहरीर के आधार पर अज्ञात वाहन चोर के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी। जानकारी के अनुसार आनंदपुर हल्द्वानी निवासी हर्षित नेगी पुत्र कुशल सिंह नेगी ने कोतवाली पुलिस को सौंपी तहरीर में कहा कि बीती 19 नवंबर को वह अपनी बुलेट से रामपुर रोड स्थित एक पार्टी में शामिल होने के लिए एक बैंक्वेट हॉल गए। उन्होंने बताया उन्होंने अपनी बुलेट को बैंक्वेट हॉल के पार्किंग में खड़ी कर चले गए। उन्होंने बताया जब वह पार्टी निपटाकर वापस घर जाने के लिए पार्किंग के पास अपनी बुलेट लेने पहुंचे तो वहां से गायब थी। उन्होंने बताया कि आस-पास काफी खोजबीन की लेकिन बुलेट का कोई पता नहीं चला। उन्होंने बताया कि बैंक्वेट हॉल में लगे सीसीटीवी फुटेज देखा तो उसमे एक युवक बुलेट ले जाते दिखाई दिया। पुलिस ने पीड़ित की तहरीर के आधार पर अज्ञात वाहन चोर के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी।

मुखानी पुलिस ने किया बाइक चोरी का खुलासा

चोरी की दो बाइक बरामद, एक शातिर चोर गिरफ्तार

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। एक सप्ताह पूर्व मुखानी थानाक्षेत्र के अंतर्गत अलग-अलग स्थानों से हुई बाइक चोरी के मामले में मुखानी पुलिस ने कार्रवाई करते हुए चोरी की दो बाइक सहित एक शातिर वाहन चोर को गिरफ्तार किया है। पकड़े गए शातिर वाहन चोर की निशानदेही पर पुलिस ने खुशालपुर नई आबादी से जंगल के पास से चोरी की बाइक बरामद की है। शातिर चोर के खिलाफ पुलिस ने कार्रवाई कर न्यायालय में पेश करने की तैयारी कर रही है। जानक.ारी देते हुए मुखानी थानाध्यक्ष दिनेश चन्द्र जोशी ने बताया कि बीते 16 नवंबर को नारीपुर लामाचौड़ मुखानी निवासी सतीश जोशी पुत्र रमेश चन्द्र जोशी ने बाइक संख्या यूके04डी-4464 चोरी होने की शिकायत दर्ज कराई। जबकि उसी दिन चंदन बिहार अमृताश्रम, ऊंच.ापुल मुखानी निवासी दिनेश बिष्ट पुत्र बच्ची सिंह ने भी अपनी बाइक संख्या यूके04वी-9838 चोरी होने की शिकायत दी। उन्होंने बताया कि दोनो की तहरीर के आधार पर अज्ञात वाहन चोरी के आरोप में मुकदमा दर्ज करते हुए उनकी तलाश शुरू कर दी। आस-पास लगे सीसीटीवी कैमरों की मदद से पुलिस ने बीते सोमवार की रात्रि पारस देवका पुत्र राजेंद्र सिंह देवका उर्फ राजन निवासी देवपुर देवका, कमलुवागांजा मुखानी को हिरासत में लिया और उससे सख्ती से पूछताछ की तो उसने वाहन चोरी की बात कबूल की। जिसके बाद पुलिस ने पकड़े गए शातिर चोर की निशानदेही पर खुशालपुर नई आबादी से जंगल के पास से चोरी की गई दोनो बाइकों को बरामद कर लिया। टीम में एसआई नरेंद्र कुमार, एसआई अविनाश मौर्य, कॉस्टेबल कुंदन शाही, कॉस्टेबल पूरन सिंह शामिल रहे।

गौला बाईपास के पास से 918 ग्राम चरस बरामद

मुक्तेश्वर से डिलीवरी करने आया तस्कर धरा

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। सुनकोट मुक्तेश्वर से स्कूटी में सवार होकर हल्द्वानी चरस की डिलीवरी करने आए एक तस्कर को एसओजी व बनभूलपुरा पुलिस की संयुक्त टीम ने मंगलवार दोपहर यात्री शेड गोला बाईपास के पास से 918 ग्राम चरस बरामद की है। जिसकी कीमत एक लाख आंकी जा रही है। पुलिस ने तस्करी में प्रयुक्त स्कूटी को सीज करते हुए आरोपी तस्कर के खिलाफ कार्रवाई कर न्यायालय में पेश करने की तैयारी कर रही है। जानकारी के अनुसार नशे के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत बनभूलपुरा पुलिस मंगलवार को क्षेत्र में चैकिंग कर रहे थी तभी पुलिस को मुखबिर की सटीक सूचना मिली की एक युवक मुक्तेश्वर से चरस लेकर हल्द्वानी डिलीवरी करने आ रहा है। सटीक सूचना पर बनभूलपुरा थानाध्यक्ष सुशील जोशी व एसआ.ेजी प्रभारी राजेश जोशी के नेतृत्व में टीम का गठन किया गया। टीम ने गौलापार बाईपास के पास चैकिंग अभियान शुरू कर दिया। तभी पुलिस ने यात्री शेड गोला बाईपास रोड के पास एक स्कूटी संख्या यूके04एआर-6927 आती दिखाई दी। जो टीम को देखकर भागने लगा। शक होने पर टीम ने घेराबंदी करते हुए उसे दबोच लिया। जब उसकी तलाशी ली तो उसके पास से 918 ग्राम चरस बरामद हुई। जिसकी कीमत एक लाख बताई जा रही है। पकड़े गए चरस तस्कर ने अपना नाम योगेश सिंह बोरा पुत्र बहादुर सिंह बोरा निवासी ग्राम सुनकोट थाना मुक्तेश्वर बताया। उसने बताया कि वह चरस को हल्द्वानी में किसी को देने के लिए आया था। पुलिस ने तस्करी में प्रयुक्त वाहन को सीज करते हुए तस्कर को न्यायालय में पेश करने की तैयारी कर रही है। टीम में एसआई जगवीर सिंह, कांस्टेबल दिलशाद अहमद, सुनील कुमार सहित एसओजी कांस्टेबल भूपेंद्र ज्येष्ठा, अरुण राठौड शामिल थे।

काठगोदाम के गौला बैराज में देर रात गुलदार की दस्तक से दहशत

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। काठगोदाम की घनी आबादी में देर रात गुलदार दिखने से दहशत का माहौल है। एक घर में लगे सीसीटीवी में गुलदार की मूवमेंट कैद हुई है। ऐसा पहली बार नहीं है कि इस क्षेत्र में गुलदार ने दस्तक दी हो। यहां पर आए दिन गुलदार व बाघ देखा गया है और समय-समय पर क्षेत्र में दहशत का माहौल पैदा होता रहा है। काठगोदाम के गैला बैराज क्षेत्र में सोमवार को उस समय हलचल मच गयी जब लोगों को यह खबर लगी कि उनके घरों के आसपास देर रात गुलदार चहल कदमी कर रहा था।

गौला बैराज निवासी लक्ष्मण सिंह बिष्ट के घर की दीवार में मुवेंट करता हुआ गुलदार उनके घर में लगे सीसीटीवी फुटेज में कैद हुआ है। गुलदार की दस्तक से गौला बैराज क्षेत्र में लोग डरे सहमे हुए हैं। सीसीटीवी में साफ देखा जा सकता है कि एक गुलदार घनी आबादी वाली एक गली व घर की दीवार में मज़े से घूम रहा है। इस क्षेत्र में अब से पहले भी गुलदार कई बार देखा गया है। अब एक फिर से गुलदार दिखने से लोग सतर्क हो गए हैं। गुलदार की दस्तक ने उन लोगों को ज्यादा भयभीत किया है जो देर रात घरों को लौटते हैं। स्थानीय लोगों ने वन विभाग के संज्ञान में लाते हुए गुलदार को पकड़ने की मांग की है।

एक सटोरिया गिरफ्तार

हल्द्वानी। बनभूलपुरा पुलिस ने सट्टे की खाईबाड़ी करते हुए एक सटोरिये को सट्टा लगाते रंगेहाथ गिरफ्तार किया है। जिसके पास से सट्टा पर्ची व 2800 रूपये की नगदी बरामद की है। जानकारी के अनुसार बनभूलपुरा थानाध्यक्ष सुशीला जोशी के नेतृत्व में एसआई जगवीर सिंह मय टीम के साथ क्षेत्र में गश्त कर रहे थे तभी टीम ने सार्वजनिक स्थान पर हार जीत के लिए सट्टा लगा रहे मूलरूप से मो. जखीरा थाना किला बेरली यूपी व हाल निवासी इन्द्रानगर ठोकर रेलवे पटरी बनभूलपुरा निवासी सनी पुत्र शहजादे को गिरफ्तार किया है। जिसके पास से सट्टे की पर्चियां, पेन, गत्ता व 2800 रूपये की नगदी बरामद की है। पकड़े गए सटोरिये के खिलाफ कार्रवाई कर न्यायालय में पेश करने की तैयारी कर रही है।

तेज तर्रार व्यापारियों को जोड़ा जाएगाः गुप्ता

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। प्रांतीय नगर उद्योग व्यापार मंडल के प्रदेश प्रभारी वीरेंद्र गुप्ता ने कहा कि संगठन व्यापारी और जनहित से जुड़ी समस्याओं के संघर्ष में हमेशा व्यापारियों के साथ खड़ा नजर आता है और आगे भी खड़ा रहेगा। संगठन ने प्रदेश स्तर पर सभी जिला और नगर की इकाइयों की मजबूती के लिए पुनर्गठन का अभियान चलाया हुआ है जिसमें तेज तर्रार व्यापारियों को प्रतिनिधित्व के लिए संगठन से सीधे जोड़ा जाएगा और उनको उचित स्थान दिया जाएगा। उन्होंने बताया कि आज से 40 वर्ष पूर्व व्यापारी उत्पीड़न के चलते जिन व्यापारी नेताओं ने व्यापारियों को एकजुट कर व्यापार मंडल का गठन करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी, उन सभी का मार्गदर्शन प्रांतीय नगर उद्योग व्यापार मंडल को मिलना बड़े सौभाग्य का विषय है। संगठन के प्रमुख उद्देश्य व्यापारी हितों के साथ-साथ गैर राजनीतिक जनहित के मुद्दों की लड़ाई में भागीदारी करना, देवभूमि की संस्कृति का प्रचार प्रसार करना और पर्वतीय क्षेत्रों के सर्वांगीण विकास की आवाज को उठाना है। इसलिए संगठन में दूरदराज के लोगों को प्रतिनिधित्व दिया जाएगा, तभी संगठन के गठन का वास्तविक लक्ष्य पूरा होगा।

50 ओवर में जड़े 285 रन, विहान का शतक

जीएनजी और डीके स्पोर्ट्स ने जीते अपने-अपने मुकाबले

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। जिला नैनीताल क्रिकेट एसोसिएशन के तत्वाधान में कराई जा रही अंडर-14 जिला क्रिकेट लीग का पहला उद्घाटन मुकाबला कोल्ट्स क्रिकेट ग्राउंड में जीएनजी और एकलव्य क्रिकेट अकादमी के मध्य खेला गया। एकलव्य क्रिकेट अकादमी ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। जीएनजी क्रिकेट अकादमी ने पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 50 ओवरों में 7 विकेट के नुकसान पर 285 रन बनाये। विहान बवारी ने 121, ईशान जोशी ने 39, बृजमोहन सिंह ने 32 और कृष्णम पाण्डे ने 30 रनों का योगदान दिया। एकलव्य क्रिकेट अकादमी के गेंदबाज देवांश ने 4, दीपांशु और गजेंद्र ने 1-1 विकेट लिया।

लक्ष्य का पीछा करने उतरी एकलव्य क्रिकेट अकादमी की पूरी टीम 29वें ओवर में 121 रन बनाकर आल आउट हो गई, और 164 रनों से मैच हार गई। जीएनजी क्रिकेट के बल्लेबाज विहान बवारी के शानदार शतक बनाने में उन्हें मैन ऑफ-द मैच का पुरस्कार दिया गया। दूसरा मैच जीएनजी क्रिकेट ग्राउंड में डीके स्पोर्ट्स अकादमी और काठगोदाम स्पोर्ट्स अकादमी के बीच हुआ। काठगोदाम स्पोर्ट्स अकादमी ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 50 ओवरों में 7 विकेट के नुकसान पर 138 रन बनाये। लक्ष्य का पीछा करने उतरी डीके स्पोर्ट्स अकादमी ने 25वें ओवर में ही एक विकेट के नुकसान पर 139 रन बनाकर 9 विकेट से मैच जीत लिया। मैन ऑफ-द मैच का पुरस्कार देवांग नेगी के नाम रहा। अंपायर की भूमिका में गौरव नेगी, सौम्य, भूपेश और कुशाग्र रहे जबकि स्कोरर की भूमिका हरप्रीत सिंह कम्बोज और निकित ने निभाई। इससे पूर्व प्रतियोगिता का शुभारंभ जिला नैनीताल कांग्रेस के जिलाध्यक्ष राहुल छिमवाल ने दोनों ही टीमों से परिचय प्राप्त कर किया। इस मौके पर जिला नैनीताल क्रिकेट एसोसिएशन के कोषाध्यक्ष कमल पपने, आनंद बिष्ट, किशन अनेरिया, निश्चल जोशी, मनोज भट्ट, नरेंद्र अधिकारी, त्रिलोक जीना, पंकज गुरुरानी, योगेश चौहान, संजय चौधरी, विक्रम बोरा, धर्मेंद्र पाल, प्रशांत भंडारी, विजय आर्या, मनोज पंत मौजूद रहे।

महिला पर्यटक ने पुलिस से की अभद्रता

नैनीताल। तल्लीताल में पुलिस ने नैनी झील किनारे पार्क वाहन पर जैमर लगाया तो महिला पुलिस से भिड़ गई। पुलिस ने चालान के बाद महिला महिला को सख्त हिदायत देते हुए छोड़ दिया। जानकारी के अनुसार यूपी से घूमने आए पर्यटक तल्लीताल झील किनारे वाहन यूपी 14 ईएच 6070 पार्क कर घूमने के लिए चले गए। इस दौरान पुलिस ने कार में जैमर लगा दिया। कुछ देर बाद वापस आए पर्यटकों ने कार में जैमर लगा देखा तो वह पुलिस चौकी पहुंच गई। इस दौरान महिला पर्यटक ने पुलिस चौकी पर जैमर हटाने को कहा। इस दौरान जब पुलिस ने चलानी कार्रवाई की बात कही तो वह आगबबूला हो गई। पुलिस से अभद्रता पर उतर आई। पुलिस ने वाहन सीज करने की बात कही तो महिला शांत हुई। एसआई श्याम बोरा ने बताया कि लखनऊ निवासी राज.कुमार के खिलाफ एमवी एक्ट में चालानी कार्रवाई की गई।

'पंचरत्न' में संस्कृत विद्यालय के छात्रों का शानदार प्रदर्शन

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। उत्तराखंड संस्कृत अकादमी द्वारा आयोजित जिला स्तरीय संस्कृत प्रतियोगिता में श्रीमहादेव गिरि संस्कृत विद्यालय ने कनिष्ठ वर्ग में शानदार प्रदर्शन करते हुए जिला में प्रथम स्थान प्राप्त किया। छात्रों ने पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से पंचरत्न नाटक का मंचन किया। विद्यालय के इस अद्वितीय प्रदर्शन के लिए जिला मुख्य शिक्षाधिकारी और जिला सहायक निद.ेशक संस्कृत ने विद्यालय परिवार और छात्रों को बधाई दी। विद्यालय के प्रधानाचार्य डा. कृष्ण चंद्र जोशी और प्रबंध समिति ने छात्रों की सफलता पर खुशी व्यक्त की और उनका उत्साहवर्धन किया। प्रतियोगिता में विद्यालय का नेतृत्व कर रहे शिक्षक डा. कैलाश चंद्र सनवाल ने बताया कि राज्य स्तरीय प्रतियोगिता 3 और 4 दिसम्बर को हरिद्वार में आयोजित की जाएगी। इस मौके पर डा. नवीन चंद्र जोशी, डा. राकेश चंद्र, डा. राजेश कुमार जोशी, डा. चंद्र बल्लभ बेलवाल, कंचन डालाकोटी, राकेश पंत, आचार्य महेश जोशी, दिनेश चंद्र तिवारी सहित कई शिक्षाविदों ने छात्रों को शुभकामनाएं दीं।

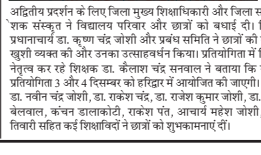

शाह टाइम्स

स्वामी शाह पब्लिकेशन प्रा. लि. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक **एस.एन. राना** द्वारा शाह पब्लिकेशन प्रा. लि. सुजडू चुंगी, मेरठ रोड, मुजफ्फरनगर से मुद्रित एवं कृष्णा लोहा भण्डार, प्रथम तल काला ढुंगी रोड, हल्द्वानी (उत्तराखंड) से प्रकाशित।

सम्पादकः
एस.एन. राना
*कार्यकारी सम्पादक
आनन्द बत्रा 'सुमन'
☎05946-250286
मुख्यालयः
मोबाइल-9720007290
R.N.I. No. UTTHIN/2003/10264
www.shahtimesnews.com
email:shahtimes2015@gmail.com

*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु PRB एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद मुजफ्फरनगर न्यायालय के अधीन ही होंगे।

उत्तराखण्ड में न सिर्फ धार्मिक, बल्कि आधुनिक बुनियाद के ढांचे भी हो रहे मजबूत: पासी

■ जिला कार्यालय में प्रेस वार्ता कर भाजपा के विकास बताई योजनाएं

शाह टाइम्स संवाददाता

रुद्रपुर। पूर्व सांसद बलराज पासी ने कहा कि देवभूमि उत्तराखण्ड में केंद्र और राज्य सरकार मिलकर विकास को नई ऊंचाइयों पर ले जा रही है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी नेतृत्व में आज उत्तराखण्ड न सिर्फ धार्मिक पर्यटन में अग्रणी बन रहा है, बल्कि आधुनिक बुनियादी ढांचे, स्वास्थ्य, शिक्षा, यातायात और रोजगार के क्षेत्र में तेजी से आगे बढ़ रहा है। केन्द्र सरकार की दो लाख करोड़ रुपये से अधिक की योजनाओं पर आज राज्य में कार्य चल रहे हैं।

श्री पासी ने भाजपा जिला कार्यालय में आयोजित प्रेस वार्ता कहा कि बाबा केदार की नगरी श्री केदारनाथ का पुनर्निर्माण कार्य आधुनिक तकनीक और पारम्परिक स्वरूप दोनों को ध्यान में रखकर किया गया है। बद्रीनाथ में मास्टर प्लान के तहत सड़क, पार्किंग, आवासीय सुविधाओं और तीर्थ यात्रियों के लिए सभी सुविधाओं को सुदृढ़ किया जा रहा है। सुव्यवस्थित यात्र मार्गों का व्यापक कायाकल्प हो रहा है जिससे यात्र अब भी सुरक्षित, सुगम और पर्यावरणीय रूप से भी टिकाऊ बने। केदारनाथ और हेमकुंड साहिब के लिए रोपवे परियोजना से श्रद्धालुओं की यात्र में समय की बचत होगी और धामों तक पहुंच और सुगम होगी। यह परियोजना एक विश्वस्तरीय पर्यटन ढांचे का उदाहरण बनते जा रही है। ऋषिकेश कर्णप्रयाग रेल लाइन परियोजना पर उन्होंने कहा कि यह परियोजना उत्तराखण्ड की लाइफलाइन बन रही है। इससे न केवल पर्यटन और व्यापार को प्रोत्साहन मिलेगा बल्कि आपदा के समय राहत कार्यों में भी गति आएगी।

पर्यटकों, व्यापार और निवेश के नए अवसर खुलेंगे। सोंग व जमरानी बांध परियोजनाएं उत्तराखण्ड के जल संकट के दीर्घकालिक समाधान का माध्यम हैं। जल जीवन मिशन हर घर जल योजना पर बोलते हुए पासी ने कहा कि हर घर तक शुद्ध पेयजल पहुंचाने का लक्ष्य तेजी से पूरा हो रहा है। अब हजारों पहाड़ी गाँवों में नल से जल पहुँच रहा है, जिससे महिलाओं का समय बचा है और जीवन स्तर बेहतर हुआ है।

पूर्व सांसद पासी ने कहा कि एक वर्ष में कांग्रेस जितना लाभ खनन से राज्य को नहीं दिला पायी, उतनी उनसे अधिकतम धामी सरकार पुरस्कार के रूप में अर्जित कर रही है। पासी ने कहा कि मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी की पारदर्शी नीति, उत्कृष्ट प्रदर्शन और 'लगातार सुधार' ने केंद्र को एक बार फिर राज्य सरकार के समर्थन में प्रोत्साहन राशि प्रदान करने में सक्षम बनाया है। खनन विभाग के बेहतर प्रबंधन तथा नई नीतियों ने न केवल स्थानीय खदानों में बचत सुनिश्चित की है, बल्कि प्रदेश में खनन कार्यों से लाखों लोगों को रोजगार मिल रहा है। उन्होंने कहा कि बढ़ते हुए उद्योगों को भी आर्थिक लाभ मिल रहा है। उन्होंने कहा कि खनन विभाग की नई योजनाएँ किसानों की आजीविका में भी वृद्धि हैं और स्थानीय अर्थव्यवस्था को गति मिल रही है। इस उपलब्धि के साथ यह स्पष्ट है कि उत्तराखण्ड का खनन क्षेत्र राज्य सरकार के लिए 'राजस्व का प्रमुख स्रोत' सिद्ध हो रहा है। पूर्व सांसद पासी ने कहा कि भाजपा सरकार से पहले कुमांऊ की जमरानी बांध परियोजना मजाक का पर्याय बनकर रह गयी थी, उन्होंने स्वयं भी कई बार इस मुद्दे को उठाया था, आज भाजपा सरकार में यह ऐतिहासिक परियोजना साकार रूप ले रही है। इस परियोजना से बड़ी आबादी के लिए पेयजल का संकट दूर होगा।

उत्तराखण्ड में आज स्वास्थ्य के साथ, परिवहन, हवाई सेवाओं का विस्तार हुआ है। सरकार शिक्षा रोजगार हर क्षेत्र में बेहतर काम कर रही है। चिकित्सा के क्षेत्र में आयुष्मान कार्ड का लाभ आज लाखों परिवारों को मिल रहा है। प्रेस वार्ता में जिलाध्यक्ष कमल जिंदल, मीडिया संयोजक विजय तोमर, जिला उपाध्यक्ष हिमांशु शुक्ला, जिला कोषाध्यक्ष रोशन अरोरा, कार्यालय मंत्री एवं कार्यकर्त्ता मौजूद रहे।

पुलिस ने 56 पाउच कच्ची शराब के साथ तस्कर दबोचा

शाह टाइम्स संवाददाता

नानकमत्ता। चेकिंग के दौरान चौकीघ् पुलिस ने अवैध शराब के साथ तस्कर को गिरफ्तार किया है।

मंगलवार को पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार थाना अध्यक्ष उमेश कुमार के नेतृत्व में नशे के विरुद्ध चला जा रहा है अभियान के तहत प्रतापपुर चौकी पुलिस ने चेकिंग के दौरान ग्राम सुंदर नगर मुख्य हाइवे से कुछ दूरी पर आनंद नगर की ओर पोल्ट्री फार्म के पास से कंधे पर बैग लादकर जा रहे व्यक्ति के पास से तलाशी के दौरान 56 पाउच कच्ची शराब के बरामद किए हैं।

पूछताछ में आरोपी ने अपना नाम बलदेव सिंह उर्फ बिल्लू पुत्र लाल सिंह निवासी ग्राम खमरिया बताया है। बरामद शराब के साथ पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर आबकारी अधिनियम की धारा 60(1) के तहत अभियोग पंजीकृत कर आरोपी को न्यायालय के समक्ष पेश किया है।

पकड़ने वाली पुलिस टीम में प्रतापपुर चौकी इंचार्ज उप निरीक्षक राजेंद्र पंत, सिपाही नीरज नेगी राज. कुंवर सिंह शामिल हैं।

एक नजर

स्मार्ट मीटर को लेकर विद्युत विभाग ने लगाया शिविर

शाह टाइम्स संवाददाता

जसपुर। पूरे उत्तराखंड प्रदेश में विद्युत विभाग द्वारा लगाए जा रहे स्मार्ट विद्युत मीटरों के नाम पर फलाई जा रही भ्रांतियों के समाधान एवं निराकरण को लेकर विद्युत विभाग द्वारा उपभोक्ता जागरूकता कैंप का आयोजन किया जा गया है।

सुनीं जनता की समस्याएं, कई का किया समाधान

इसी क्रम में आज बुधवार को जसपुर नगर के ठाकुरद्वारा मार्ग प्रणय वाटिका के सामने लक्ष्मी नगर कॉलोनी व साई कॉलोनी वासियों की विद्युत शिकायतों के निराकरण हेतु एसडीओ शैलेन्द्र सैनी के निर्देशन में शिविर का आयोजन किया गया। विद्युत विभाग द्वारा एक कैम्प लक्ष्मीनगर व साई कॉलोनी के निवासियों की सुविधा हेतु स्मार्ट मीटर से संबंधित समस्याओ के निराकरण करने के लिए लक्ष्मीनगर कॉलोनी में प्रात: 10 बजे से 2 बजे तक लगाया गया।

इस अवसर पर विद्युत विभाग से एसडीओ शैलेन्द्र सैनी, एई आर दिव्या पांडे, जेई मो. दानिश, स्मार्ट मीटर प्रोजेक्ट से अवनीश चौहान, अंकित, अविनाश मौर्य की उपस्थिति में उपभोक्ताओं की समस्याओं सुनकर शिविर में ही निराकरण कराया गया।

कच्ची शराब ने वृद्धा ललिता साहनी का बर्बाद कर दिया पूरा घर

■ कच्ची शराब से होने वाली मौतें करती है पूरे परिवार व समाज को प्रभावित: गाबा

शाह टाइम्स संवाददाता

रुद्रपुर। रुद्रपुर अंगेस्ट ड्रग्स की अलख भूरारानी वार्ड 32 में गूंज उठी। इस मुहिम को चला रहे समाजसेवी सुशील गाबा ने पूरी कार्यकारणी गठित कर दी। कार्यक्रम संयोजक पूर्व छात्रसंघ उपाध्यक्षा नेहा सामंत द्वारा वरिष्ठ समाजसेवी ओंकार ढिल्लों के संचालन व संजय साहनी की अध्यक्षता में वार्ड 32 मंदिर प्रांगण में हुई सभा में संजय साहनी ने बताया कि इस पूरे क्षेत्र में मुठ्ठी भर लोग अवैध शराब का गंदा धंधा कर रहें है। इसके लिए पूर्व में जनता द्वारा चंदा कर सीसीटीवी कैमरा भी लगवाया था, जिसका कोड आदि पुलिस को भी दे दिया गया था, यह कैमरा अब बंद है। यदि इस कैमरे को दोबारा संचालित करा कर इसका ऐक्सैस सीधे वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक कार्यालय में देकर वहां से सीधे सर्विलासं हो तो समस्या की जड़ों पर प्रहार होगा।

बैठक में मौजूद वृद्धा ललिता साहनी ने कहा कि कच्ची शराब में उनके पूरे घर और जीवन को बर्बाद कर दिया है। कच्ची शराब की लत की चपेट में आकर उसके तीन जवान बेटों की मौत हो गई है। आज वह और उनकी विधवा बहू दिहाड़ी करके अपना व बच्चों का पेट पाल रहे हैं। कच्ची शराब को बंद करने के आंदोलन में वो सबसे आगे खड़ी होंगी, ताकि और कोई मां का लाल दुनिया से जल्दी न जाए। रुद्रपुर अगेंस्ट ड्रग्स के अध्यक्ष सुशील गाबा ने कहा कि कच्ची शराब का सेवन आज समाज के लिए एक गंभीर संकट बन चुका है। जब युवाओं की मौत कच्ची व मिलावटी शराब के कारण होती है, तो उसका असर केवल एक व्यक्ति तक सीमित नहीं रहता, बल्कि पूरा परिवार जीवनभर का दर्द झेलने को मजबूर हो जाता है। बैठक के भीतर ही भूरारानी दुर्गा कालोनी कमेटी की नशा विरोधी टीम का गठन कर लिया गया, जिसके माध्यम से भूरारानी दुर्गा कालोनी में बैठकें एवं जनजागरण किये जाने की रणनीति पर भी विचार किया गया। इस दौरान गिरधर कुमार, राजू, गुरूदेव, लालू, संजीत, शंकर साहनी, रंजीत, अनमोल पासवान, अरूण, सजन साहनी, मनोहर, परविंदर सिंह, राजू, तरूण, मुलख राज, चन्देसर, अंजलि, नन्दिनी, सीता देवी, बिटहू देवी, ईमरती देवी, सतिया देवी, ललिता, कशिश कुमार, दर्पण, रेखा देवी, निशा देवी, राजेश साहनी, करन सिंह, हर्षिता, प्रीति समेत बड़ी संख्या में मातृशक्ति एवं युवा शक्ति उपस्थित रहे।

किशोरावस्था जागरूकता एवं स्वास्थ्य कार्यशाला का आयोजन

शाह टाइम्स संवाददाता

रुद्रपुर। भानु प्रताप पब्लिक स्कूल ने बालिकाओं के लिए किशोरावस्था जागरूकता एवं स्वास्थ्य कार्यशाला का सफल आयोजन किया, जिसका उद्देश्य उनकी शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक स्वास्थ्य संबंधी जानकारी प्रदान करना था। आयोजित इस कार्यक्रम को विद्यार्थियों और शिक्षकों द्वारा अत्यंत सराहना मिली, जिससे यह विद्यालय की उल्लेखनीय और सार्थक पहलों में से एक बन गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ देवी सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलन समारोह के साथ हुआ, जिसने वातावरण को ज्ञान, पवित्रता एवं सकारात्मकता से भर दिया। इसके पश्चात प्रधानाचार्य ने मुख्य वक्ता, अध्यापकों तथा छात्राओं का हार्दिक स्वागत करते हुए कहा कि किशोरावस्था जीवन का संवेदनशील चरण है, ऐसे में बालिकाओं को सही मार्गदर्शन एवं आवश्यक जागरूकता प्रदान करना विद्यालय का महत्वपूर्ण दायित्व है। कार्यशाला में आमंत्रित विशेषज्ञ परामर्शदाता ने किशोरावस्था से संबंधित विभिन्न पहलुओं को सरल, वैज्ञानिक तथा संवादात्मक शैली में प्रस्तुत किया। छात्राओं ने इस दौरान शरीर में होने वाले प्राकृतिक परिवर्तन, व्यक्तिगत स्वच्छता के महत्व तथा सकारात्मक सोच बनाए रखने की आवश्यकता के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त की।

कार्यशाला की विशेषता यह रही कि इसमें किशोरावस्था से जुड़ी भ्रांतियों और सामाजिक मिथकों को दूर करने पर विशेष बल दिया गया। वक्ता ने छात्राओं को नि:संकोच प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित किया, तथा यह विश्वास दिलाया कि सही जानकारी प्राप्त करना स्वस्थ और सुरक्षित जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक है। व्यवहारिक उदाहरणों एवं सरल व्याख्या ने छात्राओं को विषयवस्तु को और बेहतर रूप से समझने में सहायता की।

कार्यक्रम के अंत में छात्राओं ने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि यह कार्यशाला ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायी और अत्यंत उपयोगी रही। इससे उनमें अपने शारीरिक तथा भावनात्मक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता और आत्मविश्वास दोनों बढ़ा।

विद्यालय प्रबन्धन एवं शिक्षकवृंद के सहयोग से यह कार्यक्रम अत्यंत सुव्यवस्थित एवं सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

दो दिवसीय अंतर महाविद्यालय फुटबाल प्रतियोगिता आज से शुरू

शाह टाइम्स संवाददाता

रुद्रपुर। सरदार भगत सिंह राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रुद्रपुर में कुमाऊं विश्वविद्यालय अंतर महाविद्यालय फुटबॉल पुरुष वर्ग प्रतियोगिता 26 और 27 नवंबर को होगी। प्रतियोगिता का शुभारंभ दोनों दिनों सुबह 10 बजे महाविद्यालय के मुख्य खेल मैदान में होगा। विवि से संबद्ध लगभग 10 महाविद्यालय इस दो-दिवसीय प्रतियोगिता में प्रतिभाग कर रहे हैं। आयोजकों के अनुसार प्रतियोगिता की सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं और खिलाड़ियों में खासा उत्साह देखने को मिल रहा है। आयोजकों ने प्रतियोगिता के लिए सभी खेलप्रेमियों एवं आमजन को सादर आमंत्रण दिया है।

गुरु तेग बहादुर के शहीदी दिवस पर पर हुआ कीर्तन

शाह टाइम्स संवाददाता

खटीमा। सिक्ख पंथ के नौवे गुरु तेग बहादुर का 350 वां शहीदी दिवस गुरुद्वारा सिंह सभा में हर्षोल्लास से मनाया गया। इस अवसर पर संगत द्वारा भजन कीर्तन का भव्य आयोजन किया गया। गुरुद्वारा ग्रंथि द्वारा गुरु तेग बहादुर द्वारा मानव कल्याण हेतु किए गए कार्यों का उल्लेख किया गया। वक्ताओं ने गुरु महिमा का बखान करते हुए उनके दर्शाये सत मार्ग अपनाने का आह्वाहन किया। कार्यक्रम के दूसरे प्रात: से ही चाय एवं चने का लंगर चलाया गया। गुरु प्रसाद पाकर आम संगत निहाल हुई। कार्यक्रम में गुरु नानक सत्संग सभा के प्रधान हरभजन सिंह खिंडा, कोषाध्यक्ष एडवोकेट रमनदीप सिंह शेट्टी, जगजीत सिंह मल्ली उपाध्यक्ष, अनिल बत्रा, जगजीत सिंह रैना, ज्ञानी हरदेव सिंह, पपिंदर सिंह खिंडा, सुखविंदर सिंह, रघुवीर सिंह, अमरजीत सिंह, जगजीत सिंह लाटू, गुरमीत सिंह गांधी, सुखदेव सिंह, गुरजीत सिंह, हरजीत सिंह, आनन्द आदि मौजूद थे।

जल जीवन मिशन के तहत खोदे गए गड्ढों से हुई मार्ग की दुर्दशा

शाह टाइम्स संवाददाता

खटीमा। नगर सीमा के अंतर्गत जल जीवन मिशन के तहत खोदी गई सड़क की मरम्मत नहीं होने से खफा वार्ड मेंबर जीशान अहमद ओवेशी ने पालिका अध्यक्ष रमेश चंद्र जोशी को ज्ञापन सौंपा है।

ज्ञापन में सभासद जिशान ने वार्ड संख्या 10 के साथ ही नगर के अन्य वार्डो का भी हवाला देते हुए खोदे गए मार्गों के ठीक कराने की मांग की। जीशान ओवैसी ने कहा कि भूमिगत लाइन बिछाने के लिए खोदे गए मार्गो को कई वर्ष हो चुके हैं। हर बार जल जीवन मिशन के कार्य में जुटे अधिकारी शीघ्र कार्रवाई का आश्वासन देते हैं, लेकिन स्थिति जस की तस बनी हुई है। खोदे गए मार्गों की मरम्मत नहीं होने से मार्ग चलने वालों को बड़ी असुविधा का सामना करना पड़ता है। ज्ञापन में कई वार्ड वासियों के हस्ताक्षर हैं। पालिकाध्यक्ष जोशी ने इस संबंध में संबंधित विभाग के अधिकारी को तलब कर उचित कार्यवाही का भरोसा दिलाया है।

आम जनता हलकान, पालिकाध्यक्ष रमेश जोशी को सौंपा ज्ञापन

पुलिस ने बरामद किए खोए हुए 70 मोबाइल

शाह टाइम्स संवाददाता

रुद्रपुर। सीओ प्रशांत कुमार ने आज कोतवाली परिसर में आयोजित एक कार्यक्रम में रूद्रपुर कोतवाली क्षेत्र में लोगों के खोये 70 मोबाईल बरामद करने के बाद उन्हें स्वामियों को लौटाकर उनके चहरें पर खुशियां बिखेर दी।

उन्होंने बताया कि क्षेत्र में अनेक लोगों ने अपने मोबाईल खोने की सूचना पुलिस को दी है। जिनमें से पुलिस द्वारा 70 मोबाईलों को अथक प्रयासों से बरामद किये गये। जिन्हें आज उनके स्वामियों को सौपे गये।

खोये मोबाईल फिर से वापस अपने पास देखकर लोगों के चहरों पर खुशी छा गई और उन्होंने पुलिस का धन्यवाद किया। इस मौके पर कोतवाल मनोज रतूड़ी ने कहा कि लोगों को अपने मोबाईल खोने अथवा छीन लिये जाने की सूचना आवश्यक प्रपत्रें के साथ तत्काल पुलिस को देनी चाहिए ताकि पुलिस उन्हें बरामद कर सके। उन्होंने बताया कि 70 खोये मोबाईल बरामद कर उनके स्वामियों को सौंपे गये है। जिनकी कीमत लगभग 10 लाख रुपये है।

सड़क दुर्घटनाओं में दो युवकों की मौत, दो घायल

शाह टाइम्स संवाददाता

खटीमा। खटीमा क्षेत्र में सोमवार और मंगलवार को दो सड़क दुर्घटनाओं में छात्र समेत दो लोगों की मौत हो गई, जबकि दो किशोर घायल हो गए। पुलिस ने पोस्टमार्टम कर शव परिजनों को सौंप दिए हैं।

सोमवार शाम गभिया सहराई तहसील पूरनपुर जिला पीलीभीत यूपी निवासी 32 वर्षीय प्रमोद ठाकुर पुत्र नथुनी ठाकुर श्रीपुर बिचुवा स्थित अपनी टेलरिंग की दुकान बंद कर बाइक से घर लौट रहा था। मेलाघाट रोड स्थित बंगाली कॉलोनी के पास बागनाथ मंदिर के समीप उनकी बाइक सड़क पर बैठे लावारिस पशु से टकरा गई। हादसे में गंभीर रूप से घायल प्रमोद को 108 एंबुलेंस से उप जिला चिकित्सालय ले जाया गया, जहां चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। प्रभारी निरीक्षक देवेंद्र गौरव ने बताया कि मंगलवार को पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों के सुपुर्द कर दिया गया है।

वहीं मंगलवार सुबह लोहियाहेड निवासी 15 वर्षीय प्रियांशु शर्मा पुत्र राजू शर्मा अपने दो साथियों 14 वर्षीय मनार पुत्र अशोक शर्मा और 12 वर्षीय विवेक पुत्र स्व. विनोद को बाइक पर बैठाकर लोहियाहेड रोड स्थित एक फैक्ट्री में कार्यरत अपने पिता को खाना देने जा रहा था। इसी दौरान लोहियाहेड से कुछ दूरी पर बाइक अनियंत्रित होकर सड़क किनारे बिजली पोल से टकरा गई।

तीनों किशोर गंभीर रूप से घायल हो गए। स्थानीय लोगों ने घायलों को उप जिला चिकित्सालय पहुंचाया, जहां चिकित्सकों ने प्रियांशु को मृत घोषित कर दिया। घायल मनार और विवेक का उपचार कर उनकी हालत सामान्य होने पर छुट्टी दे दी गई। मृतक प्रियांशु दो भाई-बहनों में सबसे छोटा था और स्कॉलर गुरुकुल स्कूल में पढ़ता था। प्रभारी निरीक्षक देवेंद्र गौरव ने बताया कि कानूनी कार्रवाई पूरी कर शव परिजनों को सौंप दिया गया है।

भाजपा कार्यकर्ताओं ने निकाली 'एकता पदयात्रा'

शाह टाइम्स संवाददाता

रुद्रपुर। लौह पुरुष भारत रत्न सरदार वल्लभ भाई भाई पटेल की 150वीं जन्म जयंती के अवसर पर रुद्रपुर ट्रांजिट कैम्प में फुटबाल मैदान से विधायक शिव अरोरा के नेतृत्व ने भाजपा कार्यकर्ताओं ने एकता पदयात्रा का आयोजन हुआ, जिसमे बड़ी संख्या ने लोगों ने प्रतिभाग किया। हाथों में तिरंगा लहराते हुए पैदल ट्रांजिट कैम्प बाजार होते हुए सरदार वल्लभभाई पटेल के नारे लगाते पैदल यात्रा के माध्यम से निकले तो वहीं यात्रा का समापन झील पर हुआ।

इस दौरान विधायक शिव अरोरा ने कहा देश के प्रथम गृहमंत्री देश को एकता के सूत्र में पिरोने वाले सरदार वल्लभभाई पटेल की 150 वीं जन्म जयंती पर के अवसर पर एकता पदयात्रा का आयोजन हुआ जिसमे सैकड़ों की संख्या में नौजवान महिला सड़कों पर पैदल तिरंगा हाथ में लिए कैम्प क्षेत्र से निकले। विधायक बोले राष्ट्र नेतृत्व में प्रदेश नेतृत्व के निर्देशानुसार एकता पदयात्रा का आयोजन किया गया जो पूरे देश में इसी प्रकार निकाली जा रही है। सरदार वल्लभभाई पटेल का देश के प्रति अतुल्य योगदान व उनकी राष्ट्र सेवा जो करोड़ों भारतीयों के लिए प्रेरणा का कार्य करती है, उनकी देश सेवा को कभी भुलाया नहीं जा सकता। इस दौरान भाजपा जिला जिला अध्यक्ष कमल जिंदल, दर्जा मंत्री उत्तम दत्ता, पूर्व जिला महामंत्री भारतभूषण चुघ, प्रति ग्रोवर राजकुमार साह, भाजपा जिला महामंत्री तरुण दत्ता, वेद ठुकराल, मंडल अध्यक्ष धीरेश गुप्ता, मुकेश पाल, पार्षद पवन राणा, एमपी मौर्य, राजेंद्र राठौर, मुकेश रस्तोगी, निमित्त शर्मा, शिव कुमार गंगवार, जिला मंत्री प्रमोद मित्तल, रोशन अरोरा, अनमोल विर्क, डी के गंगवार, विजय तोमर, बिट्टू चौहान, प्रदीप राठौर, रामाधारी गंगवार, सतनाम सिंह, महेंद्र आर्य, शंकर विश्वास, विजय डे, जीतेन्द्र संधू, सुनील यादव, मनोज मदान, विकास सागर, डंपी चोपड़ा, गीता शर्मा, आशा मुंजाल, चंद्रपाल, राधेश शर्मा, मयंक कक्कड़, नरेश प्रजापति, गुन्नू चौधरी, रश्मि रस्तोगी सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

छोई रामनगर के मांस प्रकरण का मुख्य आरोपी मदन जोशी गिरफ्तार

शाह टाइम्स संवाददाता

रामनगर। कोतवाली पुलिस ने रामनगर में बीते 23 अक्टूबर को मांस प्रकरण के मुख्य आरोपी मदन मोहन जोशी को मंगलवार सुबह गिरफ्तार कर लिया है।

कोतवाल सुशील कुमार ने बताया कि रामनगर के ग्राम छोई क्षेत्र में बीते 23 अक्टूबर को मांस प्रकरण के मुख्य आरोपी मदन मोहन जोशी को गिरफ्तार कर लिया।उन्होंने बताया कि आरोपी मदन जोशी ने भीड़ को उत्तेजित कर एक घिनौनी घटना को अंजाम दिया था।एक डी फ्रिजर पिकप मे वैध कागजात में लाए जा रहे पशु मांस को गाय का मांस की अफवाह उढाकर भीड़ को गुमराह व उत्तेजित कर दिया गया भीड़ द्वारा उक्त वाहन के चालक नासिर को पीट पीट कर अधमरा कर जानलेवा हमला किया गया और वाहन को क्षतिग्रस्त किया गया। डायल 112 की सूचना पर रामनगर पुलिस तत्काल मौके पर पहुँची और चालक को उत्तेजित भीड़ से छुड़ाकर घायल का सरकारी अस्पताल में उपचार कराया गया और वाहन को अपने संरक्षण मे थाने लाया गया। मीट की जांच पशु चिकित्सक से करायी गई चिकित्सक द्वारा अपनी जांच मे उक्त पिकप मे भरे पशु मांस को भैंस का मांस होना बताया। पुलिस ने नासिर की पत्नी नूरजहां की तहरीर पर कई आरोपियों के खिलाफ जानलेवा हमले का मुकदमा दर्ज किया गया। उच्च न्यायालय नैनीताल द्वारा उक्त घटना का संज्ञान लेने पर वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक द्वारा एसआईटी का गठन किया गया।घटना की जांच की गई। कुछ लोगों द्वारा उक्त घटना का सोशल मीडिया मे लाइव प्रसारण भी किया गया। पांच नामजद व 11 आरोपी प्रकाश मे आए। जिनमे से 14 आरोपियों को रामनगर पुलिस द्वारा गिरफ्तार किया गया और दो आरोपियों द्वारा कोर्ट में आत्मसमर्पण किया गया। मुख्य आरोपी मदन मोहन जोशी द्वारा भीड़ एकत्रित कर भीड़ को गुमराह व उत्तेजित कर उक्त मोबलीचिंग जैसी घिनौनी घटना को अंजाम दिया गया।घटना के सम्बन्ध में उच्च न्यायालय नैनीताल मे विभिन्न पीआईएल दाखिल हुई।

उच्च न्यायालय के निकट पर्यवेक्षण व निर्देशन प्रचलित रहा। रामनगर पुलिस द्वारा मुख्य आरोपी मदन मोहन जोशी के विरूद्ध कोर्ट से गैर जमानतीय वारण्ट लिया गया। फरार होने के बाद धारा 84 बीएनएस की कार्यवाही के उपरान्त धारा 85 बीएनएस (कुर्की वारण्ट) के लिए कोर्ट में प्रार्थना पत्र दाखिल किया गया। मुख्य आरोपी मदन मोहन जोशी द्वारा एक सोची समझी साजिश के तहत भीड़ को गुमराह कर मोबलींचिग जैसी घिनौनी घटना को अंजाम देकर चालक पर जानलेवा हमला कर अधमरा किया गया, जिसका मुख्य आरोपी द्वारा लाइव प्रचार प्रसार सोशल मीडिया के माध्यम से कर लोगो की भावना को उत्तेजित किया गया।

उच्च न्यायालय नैनीताल द्वारा मुख्य आरोपी के रिट पिटीशन व अग्रिम जमानत प्रार्थना पत्र को खारिज किया गया।मुख्य आरोपी मदन मोहन जोशी द्वारा इस मुकदमे मे कही से भी राहत न मिलने के कारण मंगलवार सुबह थाना रामनगर पुलिस के समक्ष आत्मसमर्पण किया गया, जिसे पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर कोर्ट के समक्ष पेश किया गया।कोर्ट ने आरोपी को जेल भेज दिया गया है। उच्च न्यायालय नैनीताल द्वारा उक्त घटना व विवेचना का सीधा व सख्त पर्यवेक्षण किया जा रहा है।भविष्य में कोर्ट की अनुमति से पूछताछ व तकनीकी साक्ष्य संकलन किया जाएगा।

भाजपा नेता और आईटी सेल के खिलाफ कांग्रेस ने दी तहरीर

शाह टाइम्स संवाददाता

रुद्रपुर। कांग्रेस पदाधिकारियों ने मंगलवार को भाजपा नेता शेखर वर्मा और भाजपा उत्तराखंड आईटी सेल के खिलाफ फेक न्यूज फैलाने के आरोप में कोतवाल मनोज रतूड़ी को तहरीर सौंपी। दोनों के खिलाफ आपराधिक मुकदमा दर्ज करने की मांग की।

महानगर अध्यक्ष ममता रानी के नेतृत्व में कांग्रेस नेता कोतवाली पहुंचे। ममता ने बताया कि 21 नवंबर को देहरादून स्थित वन विभाग मुख्यालय राजपुर रोड पर कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष गणेश गोदियाल के नेतृत्व में वन्यजीवख्रमानव संघर्ष से हो रही जनहानि के विरोध में शांतिपूर्ण धरना-प्रदर्शन किया गया था। इस दौरान गोदियाल ने सांकेतिक रूप से प्लास्टिक की खिलौना गन का उपयोग कर सरकार का ध्यान समस्या की ओर आकर्षित किया था।

आरोप है कि इस प्रतीकात्मक प्रदर्शन को भाजपा आईटी सेल और उसके पूर्व अध्यक्ष शेखर वर्मा ने सोशल मीडिया पर विकृत रूप में प्रस्तुत किया।

कांग्रेस के अनुसार, दोनों ने फेक न्यूज फैलाते हुए गणेश गोदियाल को आतंकी संगठनों से जोड़ने का प्रयास किया, जिससे उनकी छवि धूमिल हुई और लोकतांत्रिक मूल्यों को ठेस पहुंची। पार्टी ने इसे मानहानि और आईटी अधिनियम के प्रावधानों का उल्लंघन बताया है।

इस दौरान पूर्व महानगर अध्यक्ष सीपी शर्मा, मीना शर्मा, चिराग कालरा, मोहन कुमार, संजीव रस्तोगी, उमा सरकार, सरोज रानी आदि मौजूद रहे।

रेलवे ट्रैक पार करते समय वृद्ध की ट्रेन से कटकर मौत

टनकपुर एक्सप्रेस से कटकर वृद्ध की मौत शव पोस्टमार्टम को भेजा

शाह टाइम्स संवाददाता

खटीमा। पचपेड़ा रेलवे ट्रैक को क्रॉस करने के दौरान वृद्ध की ट्रेन से कटकर मौत हो गई। हादसा इतना भयानक हुआ कि वृद्ध का शरीर क्षतविक्षित हो गया। घटना के दौरान ट्रेन काफी समय घटनास्थल रुकी रही। विभागीय कार्रवाई पूरी करने के बाद ट्रेन अपने गंतव्य में को रवाना हो गई।

मंगलवार की सुबह समय 9 बजे पचपेड़ा रेलवे क्रॉसिंग संख्या 20 सी के पास एक बड़ा हादसा हुआ। रेलवे ट्रैक पार करते समय ट्रेन से कटकर पचपेड़ा निवासी बिहारी लाल पुत्र बलदेव प्रसाद 80 वर्ष की मौत हो गई। हादसे के दौरान टनकपुर राजस्थान एक्सप्रेस गाड़ी संख्या 15091 अपने निर्धारित समय पर पीलीभीत की ओर से आ रही थी। जैसे ही ट्रेन पचपेड़ा क्रॉसिंग रेलवे क्रॉसिंग के पास पहुंची उसी दौरान 80 वर्षीय बिहारी लाल ट्रेन की चपेट में आ गया, जिससे उसकी मौत हो गई। घटना के बाद ट्रेन काफी समय रुकी रही। रेलवे पुलिस आरपीएफ व रेलवे के अधिकारियों ने विभागीय कार्रवाई करने के बाद शव स्थानीय पुलिस के सुपुर्द कर दिया।

सत्रहमील पुलिस ने शव का पंचनामा भरकर शव को पोस्टमार्टम को भेज दिया। अचानक हुई घटना से मृतक के परिवार में कोहराम मच गया। मौके पर एडिशनल एसआई पूरन चंद पांडे, कांस्टेबल झींगरी राम, पीआरडी संतोष कुमार, जुगल प्रसाद आदि थे।

महिला हिंसा दिवस पर निकाली रैली

शाह टाइम्स संवाददाता

दिनेशपुर। महिला हिंसा विरोधी दिवस पूर्व चेयरमेन सीमा सरकार के नेतृत्व में 16 दिवसीय महिला हिंसा विरोधी अभियान की शुरूआत की गई।

इस दौरान महिला कल्याण संस्था अध्यक्ष हीरा जंगपांगी ने बताया कि आज से पूरी दुनिया में 16 दिवसीय अभियान की शुरुआत महिला हिंसा विरोधी दिवस के साथ हो रही है, जो हर वर्ष 25 नवंबर से 10 दिसंबर तक मनाया जाता है। महिला पुरुष बराबरी में पुरूषों की भागीदारी द्वारा एक साथ मिलकर बाल विवाह,महिला हिंसा,बालिका शिक्षा,स्वास्थ्य,कार्यस्थल पर महिला सुरक्षा व सम्मान,महिला नेतृत्व जेण्डर भेदभाव,यौन उत्पीड़न,, घरेलू हिंसा, महिला हिंसा की घटनाओं को खत्म करने के लिए लोगों के बीच जाकर,संवाद कर,उन्हें जागरूक करने का प्रयास किया जाएगा ताकि समाज में इस प्रकार की घटनाओं पर अंकुश लगाया जा सके तथा पुरूष वर्ग को महिला वर्ग के प्रति संवेदनशील कर समाज में महिला पुरूष बराबरी में पुरुषों की भागीदारी को सुनिश्चित किया जा सके।

हीरा जंगपांगी द्वारा बताया गया आज से पूरी दुनिया में 16 दिवसीय अभियान की शुरुआत महिला हिंसा विरोधी दिवस के साथ हो रही है।जो हर वर्ष 25 नवंबर से 10 दिसंबर तक मनाया जाता है।अभियान के दौरान महिला कल्याण संस्था द्वारा इस वर्ष भी महिला पुरुष बराबरी में ष्पुरूषों की भागीदारीष् द्वारा एक साथ मिलकर बाल विवाह,महिला हिंसा,बालिकाशिक्षा,स्वास्थ्य,कार्यस्थल पर महिला सुरक्षा व सम्मान, महिला नेतृत्व को लेकर 16 दिवसीय जागरूकता अभियान की शुरुआत कर रहे है। हम सब अपने अपने स्तर से मिलकर महिला हिंसा,बेटियों के हक में बाल विवाह जैसी कुरीतियों को अपने समाज से खत्म करने का संकल्प लें। कार्यक्रम में शिखा ढाली, सुनीता मिस्त्री, जमुना मंडल, राधा विश्वास, हेमा चक्रवर्ती बसंती चक्रवर्ती, प्रभा राय, रश्मि दीपाली सुनेला मिस्त्री दीपाली बैरागी पिंकी प्रिया निराला काजल शिवानी समस्त महिलाओं ने प्रतिभाग किया।

एक नजर

संविधान दिवस की निगरानी व्यवस्था को डीडीओ रमा गोस्वामी नोडल अधिकारी नियुक्त

शाह टाइम्स संवाददाता

पिथौरागढ़। जिलाधिकारी आशीष कुमार भटगांई ने अवगत कराया है कि शासन से प्राप्त निर्देशों के क्रम में जनपद में आज 26 नवम्बर बुधवार को "संविधान दिवस" के उपलक्ष्य में विभिन्न कार्यक्रमों एवं गतिविधियों का आयोजन किया जाना प्रस्तावित है।

संविधान दिवस के अवसर पर सभी कार्यक्रमों एवं गतिविधियों के सफल आयोजन हेतु रमा गोस्वामी, जिला विकास अधिकारी को नोडल अधिकारी नामित किया गया है। नोडल अधिकारी को यह सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए हैं कि सभी कार्यक्रम एवं गतिविधियाँ शासन द्वारा जारी दिशा-निर्देशों के अनुरूप आयोजित की जाएं। आयोजन की सभी व्यवस्थाएं समयबद्ध एवं प्रभावी हों।

पौधारोपण अभियान 498 वें दिन भी रहा जारी

शाह टाइम्स संवाददाता

पिथौरागढ़। राज्य आंदोलनकारी दिनेश गुरुरानी द्वारा राज्य में चलाया जा रहा अनूठा पौधारोपण अभियान 498 वें दिन भी जारी रहा।

डीडीहाट में पौधारोपण अभियान के 498 वें दिन अभियान को विवाह समारोह से जोड़ते हुए डीडीहाट के सिटोली गांव में सिटोली निवासी कृष्ण सिंह बोरा व लीला बोरा ने पुत्री गीता के परिणय सूत्र में बंधने से पूर्व पौधारोपण किया। कृष्ण सिंह बोरा ने कहा कि अब वह इस पौधे का अपने परिवार के सदस्य के रूप में संरक्षण करेंगे। उन्होंने कहा कि प्रकृति की सेवा करने का उनको सौभाग्य मिल रहा है। पौधारोपण से सभी को जुड़ना चाहिए। पौधारोपण कार्यक्रम की ग्रामीणों ने सराहना की। दिनेश गुरुरानी ने कहा कि उनका पौधारोपण अभियान जारी रहेगा। उन्होंने कहा कि आजकल प्रतिदिन वह विवाह समारोह में जाकर बर बधू से और उनके परिवार जनों से पौधारोपण अभियान के माध्यम से पौधे लगाकर प्रकृति का संरक्षण कर रहे हैं।

हर घर में उन्नत गाय, हर मन में सेवा की भावना

राय नगर चौड़ी ने गढ़ा आदर्श गांव का नया मानक

शाह टाइम्स संवाददाता

लोहाघाट। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी की परिकल्पना के अनुरूप चंपावत को मॉडल जिला बनाने का सपना जिस गांव ने वास्तविक धरातल पर उतारा है, वह है राय नगर चौड़ी। मात्र 700 की आबादी वाला यह गांव अनुशासन, एकजुटता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का ऐसा उदाहरण है जिसे आज पूरा जनपद आदर्श मानता है। इस गांव की सबसे बड़ी विशेषता सामाजिक संस्कार हैं। यहां के अधिकांश निवासियों ने जीवन में कभी पुलिस थाना देखा तक नहीं। आपसी सम्मान, सद्भाव और अनुशासन से यहां सामाजिक ताना-बाना इतनी मजबूती से बुना गया है कि विवाद जैसी चीजें यहां अपवाद मात्र हैं।

कृषि और पशुपालन में राय नगर चौड़ी अग्रणी है। गांव के प्रत्येक घर में 2ख्3 उन्नत नस्ल की दुधारू गाय बंधी होती हैं। दूध उत्पादन में यह गांव जिले में शीर्ष पर माना जाता है। साथ ही जैविक सब्जी उत्पादन में भी यहां के किसान अग्रिम पंक्ति में खड़े होते हैं। लोहाघाट नगर तथा राजकीय पीजी कॉलेज के निकट होने के कारण गांव की सब्जियों और दूध की सदैव अधिक मांग रहती है। गांव की स्वच्छता संस्कृति इसकी पहचान है। साफ-सफाई, नौलों का रखरखाव और व्यवस्थित रास्ते, ये सब यहां की पीढ़ियों ने विरासत के रूप में संभाल रखा है। राय नगर चौड़ी शत-प्रतिशत शिक्षित गांव है। उच्च शिक्षा के प्रति लोगों में निरंतर उत्साह देखा जाता है। गांव के प्रत्येक परिवार के सदस्य सरक. ारी योजनाओं एवं अल्प बचत समूहों से भी जुड़े हुए हैं। युवाओं को भटकाव से बचाने के लिए गांव में जिम, पुस्तकालय और सामुदायिक गतिविधियों की सुविधा उपलब्ध है। सामुदायिक सेवा में गांव के लोग हमेशा आगे रहते हैं। गांव के ही फार्मासिस्ट कुलदीप राय की नियमित सेवा ने गांव को अस्पताल निर्भरता से काफी हद तक मुक्त कर दिया है।

संस्कृति और कला संरक्षण में यह गांव अनूठा उदाहरण है। यहां का हर युवा और बुजुर्ग बिना किसी विशेष प्रशिक्षण के रामलीला में किसी भी पात्र की भूमिका निभाने के लिए तैयार रहता है। यहां तक कि बच्चों के रोने में भी संगीत का स्वर सुना जाता है। यह चंपावत जिले का पहला ऐसा गांव है जहां दो सिंचाई योजनाएं संचालित हैं। कृषि समृद्धि का यह बड़ा कारण है। विदेश से लौटकर जनसेवा की भावना रखने वाले प्रेम बल्लभ राय ने यहां 250-300 ग्राम वजनी डिलीशियस सेब का बगीचा तैयार किया था, जो लंबे समय तक गांव की पहचान बना रहा। गांव की सबसे अनूठी परंपरा मांगलिक कार्यों में दिखाई देती है। विवाह समारोहों का पूरा आयोजन गांव के युवा मिलकर इतनी सहजता से कर देते हैं कि कन्या पक्ष व वर पक्ष को इसका अहसास भी नहीं होता है। ग्राम पंचायत के पास टेंट सहित सभी आवश्यक संसाधन उपलब्ध हैं। किन्तु यहां एएनएम सेंटर की कमी सबको खलती रहतीं हैं। शिक्षाविद् नाथूराम राय, राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार प्राप्त नरेश राय, रंगकर्मी भैरव राय, गंगा दत्त राय, धर्मा नंद राय आदि प्रमुख लोगों का कहना है कि वे अपने को खुश नशिब मानते हैं कि अपनी भावी पीढ़ी के कदम सही दिशा व दशा की ओर बढ़ते जा रहे हैं।

कच्ची शराब के साथ एक को पकड़ा

शाह टाइम्स संवाददाता

पिथौरागढ़। पुलिस अधीक्षक रेखा यादव के निर्देशन एवं क्षेत्राधिकारी गोविन्द बल्लभ जोशी तथा केएस रावत के पर्यवेक्षण में पुलिस द्वारा अवैध मादक पदार्थों की रोकथाम हेतु निरंतर सघन जांच अभियान संचालित किया जा रहा है। इसी क्रम में प्रभारी कोतवाली अस्कोट बसंत पंत मय टीम का. गणेश तिवारी एवं कविन्द्र सिंह द्वारा सैंथिल तिराहे के पास चेकिंग के दौरान एक व्यक्ति संदिग्ध को रोका और उसकी तलाशी ली गई। तलाशी में अभियुक्त गोपाल राम, पुत्र स्व. पूरन राम, निवासी ग्राम दांतू खेड़ा, थाना-जौलजीबी, जिला पिथौरागढ़ को 10 लीटर अवैध कच्ची शराब के साथ गिरफ्तार किया गया। अभियुक्त के विरुद्ध कोतवाली अस्कोट में आबकारी अधिनियम की धारा 60 के तहत मुकदमा पंजीकृत कर आवश्यक कानूनी कार्रवाई की जा रही है।

चम्पावत को मुख्यमंत्री की बड़ी सौगात

564 लाख की दो महत्वपूर्ण सड़क परियोजनाओं को मंजूरी

शाह टाइम्स संवाददाता

चम्पावत। जनपद चम्पावत में कनेक्टिविटी को सुदृढ़ करने और ग्रामीण इलाकों में विकास की रफ्तार बढ़ाने के उद्देश्य से मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने दो अहम सड़क परियोजनाओं को प्रशासकीय एवं वित्तीय स्वीकृति प्रदान की है। इन परियोजनाओं पर कुल 563.08 लाख से अधिक की धनराशि स्वीकृत की गई है, जिससे क्षेत्रीय आवागमन और आधारभूत ढाँचे को नई मजबूती मिलने जा रही है।

लोक निर्माण विभाग के अधिशासी अभियंता एमसी पलड़िया के अनुसार, ग्राम पंचायत

पल्सो कलजाख से अमोडा तक 5 किमी लम्बे मोटर मार्ग (द्वितीय चरण-स्टेज-1) के निर्माण हेतु 169.17 लाख की स्वीकृति जारी की गई है। यह मार्ग लंबे समय से स्थानीय ग्रामीणों की प्रमुख मांग रहा है, जिसका पूरा होना क्षेत्र में शिक्षा, स्वास्थ्य और कृषि गति. विधियों को सीधा लाभ देगा। इसके साथ ही मुख्यमंत्री घोषणा संख्या 337/2024 के अंतर्गत बनबसा क्षेत्र की 6.825 किमी आंतरिक सड़कों के व्यापक सुधारीकरण के लिए 393.91 लाख की प्रशासकीय एवं वित्तीय मंजूरी प्रदान की गई है। इससे बनबसा और आस-पास के ग्रामीण इलाकों में दैनिक आवागमन सुगम होगा तथा किसानों, विद्यार्थियों और स्थानीय नागरिकों को सुरक्षित व त्वरित परिवहन सुविधा प्राप्त होगी। इन दोनों परियोजनाओं के मंजूर होने से चम्पावत जिले में न केवल ग्रामीण कनेक्टिविटी मजबूत होगी, बल्कि क्षेत्रीय विकास को नई दिशा और नई गति भी मिलेगी। सरकार का यह कदम पहाड़ी क्षेत्रों की बुनियादी आवश्यकताओं को प्राथमिकता देने की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

दमोह मध्य प्रदेश में शिक्षक उपाध्याय करेंगे उत्तराखंड का प्रतिनिधित्व

एनईपी 2020 के प्रावधानों के अनुसार बच्चों के कौशल विकास प्रशिक्षण को हुआ चयन

शाह टाइम्स संवाददाता

चंपावत। दमोह मध्य प्रदेश में सीसीआरटी, भारत सरकार द्वारा आयोजित दस दिवसीय प्रशिक्षण में राज्य तथा राष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले पुरस्कृत शिक्षकों का चयन किया गया है, ताकि नई शिक्षा नीति के प्रावधानों के अनुरूप बच्चों के कौशल विकास हेतु सर्वप्रथम शिक्षकों को प्रशिक्षित कर बच्चों को कौशल विकास के

अवसर प्रदान किए जाएंगे।

उत्तराखंड से चंपावत जनपद के राउमावि खूनाबोरा में कार्यरत शैलेश मटियानी उत्कृष्ट शिक्षक पुरस्कार प्राप्त शिक्षक प्रकाश चन्द्र उपाध्याय तथा जनपद चमोली से राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त शिक्षिका कुसुमलता गड़िया राज्य का प्रति. निधित्व कर रही हैं।

श्री उपाध्याय ने बताया कि एनईपी 2020 का मुख्य उद्देश्य बच्चों को केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित न रखकर उन्हें बहुआयामी शिक्षण अनुभव उपलब्ध कराना है। भारत सरकार द्वारा इसी के उद्देश्य की पूर्ति हेतु शिक्षकों को प्रशिक्षित किया जा रहा है, जिसका लाभ अंततः विद्यार्थियों को प्राप्त होगा। विद्यार्थी अपनी रुचि के अनुसार कौशल विकसित कर सकेंगे और भविष्य में स्किल-आधारित करियर बनाने की दिशा में उनके लिए यह अत्यधिक लाभकारी सिद्ध होगा।

निर्धारित तिथि से एक दिन पूर्व तक एक भी आपत्ति नहीं

शाह टाइम्स संवाददाता

खटीमा। प्रांतीय उद्योग व्यापार मंडल चुनाव संचालन समिति के चुनाव प्रवेक्षक महेश चन्द्र जोशी ने बताया कि 25 नवंबर तक किसी भी व्यापारी ने आपत्ति दर्ज नहीं की। जबकि 26 नवंबर आपत्ति दर्ज कराने की अंतिम तिथि निर्धारित है। चुनाव पर्यवेक्षक महेश चन्द्र जोशी ने बताया कि 26 नवंबर दोपहर उपरांत चुनाव प्रबंधन समिति उचित निर्णय ले सकेगी । इधर रवीश भटनागर ने चुनाव प्रभारी अनिल बत्रा को ज्ञापन सौंपकर व्यापार मंडल खटीमा के चुनाव हेतु छूटे हुए व्यापारियों को वोट बनाने के लिये समय बढ़ाए जाने की मांग की है। ज्ञापन में कई व्यापारियों के वोट नहीं बन सकने की जानकारी देते हुए दो दिन का समय और देने की मांग की है। चुनाव संचालन समिति के अनिल बत्रा ने बताया कि यह मामला संचालन समिति के निर्णय उपरांत ही उचित निर्णय लिया जा सकेगा। फिलहाल व्यापार मंडल के चुनाव सरगर्मियां तेज होने लगी है। अभी तक 2600 से अधिक बोट बनाए जा चुके हैं।

ज्ञापन देकर वोट बनाने हेतु दो दिन का समय मांगा

कोसी बैराज पर लगा लंबा जाम, पुलिस नदारद, राहगीरों ने खुद संभाला ट्रैफिक

शाह टाइम्स संवाददाता

रामनगर। कोसी बैराज के पास मंगलवार शाम को अचानक लंबा जाम लग गया।जाम लोगों के लिए बड़ी परेशानी का सबब बन गया।बैराज पर स्थित पुलिस आउट पोस्ट से एक भी पुलिसकर्मी या ट्रैफिक जवान मौके पर मौजूद नहीं था। ट्रैफिक व्यवस्था ठप होने की वजह से बैराज क्षेत्र में वाहनों की लंबी कतारें लग गईं और लोग काफी देर तक फंसे रहे। स्थानीय लोगों और राहगीरों के अनुसार प्रतिदिन इस इलाके में ट्रैफिक का दबाव बढ़ता है, लेकिन आज स्थिति और भी बिगड़ गई क्योंकि पुलिस समय पर मौके पर नहीं पहुंची। राहगीरों ने खुद जाम को खोला। करीब आधे घंटे तक जाम हटाने के लिए कोई प्रशासनिक मदद न मिलने पर राहगीरों ने आगे बढ़कर खुद ही ट्रैफिक को नियंत्रित किया।

लोगों ने वाहनों को एक-एक करके निकालते हुए मार्ग को सुचारू कराया।स्थानीय निवासियों का कहना है कि कोसी बैराज, रामनगर-हल्द्वानी मार्ग का महत्वपूर्ण हिस्सा है, जहां रोजाना हजारों वाहन गुजरते हैं। इसके बावजूद यहां ट्रैफिक व्यवस्था अक्सर अस्त-व्यस्त रहती है।

लगातार जाम से लोग परेशान है।राहगीरों ने बताया कि रामनगर में आए दिन जाम की समस्या बढ़ती जा रही है, खासकर शाम के समय शहर के प्रमुख मार्गों पर वाहन फंस जाते हैं।लोगों ने इस बात पर भी नाराजगी जताई कि ट्रैफिक पुलिस की अनुपस्थिति से छोटी-छोटी परिस्थितियाँ भी बड़े जाम में बदल जाती हैं, जिससे स्कूली बच्चों, ऑफिस आने-जाने वाले लोगों और पर्यटकों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है।स्थानीय लोगों ने प्रशासन से मांग की है कि कोसी बैराज जैसे संवेदनशील पॉइंट पर स्थायी रूप से ट्रैफिक पुलिस की तैनाती की जाए, ताकि भविष्य में ऐसी स्थिति न बने।

जाम खुलने के बाद यातायात सामान्य हुआ लेकिन लोगों में पुलिस की अनुपस्थिति को लेकर नाराजगी बनी रही।एसडीएम प्रमोद कुमार ने बताया कि जल्द ही इस मामले में अधिकारियों के साथ बैठक की जाएगी।

माउंट लिट्रा जी स्कूल में धूमधाम से मनाया गया एथलेटिक मीट 2025

शाह टाइम्स संवाददाता

रुद्रपुर। माउंट लिट्रा जी स्कूल रुद्रपुर में एथलेटिक मीट 2025 का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में जिला ओलंपिक एसोसिएशन के अध्यक्ष और पूर्व खेल अधिकारी, कुमाऊं विश्वविद्यालय डा. नागेंद्र शर्मा उपस्थित रहे। उनके साथ उनकी टीम के सदस्य भी मौजूद थे।

कार्यक्रम का शुभारंभ स्कूल के प्रधानाचार्य संदीप नैथानी द्वारा मुख्य अतिथि का स्वागत और अभिनंदन के साथ हुआ। इस अवसर पर मुख्य संरक्षक हरीश पांडे ने विजेताओं को शुभकामनाएं भेजीं। एथलेटिक मीट में मार्च पास्ट, एरोबिक्स जुम्बा, ड्रिल, सरस्वती वंदना, खेल कूद, थ्रो, जंप, रेस और मजेदार खेलों का आयोजन किया गया था। छात्रों ने इन सभी प्रतियोगिताओं में उत्साह और जोश के साथ भाग लिया। मुख्य अतिथि डा.नागेंद्र शर्मा ने अपने संबोधन में छात्रों को खेल भावना और अनुशासन का महत्व बताया। उन्होंने कहा कि खेलों में जीतना और हारना महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि खेल भावना और टीम वर्क का प्रदर्शन करना महत्वपूर्ण है। विशिष्ट अतिथि डा. सुनील गौतम, गौतम हॉस्पिटल ने भी छात्रों को संबोधित किया और उन्हें खेलों में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया। कोच कुंदन गोस्वामी, मंदीप सिंह और हितेश कुमार ने भी छात्रों को प्रशिक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कार्यक्रम के अंत में प्रधानाचार्य संदीप नैथानी ने सभी विजेताओं को बधाई दी और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। इस अवसर पर विद्यालय के समस्त स्टाफ और छात्रों ने भाग लिया और कार्यक्रम को सफल बनाने में अपना योगदान दिया।

प्रहलाद पल्सिया के आंदोलन को पूर्व विधायक ठुकराल ने दिया समर्थन

शाह टाइम्स संवाददाता

रुद्रपुर/शक्तिफार्म। शक्तिफार्म के प्रहलाद पल्सिया में निर्माणाधीन एक्वा पार्क परियोजना को लेकर जारी आंदोलन में मंगलवार को पूर्व विधायक राजकुमार ठुकराल धरनास्थल पर पहुंचे और प्रभावित बंगाली परिवारों को अपना समर्थन दिया।

इस दौरान उन्होंने सरकार पर तीखा निशाना साधा और कहा कि निजी स्वार्थ के लिए वर्षों से बसे निर्दोष बंगाली परिवारों को जबरन उजाड़ने की साजिश रची जा रही है, जिसे किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। ठुकराल ने कहा कि पूर्व मुख्यमंत्री विजय बहुगुणा ने अपने कार्यकाल में बंगाली समाज को भूमिधरी अधिकार दिलाने, अनुसूचित जाति का दर्जा देने और बंगाली बहुल क्षेत्रों के विद्यालयों में बांग्ला भाषा लागू करने जैसे वादे किए थे। लेकिन वर्तमान भाजपा सरकार ने इन वादों को तोड़कर बंगाली समाज का शोषण शुरू कर दिया है। उन्होंने एक्वा पार्क के नाम पर प्रशासन द्वारा घर खाली कराने की कार्रवाई को मानवता के खिलाफ बताते हुए इसे तत्काल रोके जाने की मांग की। पूर्व विधायक राज. कुमार ठुकराल ने प्रभावित परिवारों से कहा कि यह संघर्ष केवल उनके अधिकारों की रक्षा के लिए है और उन्हें हर संभव राजनीतिक और सामा. जिक समर्थन मिलेगा। उन्होंने प्रशासन से अपील की कि परियोजना के नाम पर किसी भी नागरिक के मूलभूत अधिकारों का हनन न किया जाए। धरने के दौरान शक्तिगढ़ नगर पंचायत अध्यक्ष सुमित मंडल, श्रीनाथ विश्वास, परिमल राय, विकास मलिक, भोपाल राय, मानस बैरागी, अर्जुन विश्वास, आनंद शर्मा, केरु मंडल, देवांन्द स्वर्णकार, शिव कुमार शिवू और ललित बिष्ट समेत तमाम लोग मौजूद रहे।

यूकेडी के संस्थापक व वरिष्ठ नेता दिवाकर भट्ट के निधन पर जताया शोक

शाह टाइम्स संवाददाता

रामनगर। उत्तराखंड क्रांति दल के संस्थापक व वरिष्ठ नेता दिवाकर भट्ट के निधन पर आंदोलनकारी संगठनों और नागरिकों ने शोक व्यक्त किया है।दिल्ली के प्रेस क्लब में हुई एक शोक सभा में आंदोलनकारियों और पत्रकारों ने उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। बता दे कि दिवाकर भट्ट पिछले कई दिनों से देहरादून के महंत ह्रदयेश अस्पताल में भर्ती थे। मंगलवार को उन्हें हरिद्वार स्थित आवास में लाया गया, जहां साढ़े चार बजे उन्होंने अंतिम सांस ली। प्रेस क्लब में हुई शोक सभा में अखिल भारतीय किसान महासभा के सचिव पुरुषोत्तम शर्मा ने कहा कि दिवाकर भट्ट का निधन आंदोलनों के एक स्तंभ का ढहना है।उन्होंने जीवन भर उत्तराखंड के हितों के लिए लडाई लड़ी। वरिष्ठ राज्य आंदोलनकारी और दिवाकर भट्ट के साथी प्रभात ध्यानी ने कहा कि पिछले दिनों जब में उनसे मिला तो उनमें उत्तराखंड को लेकर उसी तरह की चिंता थी जैसे आंदोलन के दौर में थी। राज्य निर्माण में दिवाकर भट्ट के योगदान को हमेशा याद किया जाएगा। वरिष्ठ पत्रकार चारु तिवारी ने कहा कि दिवाकर भट्ट के साथ आंदोलनों में रहना एक तरह से नई ऊर्जा प्रदान करने वाला होता था। वरिष्ठ पत्रकार सुनील नेगी ने दिवाकर भट्ट को याद करते हुए आंदोलन में उनके योगदान की सराहना की। वरिष्ठ आंदोलनकारी,पत्रकार देव सिंह रावत ने दिवाकर भट्ट के साथ आंदोलनों में गुजारे समय को याद किया।

ब्लॉक प्रमुख और ज्येष्ठ उप प्रमुख ने यशपाल आर्य से की मुलाकात

शाह टाइम्स संवाददाता

रामनगर। ब्लॉक प्रमुख मंजू नेगी और ज्येष्ठ उप प्रमुख संजय नेगी ने हल्द्वानी में नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्य से मुलाकात कर आशीर्वाद लिया और विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की। इस दौरान ब्लॉक प्रमुख मंजू नेगी, ज्येष्ठ उप प्रमुख संजय नेगी, कनिष्ठ उप प्रमुख मीना रावत,ग्राम प्रधान संगठन के अध्यक्ष नवीन सती,क्षेत्र पंचायत संगठन अध्यक्ष मिथलेश डंगवाल, प्रतिनिधि राहुल डंगवाल,पूर्व ग्राम प्रधान श्याम बिष्ट, पूर्व क्षेत्र पंचायत सदस्य महावीर रावत आदि मौजूद रहे।

विधायक ने बांटे सहायता राशि के चेक

शाह टाइम्स संवाददाता

रामनगर। विधायक दीवान सिंह बिष्ट ने मुख्यमंत्री के विवे. काधीन कोष से पुत्रियों के विवाह, उपचार उपरान्त सहायतार्थ स्वीकृत 46 पात्र परिवारों को आठ लाख दस हजार रुपये की सहायता राशि के चेको का भाजपा कार्यकर्ताओं व राजश्व उपनिरीशकों के समक्ष वितरण किया। विधायक ने बताया कि हर पात्र परिवार को सरकार की योजनाओं का लाभ दिलाना हमारी प्राथमिकता है।जिसके लिए हमारी सरकार व पार्टी का हर कार्यकर्ता जन-जन तक पहुंचकर उनको सरकार की योजनाओं का लाभ दिलाने को निरंतर प्रयासरत रहते है। इस दौरान भाजपा नगर अध्यक्ष भूपेंद्र खाती, घनश्याम शर्मा, बलदेव रॉवत, गोविन्द मनराल, सिब्बू मनराल, धनेशवरी घिडयाल, मनमोहन सिंह बिष्ट, एडवोकेट दानिश सिद्धिकी,चन्दन अधिकारी, विजय खुल्वे, सैय्यद मेहमूद, राजश्व उपनिरीक्षक राहुल आर्या,देवेंद्र मेहरा, प्रकाश थापा आदि लोग मौजूद रहे।

सम्बंध विच्छेद

मैंने अपने पुत्र मनदीप सिंह एवं पुत्रवधू अल्का के दुर्व्यवहारों से तंग आकर इनसे अपने तथा अपने अन्य परिजनों के सभी सम्बंध विच्छेद कर अपने पुत्र मनदीप सिंह एवं पुत्रवधू अल्का को अपनी समस्त चल-अचल सम्पत्ति से बेदखल कर दिया है। अब मेरा या मेरे किसी भी परिजन का मेरे पुत्र मनदीप सिंह एवं पुत्रवधू अल्का से कोई सम्बंध या वास्ता सरोकार नहीं है। जो भी व्यक्ति मेरे पुत्र मनदीप सिंह एवं पुत्रवधू अल्का से किसी भी प्रकार का कोई सम्बंध या वास्ता-सरोकार अथवा लेनदेन के व्यवहार रखेगा तो उसके लिए वह व्यक्ति स्वयं जिम्मेदार होगा। मैं या मेरा कोई भी परिजन इनके किसी भी कृत्य के लिए जिम्मेदार नहीं है।

गुर्नाम सिंह पुत्र श्री धर्म सिंह
निवासी-ग्राम मिलक कुरईया, तहसील रुद्रपुर, थाना-किच्छा, जिला-ऊधमसिंह नगर

अभ्यर्थी का चयन रद्द करना गलत

हाई कोर्ट ने राज्य चिकित्सा सेवा बोर्ड को परीक्षा परिणाम घोषित करने के निर्देश दिए

शाह टाइम्स संवाददाता

नैनीताल। उत्तराखंड हाईकोर्ट ने स्वास्थ्य विभाग में ऑपरेशन थिएटर टेक्नीशियन भर्ती में राज्य चिकित्सा सेवा बोर्ड द्वारा एक अभ्यर्थी का चयन रद्द करने को गलत ठहराते हुए बोर्ड से चयन मानकों के मुताबिक इस अभ्यर्थी का परीक्षा परिणाम घोषित करने के निर्देश दिए हैं। मामले की सुनवाई न्यायमूर्ति मनोज कुमार तिवारी की एकलपीठ में हुई। याचिकाकर्ता मनोज जोशी का चयन ऑपरेशन थिएटर टेक्नीशियन के पद पर केवल इस आधार पर निरस्त कर दिया गया था कि उनकी उत्तराखंड स्टेट मेडिकल फैकल्टी में पंजीकरण की तिथि आवेदन की अंतिम तिथि के बाद की है। याचिकाकर्ता का तर्क था कि वह वर्ष 2014 से उत्तर प्रदेश स्टेट मेडिकल फैकल्टी में पंजीकृत थे और 15 जनवरी 2022 को उन्होंने अपना पंजीकरण उत्तराखंड स्थानांतरित करने के लिए आवेदन किया था। सत्यापन प्रक्रिया पूरी होने के बाद 1 अप्रैल 2022 को उनका

नाम उत्तराखंड स्टेट मेडिकल फैकल्टी में दर्ज किया गया। अदालत के समक्ष यह तथ्य निर्विवाद रहा कि आवेदन की अंतिम तिथि 27 जनवरी 2022 थी और विज्ञापन की धारा -6 में स्पष्ट था कि अंतिम तिथि तक अभ्यर्थी का उत्तराखंड स्टेट मेडिकल फैकल्टी या उत्तराखंड पैरा मेडिकल काउंसिल में पंजीकरण होना आवश्यक है। इसी आधार पर चयन बोर्ड ने 20 अक्टूबर 2023 को याचिकाकर्ता की उम्मीदवारी रद्द कर दी थी। याचिकाकर्ता के अधिवक्ता ने दलील दी कि यह मामला पूर्व में निर्णयित एसएस 2331/2024 के समान है जिसे सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय लक्ष्मी सरोज बनाम उत्तर प्रदेश राज्य (2022) 17 एसएससी 477 का अनुपालन करते हुए निपटाया गया था। चयन निकाय की ओर से उपस्थित अधिवक्ता ने भी स्वीकार किया कि सर्वोच्च न्यायालय के इस निर्णय का सिद्धांत वर्तमान मामले पर समान रूप से लागू होता है। अंततः उच्च न्यायालय ने चयन बोर्ड के 20 अक्टूबर 2023 का आदेश रद्द करते हुए याचिका को स्वीकार कर लिया। अदालत ने निर्देश दिए कि याचिकाकर्ता के दावे को प्रचलित चयन मानकों के अनुसार दोबारा विचारित किया जाए और उसका परिणाम घोषित किया जाए।

ग्रामसभा की भूमि कब्जाने के मामले पर हुई सुनवाई

नैनीताल। उत्तराखंड हाईकोर्ट ने रुड़की हरिद्वार के गन्दासपुर की ग्राम सभा की भूमि पर ग्राम के ही कुछ दबंग लोगों के द्वारा कब्जा करके फसल उगाई जाने के खिलाफ दायर जनहित याचिका पर सुनवाई की। मामले की सुनवाई के बाद राज्य सरकार के द्वारा जो स्थिति से कोर्ट को अवगत कराया उस पर कोर्ट सन्तुष्ट नहीं हुई। अब कोर्ट ने मामले की सुनवाई हेतु आने वाले शुक्रवार यानी 28 नवंबर की तिथि नियत की है। बुधवार को मामले की सुनवाई मुखय न्यायधीश जी नरेंद्र व न्यायमूर्ती सुभाष उपाध्याय की खण्डपीठ में हुई। कोर्ट ने सरकार से यह भी कहा है कि याचिकाकर्ता को सुरक्षा मुहैया कराई जाए। मामले के अनुसार गन्दासपुर रुड़की हरिद्वार निवासी मुन्नी देवी ने जनहित याचिका दायर कर कहा है कि ग्राम सभा की भूमि पर गांव के ही कुछ दबंग लोगो के द्वारा कई समय से कबजा करके फसलें उगाई जा रही हैं जबकि यह ग्राम सभा की भूमि है। वर्षात के समय गंगा नदी जब उफान पर होती है तो इस क्षेत्र में पानी भर जाता है और गांव की तरफ आ जाता है। जब इसकी शिकायत उनके द्वारा प्रशासन से की तो उस पर कोई कार्यवाही नहीं हुई। उल्टा इनके द्वारा उन पर कई बार जान से मारने के हमले करवा दिए। जनहित याचिका में उनके द्वारा कोर्ट से प्रार्थना की गयी है कि ग्राम सभा की भूमि को खाली करवा जाय और उनको जान माल की सुरक्षा दिलाई जाए।

प्रधानाचार्या आरती को यथावत बनाए रखने के निर्देश

नैनीताल। उत्तराखंड हाईकोर्ट ने राजकीय बालिका इंटर कॉलेज रानीपोखरी (देहरादून) की प्रधानाचार्या आरती चिटकारिया का स्थानांतरण रोका। अदालत ने शिक्षा निदेशालय से यह पूछने को कहा कि कालेज में शिक्षा का स्तर क्यों गिर रहा है और कौन से शिक्षक इसके जिम्मेदार हैं। साथ ही, कोर्ट ने उन शिक्षकों की लिस्ट भी मांगी जो धरना प्रदर्शन कर दबाव डाल रहे हैं। मामले की सुनवाई तीन सप्ताह बाद होगी। बता दें कि जीजीआईसी रानीपोखरी के शिक्षकों ने प्रधानाचार्या के खिलाफ शिकायत की थी और उनकी हटाने की मांग की थी, लेकिन जांच कमेटी ने अनुचित व्यवहार नहीं पाया। इसके बावजूद, विभाग ने प्रधानाचार्या और शिक्षकों के स्थानांतरण की संस्तुति की थी, जिसे आरती ने हाईकोर्ट में चुनौती दी।

दिवाकर भट्ट का निधन अपूर्णनीय क्षति: डा. जंतवाल

शाह टाइम्स संवाददाता

नैनीताल। उक्रांद के पूर्व केंद्रीय अध्यक्ष व नैनीताल विधान सभा के पूर्व विधायक रहे डा.नारायण सिंह जंतवाल ने उक्रांद के संस्थापक सदस्य तथा राज्य आंदोलन को धार देने में अग्रणीय भूमिका का निर्वहन करने वाले दिवाकर भट्ट के दिवंगत होने पर गहरा दुख जताया है। डा.जंतवाल के मुता. बिक अभी देहरादून में इन्द्रेश अस्पताल में उनसे मिले तो भी उनका अन्दाज हमेशा की तरह ही था बेझिझक तथा निडर होकर अपनी बात कहने का। उनकी इस शैली में बातचीत व संवाद ने उत्तराखंड के लोगों ने उन्हें सशक्त नेता के रूप में स्वीकार करते हुए फील्ड मार्शल की उपाधि प्रदान की। कहा कि विकास खंड व जिला पंचायत स्तर पर भी उनके नेतृत्व का लोहा लोगों ने माना। उत्तराखंड सरकार में मंत्री के रूप मे भी उत्तराखंड के सरोकारों को लेकर वह हमेशा सजग रहे,इतना ही नहीं कर्मचारियों को एकजुट कर उनके हितों के लिए भी लड़ाई लड़ते रहे। उत्तराखंड क्रांति दल के संस्थापक सदस्य रहे। दल में कई पदों पर रहने के साथ ही अध्यक्ष पद रहते दल को जुझारू तेवरों के साथ आगे बढ़ाया। डा.जंतवाल के मुताबिक उनके निधन से जहां उत्तराखंड के सरोकारों के लिए एक बुलंद आवाज सुनी हो गई है साथ ही उत्तराखंड क्रांति दल के लिए तो यह बहुत बड़ा आघात है। डा.जंतवाल ने कहा कि व्यक्तिगत रूप से मेरे लिए भी यह बड़ी क्षति है उनके साथ आत्मीय संबंध व तमाम। यादें जुड़ी हैं जो सदैव बनी रहेंगी। परमात्मा रुदिवाकर भट जी की आत्मा को चिर शांति प्रदान करें,परिजनों मित्रों समर्थकों व दल के सभी साथियों को इस कठिन समय में सबल प्रदान करें।

एक नजर

बीएड प्रवेश परीक्षा की काउंसिलिंग

नैनीताल। उत्तराखंड राज्य संयुक्त बीएड प्रवेश परीक्षा-2025-27 हेतु आवंटित ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से प्राप्त विकल्पों तथा अभ्यर्थियों द्वारा जमा किए गए दस्तावेज एवं कुल अंकों के आधार पर तैयार मेरिट सूची के अनुसार अभ्यर्थियों को विभिन्न महाविद्यालयों, संस्थानों का आवंटन किया गया है। कुलसचिव कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल डा. एमएस मंद्रवाल ने बताया कि अभ्यर्थियों को अवगत कराया जाता है कि अपने आवंटित महाविद्यालय/संस्थान को स्वीकृति प्रदान करने की अंतिम तिथि 25 से 29 नवंबर शाम 30 बजे तक निर्धारित है। स्वीकृति के उपरांत अभ्यर्थियों को 29 नवंबर शाम 5 बजे तक संबंधित महाविद्यालय/संस्थान में अपना प्रवेश अनिवार्य रूप से सुनिश्चित करना होगा।

झूठी फायरिंग की सूचना देना पड़ा महंगा

नैनीताल। जिले की भीमताल पुलिस ने झूठीफायरिंग की सूचना देने पर एक युवक के खिलाफ कार्रवाई की है। बता दें डा. जगदीश चन्द्र एसपी क्राइम/ट्रैफिक के मार्गदर्शन एवं अमित कुमार पुलिस उपाधीक्षक भवाली के पर्यवेक्षण में रविवार यानी 24 नवंबर को रात्रि कॉलर द्वारा सातताल में बर्थ डे पार्टी में झगड़े व फायरिंग होने तथा एक व्यक्ति के घायल होने की सूचना डायल 112 पर दी गई। सूचना मिलते ही उप निरीक्षक महेन्द्र राज सिंह चीता पुलिस टीम के साथ मौके पर पहुँचे जहां न कोई व्यक्ति मौजूद मिला और न ही किसी प्रकार की फायरिंग/झगड़े की घटना सत्यापित हुई। स्थानीय लोगों से पूछताछ पर विदित हुआ कि यहां जन्मदिन मना रहे 10-12 युवकों में आपस में कहासुनी हुई थी लेकिन किसी प्रकार की फायरिंग नहीं हुई। कॉलर द्वारा दी गई सूचना पूरी तरह झूठी पाई गई। पुलिस द्वारा त्वरित कार्यवाही करते हुए कॉलर अमित सिंह सूर्या पुत्र भुवन सिंह सूर्या निवासी सूर्यागांव भीमताल नैनीताल को मौके से हिरासत में लेकर लिखित माफीनामा प्रस्तुत करने पर उसके विरुद्ध पुलिस एक्ट के तहत चालानी कार्यवाही की गई।

स्पेशल कंपोनेंट प्लान के अंतर्गत बैठक

नैनीताल। जिले के ओखलकांडा विकास खंड की ग्राम सभा भुम्का में स्पेशल कंपोनेंट प्लान के अंतर्गत बागवानी संस्थान की बैठक आयोजित हुई। बैठक की अध्यक्षता ग्राम प्रधान महतोली विमला देवी द्वारा की गई जबकि संचालन पूर्व ग्राम प्रधान मुकेश चंद्र बौद्ध ने किया। बैठक में विभाग ने बताया कि भुम्का, महतोली व हरीनगर और बरमधार इन चार गांवों को स्पेशल कंपोनेंट प्लान में मुकेश चंद्र बौद्ध के लगातार प्रयासों और फॉलोअप के कारण शामिल किया गया है। योजना के अंतर्गत ग्रामीणों को कृषि सुविधाएं मुहैया कराई जाएंगी तथा कृषि यंत्र, सिंचाई हेतु पाइप एवं पाइपलाइन सामग्री, खेती हेतु ट्रे और आगामी चरणों में गुणवत्ता वाले बीज एवं पौध मुहैया कराए जाएंगे। यह सामग्री अनुसूचित जाति बाहुल्य गांवों को प्राथमिकता के आधार पर प्रदान की जाएगी। बैठक में केंद्रीय शीतोष्ण बागवानी संस्थान के वैज्ञानिक डा. अरुण किशोर ने कहा कि हमारा लक्ष्य है कि गांव के अंतिम छोर पर बैठे व्यक्ति तक योजना का लाभ पहुंचे। बैठक में विमला, विमला, विपुल टम्टा, अजय कुमार, कविता, विपिन चंद्र, जगदीश, प्रकाश चंद्र, महेश, रमेश चन्द्र, कांति देवी, धनी राम, गिरीश चंद्र, हरीश चंद्र, कैलाश चंद्र रहे।

सड़क की सुरक्षा दीवार ढहने का खतरा

नैनीताल। नगर के तल्लीताल में रोडवेज स्टेशन के समीप हल्द्वानी रोड पर गड्ढा होने से सड़क ढहने का खतरा बढ़ गया है। लोगों ने प्रशासन से सुरक्षा करने की मांग की है। जानकारी के अनुसार तल्लीताल रोडवेज के समीप हल्द्वानी रोड के किनारे पर गड्ढा उभर गया है जिससे सुरक्षा दीवार ढहने का खतरा बन गया है लोगों का कहना है कि इस क्षेत्र में चूहों की संख्या ज्यादा होने के चलते यहां पर गड्ढा खतरा बन गया है। अगर इसका जल्द उपचार नहीं किया गया तो सड़क की सुरक्षा दीवार कभी भी ढह सकती है। उन्होंने जल्द से जल्द सड़क के गड्ढे को भरकर सड़क को बचाने की अपील प्रशासन से की है। मामले में एनएच के सहायक अभियंता प्रमोद सुयाल ने बताया कि जल्द ही गड्ढे को भरकर दीवार को बचाने के लिए कार्य किया जाएगा।

वाहन को क्षतिग्रस्त कर भागा पर्यटक

नैनीताल। नगर के बारापत्थर क्षेत्र में सड़क किनारे पार्क एक टैक्सी वाहन को कार सवार पर्यटक टक्कर मार फरार हो गए। टैकसी चालकों ने पीछा कर पर्यटकों के वाहन को नारायण नगर के समीप पकड़ लिया। काफी देर तनातनी के बाद आखिरकार कोतवाली पहुंच दोनों पक्षों में समझौता हो गया। जानकारी के मुताबिक तल्लीताल निवासी रोहित आर्या ने मंगलवार शाम को अपना वाहन बारापत्थर पार्किंग में खड़ा किया था। कालाढूंगी की ओर जा रहे हरियाणा नंबर के वाहन ने उसके वाहन में टक्कर मार दी। जिससे वाहन क्षतिग्रस्त हो गया। टक्कर मारने के बाद पर्यटक कार लेकर फरार हो गए। टैक्सी चालकों ने पीछा कर पर्यटकों के वाहन को नारायण नगर के समीप रोक लिया। जहां दोनों पक्षों में जमकर तनातनी हुई। जिसके बाद कोतवाली पहुंच रोहित पर्यटकों पर कार्रवाई की मांग करने लगा। एसएसआई दीपक बिष्ट ने बताया कि हरियाणा निवासी बलराम द्वारा नुकसान की भरपाई करने की बात पर दोनों पक्षों में समझौता हो गया।

नैनीताल में रात में गिर रहा है जमकर पाला

शाह टाइम्स संवाददाता

नैनीताल। सरोवर नगरी नैनीताल में भले ही इन दिनों दिन के समय गुनगुनी धूप खिलने से मौसम सुहा. वना जरुर बना है लेकिन रात में जमकर गिर रहे पाले की वजह से तापमान में काफी गिरावट दर्ज की जा रही है। रात में गिर रहे पाले से सुबह के समय ठिठुरन काफी बढ़ जा रही है। बता दें नगर में दिनभर धूप खिलने की वजह से स्थानीय लोगों के साथ ही नैनीताल भ्रमण पर पहुंचे सैलानियों को भी राहत मिल रही है लेकिन रात में जमकर पाला गिर रहा है,शाम को चार बजे के बाद से मौसम में बदलाव नजर आ रहा है और तेजी से ठंड शुरु हो रही है। रात में गिर रहे पाले की वजह से इन दिनों सुबह के समय लोगों की टिन की छतें बिलकुल सफेद नजर आ रही हैं दूर से देखने में ऐसा प्रतीत हो रहा है कि नगर में रात के समय हल्की बर्फ गिरी हो। फिलहाल जिस तरह से रात के समय में तापमान में गिरावट देखने को मिल रही है अगर मौसम का आने वाले दिनों में यह मिजाज रहा तो मौसम में तेजी से बदलाव होने के साथ ही बर्फबारी से भी इनकार नहीं किया जा सकता है। मौसम विज्ञान केंद्र से मिली जानकारी के मुताबिक बुधवार को नगर का अधिकतम तापमान 17 डिग्री सेल्सियस तथा न्यूनतम तापमान 8 डिग्री सेल्सियस पहुंच गया है।

विद्युत चोरी के दोषी को 3 माह का कारावास

शाह टाइम्स संवाददाता

नैनीताल। जिला एवं सत्र न्यायाधीश/विशेष न्यायाधीश विद्युत अधिनियम हरीश गोयल की अदालत ने विद्युत चोरी के एक आरोपी को 3 माह के कारावास व 65 हजार रुपये अर्थदण्ड की सजा सुनाई है। अभियोजन पक्ष के अनुसार कुरियागांव लामाचौड़ निवासी संजय निगलटिया को विद्युत उप खण्ड अधिकारी कमलुवागांजा हल्द्वानी विद्या भूषण जोशी व अन्य ने विद्युत लाइन में तार डालकर विद्युत चोरी करते हुए पकड़ा था। आरोपी के खिलाफ विद्युत अधिनियम की धारा 135 के तहत मुखानी थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई थी। इस मामले में पुलिस चार्जशीट तथा विद्युत विभाग की रिपोर्ट के साथ ही जिला शासकीय अधिवक्ता फौजदारी व विद्युत विभाग के अधिवक्ता एमके जोशी के तर्कों के आधार पर कोर्ट ने संजय निगलटिया को विद्युत चोरी का दोषी ठहराते हुए 3 माह की न्यायिक हिरासत में भेजने का आदेश पारित किया।

बार काउंसिल चुनाव में उतरे नीरज

शाह टाइम्स संवाददाता

नैनीताल। उत्तराखंड बार काउंसिल चुनाव की तैयारी के बीच वरिष्ठ अधिवक्ता एवं नैनीताल बार एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष नीरज साह ने अपनी मजबूत दावेदारी पेश कर चुनावी माहौल को अत्यंत रोचक बना दिया है। बता दें सुप्रीम कोर्ट के निर्देशानुसार राज्य में बार काउंसिल के चुनाव 31 मार्च से पहले होने निर्धारित हैं ऐसे में साह ने अपने सुदृढ़ कार्यकाल उपलबधियों और अधिवक्ता हितों को आधार बनाते हुए चुनावी मैदान में उतरने का फैसला किया है। प्रदेश के विभिन्न जनपदों नैनीताल, अल्मोड़ा, बागेश्वर, चंपावत, पिथौरागढ़ व उधमसिंहनगर सहित गढ़वाल मंडल से बड़ी संखया में अधिवक्ता नीरज साह के समर्थन में लामबंद दिख रहे हैं। नैनीताल बार एसोसिएशन के वर्तमान एवं पूर्व पदाधिकारियों ने बताया कि साह के अध्यक्षीय कार्यकाल में अधिवक्ताओं के हितों में कई ऐतिहासिक एवं अभूतपूर्व निर्णय लिए गए जिसमें नैनीताल बार की दशकों पुरानी मांग अधिवक्ता चैंबरों का निर्माण साह के नेतृत्व में मूर्त रूप ले सकी। लगभग 45 लाख रुपये की लागत से आधुनिक अधिवक्ता चैंबरों का निर्माण कराया गया जो नैनीताल बार के इतिहास की एक उल्लेखनीय कामयाबी मानी जा रही है, जहां आज भी प्रदेश की कई बार एसोसिएशन चैंबर निर्माण की मांग को लेकर संघर्षरत हैं वहीं नैनीताल बार के अधिवक्ताओं को स्वाभिमान भवन के रूप में स्थायी और आधुनिक भवन का उपहार मिल चुका है। नीरज साह ने बताया कि अपने कार्यकाल में अधिवक्ताओं के सहयोग और एकजुटता से कई ऐसे कार्य पूरे हुए जिन्हें लंबे समय तक असंभव माना जाता रहा साथी अधिवक्ताओं के आग्रह स्नेह और विश्वास के चलते ही उन्हें चुनावी मैदान में उतरने की प्रेरणा मिली है। उन्होंने स्पष्ट किया कि यह चुनाव उनके लिए केवल एक पद ना होकर अधिवक्ता समुदाय की गरिमा अधिकार और सममानजनक प्रतिनिधित्व का संकल्प है। साह ने कहा कि यदि अधिवक्ताओं का समर्थन उन्हें बार काउंसिल में प्रतिनिधित्व का अवसर देता है तो वे अधिवक्ता हितों की रक्षा उन्नति और मजबूत आवाज के लिए पूर्ण समर्पण के साथ कार्य करेंगे।

प्रवासी राजस्थानी दिवस 2025 में औद्योगिक परिदृश्य पर विशेष सत्र

देहरादून : मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में 10 दिसंबर को जयपुर में आयोजित होने जा रहे प्रवासी राजस्थानी दिवस 2025 में शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यटन, ऊर्जा, खनन और जल संसाधन के साथ-साथ राजस्थान के औद्योगिक विकास पर भी एक विशेष सत्र आयोजित किया जाएगा। इस सत्र में उद्योग क्षेत्र के भविष्य, साझेदारी, और प्रवासी राजस्थानी समुदाय की भूमिका पर गहन चर्चा होगी। यह सत्र प्रवासी राजस्थानी समुदाय के सहयोग से राजस्थान के औद्योगिक परिदृश्य में बदलावः थीम पर आधारित होगा। इसमें भारत और विदेश में उत्कृष्ट उपलब्धियाँ हासिल कर चुके प्रमुख विशेषज्ञ शामिल होंगे।

गुरु तेग बहादुर को 350वीं शहीदी दिवस पर किया याद

शाह टाइम्स संवाददाता

नैनीताल। सिखों के नवें गुरु तेग बहादुर के 350वें शहीदी दिवस पर गुरुद्वारा श्री सिंह सभा नैनीताल में गुरु तेग बहादुर के लिखें नवें महले श्लोकों का पाठ कर अरदास की गई। गुरु सिंह सभा के महासचिव अमर प्रीत सिंह ने बताया कि गुरु तेग बहादुर की 350वें शहीदी दिवस के अवसर पर उन्हें श्रद्धांजलि दी गई। गुरुद्वारे में गुरु तेग बहादुर के लिखें गए नवें महले श्लोकों का पाठ कर अरदास की गई, जिसके बाद गुरुद्वारे में चाय का लंगर लगाया गया। इस दौरान गुरु सिंह सभा के अध्यक्ष जोगेंद्र सिंह आनन्द, संदीप सिंह, जसमीत सिंह, जसकरण सिंह, गगन दीप सिंह, अमरजीत सिंह तथा सतनाम सिंह आदि मौजूद रहे।

क्रिकेट: इंस्पिरेशन स्कूल और गुरुकुल अगले चक्र में

- रोमांचक मुकाबले में 7 रन से जीता गुरूकुल

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। पब्लिक स्कूल एसोसिएशन के तत्वावधान में आर्डन प्रोग्रेसिव स्कूल लामाचौड़ में आयोजित पीएसए इंटर स्कूल अंडर-14 क्रिकेट प्रतियोगिता के मुकाबलों में मंगलवार को इंस्पिरेशन स्कूल और गुरुकुल इंटरनेशनल स्कूल ने शानदार प्रदर्शन करते हुए अगले राउंड में प्रवेश किया। पहले मैच में क्वींस पब्लिक स्कूल ने टॉस जीतकर बल्लेबाजी का फैसला किया, लेकिन टीम निर्धारित स्कोर खड़ा करने में नाकाम रही और 20 रन बनाकर ऑल आउट हो गई। लक्ष्य का पीछा करते हुए इंस्पिरेशन स्कूल की टीम ने बेहतरीन शुरुआत की और बिना कोई विकेट खोए 10 विकेट से आसान जीत दर्ज कर ली। दूसरे मुकाबले में गुरुकुल इंटरनेशनल स्कूल ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 75 रन बनाए। जवाब में शिवालिक स्कूल की टीम ने संघर्ष तो किया, लेकिन लक्ष्य से पहले ही 69 रन पर सिमट गई। इस तरह गुरुकुल ने 7 रन से रोमांचक जीत हासिल करते हुए अगले दौर में जगह पक्की की।

ब्याहकर आई अनु. जाति की महिलाएं आरक्षण की हकदार नहीं

कई याचिकाओं पर सुनवाई कर उत्तराखंड हाईकोर्ट ने सुनाया महत्वपूर्ण निर्णय

शाह टाइम्स संवाददाता

नैनीताल। उत्तराखंड हाईकोर्ट ने एक महत्वपूर्ण निर्णय सुनाते हुए स्पष्ट किया है कि दूसरे राज्य की अनुसूचित जाति की महिलाएं जो विवाह के उपरांत उत्तराखंड में बसी हैं उन्हें राज्य की सरकारी नौकरियों में आरक्षण का लाभ नहीं दिया जाएगा। न्यायमूर्ति मनोज कुमार तिवारी की एकलपीठ ने यह फैसला अंशु सागर और सहित कई अन्य याचिकाओं पर सुनवाई करते हुए दिया। कोर्ट ने माना कि आरक्षण का अधिकार क्षेत्र विशिष्ट होता है और यह प्रवास के साथ स्थानांतरित नहीं होता।

याचिकाकर्ता अंशु सागर जो मूल रूप से उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद की निवासी थीं का विवाह उत्तराखंड के एक अनुसूचित जाति के निवासी से हुआ था। वे जन्म से जाट समुदाय से हैं जो यूपी में अनुसूचित जाति है। विवाह के बाद उन्होंने उत्तराखंड के जसपुर से जाति प्रमाण पत्र और स्थायी निवास प्रमाण पत्र प्राप्त किया और सरकारी प्राथमिक विद्यालय में शिक्षक भर्ती के लिए आरक्षण का दावा किया जिसे विभाग ने अस्वीकार कर दिया था। राज्य सरकार की ओर से तर्क दिया गया कि 16 फरवरी 2004 और अन्य शासनादेशों के अनुसार आरक्षण का लाभ केवल उत्तराखंड के मूल निवासियों के लिए है। सरकार ने दलील दी कि पड़ोसी राज्यों के निवासीए भले ही वे उत्तराखंड से जाति प्रमाण पत्र बनवाने में सफल हो जाएं, सार्वजनिक रोजगार में आरक्षण के हकदार नहीं होंगे।

यह तर्क दिया गया कि जाति का दर्जा जन्म से तय होता है विवाह से नहीं। अदालत ने अपने फैसले में सुप्रीम कोर्ट के मैरी चंद्र शेखर राव और श्रंजना कुमारी बनाम उत्तराखंड राज्य जैसे प्रमुख फैसलों का हवाला दिया। इन फैसलों में सर्वोच्च न्यायालय ने पहले ही यह सिद्धांत स्थापित किया है कि संविधान के अनुच्छेद 341 और 342 के तहत अनुसूचित जाति जनजाति की सूची उस राज्य के संबंध मे होती है।

इसलिए एक राज्य में अनुसूचित जाति माना जाने वाला व्यक्ति दूसरे राज्य में स्वतः ही वह दर्जा हासिल नहीं कर सकता। फैसले में स्पष्ट किया गया कि प्रवास चाहे वह स्वैच्छिक हो या अनैच्छिक (जैसे शादी के कारण) किसी व्यक्ति को दूसरे राज्य में आरक्षण का अधिकार नहीं देता। कोर्ट ने कहा कि यदि प्रवासियों को आरक्षण का लाभ दिया जाता हैए तो यह उस राज्य के मूल अनुसूचित जाति/जनजाति के लोगों के संवैधानिक अधिकारों का हनन होगा।

एक राज्य का आरक्षित वर्ग दूसरे राज्य में सामान्य वर्ग के रूप में माना जाएगा। न्यायालय ने यह भी टिप्पणी की कि भले ही दोनों राज्यों (मूल राज्य और प्रवास वाले राज्य) में जाति का नाम समान हो फिर भी आरक्षण का लाभ नहीं मिल सकता। अंशु सागर के मामले में भले ही जाटव या वाल्मीकि जाति दोनों राज्यों में अनुसूचित जाति सूची में है फिर भी यूपी में जन्मी महिला उत्तराखंड में एस सी कोटे की हकदार नहीं हो सकती। जाति प्रमाण पत्र जारी होना भी सुप्रीम कोर्ट के संवैधानिक पीठ के फैसलों की कठोरता को कम नहीं कर सकता। इस आधार पर कोर्ट ने याचिकाकर्ताओं द्वारा मांगी गई राहत को खारिज कर दिया और उनकी रिट याचिकाएं निरस्त कर दी गईं। यह फैसला भविष्य में अन्य राज्यों से आकर उत्तराखंड में बसने वाले उममीदवारों के लिए एक स्पष्ट नजीरा पेश करता है।

8 ग्राम सभा के जनप्रतिनिधियों ने ली शपथ

दलगत राजनीति से ऊपर उठकर जनता के लिए करना है काम: डा. बिष्ट

शाह टाइम्स संवाददाता

नैनीताल। नैनीताल जिले के भीमताल विकास खंड के तहत न्याय पंचायत ज्योलीकोट की आठ ग्राम सभाओं का शपथ समारोह कार्यक्रम मंगलवार को सरकार द्वारा संचालित गेठिया महिला उपवन में किया गया।

बता दें परंपरा के मुताबिक निर्वाचित ग्राम प्रधानों सहित वार्ड सदस्यों का पुष्प गुच्छ एवं फूल मालाओं से स्वागत किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि भीमताल विकास खंड के ब्लॉक प्रमुख डा. हरीश सिंह बिष्ट ने अपने चितपरिचित अंदाज में उपस्थित जनप्रतिनिधियों एवं आठ ग्राम सभाओं के अलावा अन्य क्षेत्र से आई जनता को संबो. धित करते हुए कहा कि चुने हुए जनप्रतिनिधि अकसर शपथ लेने के बाद समाज से कटकर अपनी जिम्मेदारी से मुंह मोड़ लेते हैं जिस कारण कई क्षेत्रों का विकास नहीं हो पाता क्योंकि जिस क्षेत्र में जनप्रति. निधि कार्य नहीं करेगा तो उसे क्षेत्र का विकास कैसे हो पाएगा? कई जन प्रतिनिधि चुन जाने के बाद बैठकों में उपस्थित नहीं होते जिस कारण क्षेत्र तक लाभकारी योजनाएं जनता तक नहीं पहुंच पाती। उन्होंने स्पष्ट रूप से उपस्थित जनता से अपील की आने वाले पांच साल बाद ऐसे जनप्रतिनिधि को कभी भी न चुने जो पद लेने के बाद गायब रहता हो।

डा. बिष्ट ने दलगत राजनीति से ऊपर उठकर क्षेत्र की विकास के लिए जोर दिया। शपथ समारोह में शपथ ग्रहण करने वालों में ग्राम प्रधान बेलुवाखान डा. बबीता मनराल, गेठिया ग्राम प्रधान रिंकू देवी, ज्योलीकोट ग्राम प्रधान नवल कुमार, भल्यूटी ग्राम प्रधान देवेंद्र सिंह नेगी, ज्योली ग्राम प्रधान शेखर भट्ट, भूमियाधार ग्राम प्रधान मीनाक्षी टमटा, नाईसिला ग्राम प्रधान कैप्टन प्रताप नगरकोटी, बेल ग्राम प्रधान ललिता मलेड़ा के अलावा आठ ग्राम सभा के निर्वाचित वार्ड सदस्य द्वारा शपथ ग्रहण की गई। सहायक समाज कल्याण अधिकारी दिनेश सिंह बिष्ट द्वारा निर्वाचित प्राधिकारियों को शपथ दिलवाई गई। शपथ समारोह का संचालन ग्राम पंचायत विकास अधिकारी बीना बेनवाल एवं अजय कुमार द्वारा किया गया। शपथ समारोह में ग्राम विकास अधिकारी एलडी आर्य के अलावा कुंदन सिंह जीना, अशोक कुमार, अजय कुमार, राजेंद्र मनराल, हरेंद्र बिष्ट, विक्की कुमार, वीरेंद्र मेहरा, प्रकाश आर्या, उमेद सिंह मनराल, पारस बिष्ट, मनीष कुमार, विमल कुमार, रवि बोरा तथा पान सिंह खनी आदि लोग उपस्थित थे।

खड़िया मामले पर आज भी सुनवाई

शाह टाइम्स संवाददाता

नैनीताल। उत्तराखंड हाईकोर्ट ने बागेश्वर जिले के कांडा तहसील सहित जिले के कई अन्य गांवों में अवैध खड़िया खनन से आई दरारों के मामले में स्वतः संज्ञान लेकर पंजीकृत की गई व कई जनहित याचिकाओं व खनन इकाइयों के मामले पर एक साथ सुनवाई मंगलवार को भी की। पूर्व में कोर्ट ने जिला खान अधिकारी से पूछा था कि खनन कार्य में लगे वाहनों पर जीपीएस सिस्टम लगा है या नहीं कोर्ट को अवगत कराएं लेकिन उनके द्वारा बीते कल कोर्ट से इसकी रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए 24 घण्टे का समय मांगा था जो मंगलवार को उनके द्वारा कोर्ट में पेश किया गया। इस पर कोर्ट ने मामले की सुनवाई बुधवार (आज) भी जारी रखी है, साथ में कोर्ट ने रजिस्ट्री विभाग को यह भी निर्देश दिये हैं कि जुलाई में खनन व्यवसायी नवीन परिहार के खिलाफ जो स्वतः संज्ञान लेकर अवमानना याचिका दायर की गई थी उसे भी वीरवार (आज) सुनवाई के लिए इन याचिकाओं के साथ सूचीबद्ध करें। याचिकाकर्ता का कहना है कि खनन कार्य मे लगे वाहनों पर जीपीएस सिस्टम लगाना अनिवार्य है। उन वाहनों का ई रमन्ना पोर्टल पर भी इंट्रीरिग्रेशन होना भी अनिवार्य है। जो खनन नियवमली में दर्ज है। लेकिन कई वाहनों पर जीपीएस सिस्टम नही लगा होने के कारण अवैध खनन हो रहा है। इसलिए इसकी रिपोर्ट मंगाई जाए। मामले की सुनवाई मुख्य न्यायधीश जी नरेंद व न्यायमूर्ती सुभाष उपाध्याय की खण्डपीठ में हुई।

मारपीट के दोषी को तीन साल का कारावास

नैनीताल। द्वितीय अपर जिला सत्र न्यायाधीश कुलदीप शर्मा की न्यायालय से पत्नी से साथ मारपीट व क्रूरता करने के आरोपी धारी ब्लाक के सुनकिया निवासी गौरव सिंह तीन वर्ष के कारावास की व दस हजार रुपये अर्थदंड की सजा सुनाई गयी। अभियोजन पक्ष की ओर से न्यायालय बताया गया कि नौ मार्च 2018 को विमला देवी का विवाह सुनकिया निवासी गौरव सिंह के साथ हुआ था। आरोप है कि दहेज आदि की मांग को लेकर आरोपी पति अक्सर उसके साथ मारपीट व क्रूरता करता था। 27 दिसंबर 2018 को उसने पीड़िता को प्रताड़ना दी। मारपीट व क्रूरता की शिकार पीड़िता को उपचार के लिए सुशीला तिवारी अस्पताल हल्द्वानी लाया गया, जहां उसकी मौत हो गई। 28 दिसंबर को पीड़िता के पिता ने मुक्तेश्वर थाने में आरोपी धारी ब्लाक के सुनकिया निवासी गौरव सिंह के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया। न्यायाधीश ने अभियोजन पक्ष की दलील तथा गवाह की फोन रिकॉर्डिंग समेत बयानों के आधार पर आरोपी गौरव सिंह को धारा भारतीय दंडित संहिता 498क के अंतर्गत तीन साल के कारावास व दस हजार रुपये अर्थदंड की सजा सुनाई है।

भारत सीरीज गंवाने के संकट में

भारत की दूसरी पारी में खराब शुरुआत हुई और उसके दोनों ओपनर 21 रन तक पवेलियन लौट गए

गुवाहाटी, वार्ता। दक्षिण अफ्रीका ने अपनी दूसरी पारी चौथे दिन मंगलवार को पांच विकेट पर 260 रन पर घोषित कर भारत के सामने जीत के लिए 549 रन का बेहद मुश्किल लक्ष्य रखा जिसका पीछा करते हुए भारत ने स्टंप्स तक तक दो विकेट पर 27 रन बना लिए हैं। भारत अभी लक्ष्य से 522 रन पीछे है। भारत की दूसरी पारी में खराब शुरुआत हुई और उसके दोनों ओपनर 21 रन तक पवेलियन लौट गए। पहली पारी में छह विकेट लेने वाले मार्को यानसन ने यशस्वी जायसवाल को विकेटकीपर के हाथों कैच कराया जबकि स्पिनर साइमन हार्मर ने केएल राहुल को बोल्ड किया। जायसवाल ने 13 और राहुल ने छह रन बनाए। स्टंप्स के समय साई सुदर्शन दो और नाईट वॉचमैन कुलदीप यादव चार रन बनाकर क्रीज पर थे। दक्षिण अफ्रीका इस मैच में जीत से मात्र आठ विकेट ही दूर है। वहीं भारत की सलामी जोड़ी पवेलियन लौट चुकी है। कल भारत के सामने सबसे बड़ी चुनौती पूरे ओवर खेलने की होगी और इसके लिए भारतीय बल्लेबाजों को बेहतरीन बल्लेबाजी करनी होगी। अब मैच का नतीजा निकलेगा या नहीं निकलेगा यह तो कल पता चलेगा लेकिन अब तक की कहानी यही है कि दक्षिण अफ्रीका ने भारत को चारों खाने चित्त कर दिया है। खेल के आखिरी हिस्से में भारत के दो विकेट गिरे, जायसवाल और केएल राहुल के। मैच में अभी तीन सेशन बाकी हैं, दक्षिण अफ्रीका को जीत के लिए आठ विकेट चाहिए, जबकि इंडिया को 522 रन का बड़ा टारगेट चाहिए-जो असल में पहुंच से बहुत दूर है। इंडिया की जीत की उम्मीद नहीं है, लेकिन अगर वे अपना धैर्य बनाए रखते हैं और पॉजिटिव इरादा दिखाते हैं, तो वे अभी भी ड्रॉ कराने की उम्मीद कर सकते हैं। हालांकि, दक्षिण अफ्रीका की टैक्टिक्स ने कुछ लोगों को हैरान कर दिया। डिक्लेरेशन में देरी करके और बहुत ज्यादा सावधानी बरतकर, उन्होंने बचे हुए इंडियन विकेट लेने के लिए कुछ कीमती ओवर गंवा दिए। एक ऐसे मैच में जिसमें बड़े एक्शन की जरूरत थी, इनिंग्स के आखिर में उनकी सुस्त बैटिंग ने डिक्लेरेशन को और भी हैरान कर दिया, एक ऐसा ऑप्शन जो इंडिया को बचने का रास्ता दे सकता है। उम्मीद है कि स्पिनर्स 5वें दिन स्क्रिप्ट बनाएंगे। महाराज, हार्मर और मुथुसामी के साथ, साथ ही मार्करम भी मदद के लिए मौजूद हैं, प्रोटियाज के पास खराब पिच का फायदा उठाने के लिए ऑप्शन की कोई कमी नहीं है। और फिर मार्को यानसन हैं। शायद इस टेस्ट के सबसे अच्छे परफॉर्मर। उन्होंने पहली इनिग में जरूरी रन बनाए, और उनकी तेज शॉर्ट-बॉल की बौछार ने तीसरे दिन इंडिया के बैट्समैन को परेशान कर दिया। द.अफ्रीका उनसे उम्मीद करेगा कि वे आखिरी दिन भी वही जोश दिखाएंगे। यह सिर्फ़ दूसरी बार है जब भारत को घरेलू टेस्ट में 500 से ज्यादा का टारगेट दिया गया है। इससे पहले 2004 में नाग. पुर में ऑस्ट्रेलिया ने भारत को 543 रन का टारगेट दिया था। वह मैच वे 342 रन से हार गए थे, जो रनों के हिसाब से उनकी सबसे बड़ी हार है। दक्षिण अफ्रीका ने कल के बिना कोई विकेट खोए 26 रन से आगे खेलना शुरू किया और पांच विकेट पर 260 रन पर अपनी पारी घोषित की।

चार और टीमें मदुरै चेन्नई पहुंचीं

मदुरै, वार्ता। एफआईएच हॉकी मेन्स जूनियर वर्ल्ड कप से पहले उत्साह बढ़ने के साथ, जापान और चिली चेन्नई पहुंच गए, जबकि स्पेन और ऑस्ट्रिया 28 नवम्बर से 10 दिसम्बर तक होने वाले इस बड़े इवेंट के लिए अपनी आखिरी तैयारियां शुरू करने के लिए मदुरै पहुंच गए। जापान, जो अपना चौथा जूनियर वर्ल्ड कप खेल रहा है, सोमवार देर रात पहुंचा। अर्जेंटीना, चीन और न्यूजीलैंड के साथ पूल सी में रखे गए जापानी, भारत के इस दौरे पर अपनी छाप छोड़ने के लिए उत्सुक होंगे। वे 28 नवम्बर को अर्जेंटीना के खिलाफ अपने अभियान की शुरुआत करेंगे, फिर 30 नवम्बर को चीन से भिड़ेंगे, और आखिर में 1 दिसम्बर को न्यूजीलैंड के खिलाफ मैच के साथ अपना ग्रुप स्टेज पूरा करेंगे। जापानी टीम के ठीक बाद चिली टीम थी, जिसे भारत, ओमान और स्विट्जरलैंड के साथ पूल बी में रखा गया है।

संक्षिप्त खेल समाचार

रोहित शर्मा पुरुष टी-20 वर्ल्ड कप 2026 के लिए बने टूर्नामेंट एंबेसडर

मुम्बई, वार्ता। आईसीसी चेयरमैन जय शाह ने रोहित शर्मा को पुरुष टी-20 वर्ल्ड कप 2026 के लिए टूर्नामेंट एंबेसडर घोषित किया है। 7 फरवरी से 8 मार्च तक चलने वाले 2026 टी-20 विश्व कप को भारत और श्रीलंका मिलकर होस्ट करेंगे। मेजबान भारत और श्रीलंका के अलावा टी-20 विश्व कप में भाग लेने वाली अन्य 18 टीमें हैं: अफगानिस्तान, ऑस्ट्रेलिया, बंगलादेश, इंग्लैंड, दक्षिण अफ्रीका, अमेरिका, वेस्टइंडीज, न्यूज़ीलैंड, पाकिस्तान, आयरलैंड, कनाडा, इटली, नीदरलैंड, नाम. ीबिया, ज़िम्बाब्वे, नेपाल, ओमान और यूएई। भारत मौजूदा डिफ़ेंलडग चैंपियन है, जिसने रोहित की कप्तानी में 2024 टी-20 विश्व कप के फ़ाइनल में बारबाडोस में दक्षिण अफ्रीका को हराकर खिताब जीता था।

चेन्नई 9-14 दिसम्बर तक स्क्वैश वर्ल्ड कप होस्ट करेगा

चेन्नई, वार्ता। चेन्नई 9-14 दिसंबर तक होने वाले वर्ल्ड कप को होस्ट करने के लिए पूरी तरह तैयार है, इसलिए इस चहल-पहल वाले शहर में स्क्वैश का बड़ा धमाका होने वाला है। शहूर शॉपिंग मॉल, एक्सप्रेस एवेन्यू और इंडियन स्क्वैश एकेडमी में होने वाली इस चैंपियनशिप में मेजबान भारत समेत कुल 12 टीमें हिस्सा लेंगी। टीमों को तीन-तीन टीमों के दो-चार ग्रुप में बांटा गया था, जिसमें भारत को ब्राज़ील और स्विट्जरलैंड के साथ रखा गया है। तमिलनाडु सरकार द्वारा स्पॉन्सर किए गए इस इवेंट में दुनिया भर के स्क्वैश खिलाड़ी इस प्रतिष्ठित ट्रॉफी के लिए मुकाबला करने के लिए एक साथ आएंगे, तमिलनाडु के डिप्टी चीफ मिनिस्टर उदयनिधि स्टालिन, जिनके पास स्पोर्ट्स पोर्टफोलियो भी है।

वेंकटेश प्रसाद केएससीए अध्यक्ष पद के लिए अकेले दावेदार के तौर पर उभरे

● एक चिन्नास्वामी स्टेडियम में कैंडिडेट की मौजूदगी में सत्यापन पूरा करने के बाद वैलिड लिस्ट जारी की

बेंगलुरु, वार्ता। भारत के पूर्व तेज गेंदबाज वेंकटेश प्रसाद मंगलवार को कर्नाटक स्टेट क्रिकेट एसोसिएशन (केएससीए) के अध्यक्ष पद की दौड़ में अकेले बड़े दावेदार के तौर पर उभरे, क्योंकि चुनाव अधिकारी द्वारा जारी वैध नॉमिनेटेड उम्मीदवारों की फ़ाइनल लिस्ट में दो बड़े उम्मीदवारों, केएन शांतकुमार और सीनियर एडमिनिस्ट्रेटर विनय मृत्युंजय के नाम नहीं थे। इन अचानक हुई चूकों ने चुनावी माहौल को पूरी तरह बदल दिया, यह उस दिन हुआ जब कल्पना वेंकटचर, जो अकेली दूसरी बड़ी दावेदार थीं, ने कथित तौर पर अध्यक्ष पद की दौड़ से अपना नाम वापस लेने की घोषणा की, यह कहते हुए कि वह प्रसाद के खिलाफ़ चुनाव नहीं लड़ना चाहतीं, जिन्हें उन्होंने एक मजबूत लीडर बताया। कर्नाटक हाई कोर्ट के रिट पिटीशन नंबर 34890/2025 के निर्देश पर जस्टिस सुभाष बी अदी की देखरेख में नॉमिनेशन की स्क्रूटनी की गई। इसमें कई पोस्ट के कैंडिडेट को क्लियर कर दिया गया, लेकिन शांतकुमार - जो शुरू में प्रेसिडेंट पद के उम्मीदवार थे, और मृत्युंजय, जो सेक्रेटरी पद के लिए चुनाव लड़ रहे थे, की गैरमौजूदगी के लिए कोई वजह नहीं बताई गई। यह अभी साफ नहीं है कि उनके नॉमिनेशन रिजेक्ट किए गए या वापस ले लिए गए, और मंगलवार को कोई ऑफिशियल सफाई जारी नहीं की गई। इलेक्टोरल ऑफिसर डा. बी- बसवराजू, आईएएस (रिटायर्ड) ने एम- चिन्नास्वामी स्टेडियम में कैंडिडेट की मौजूदगी में वेरिफिकेशन पूरा करने के बाद वैलिड लिस्ट जारी की। ऑनरेरी वाइस प्रेसिडेंट के पद के लिए, पांच कैंडिडेट को मंजूरी दी गई है: डी'विरियोड सिवप्पा, संतोष मेनन, सुजीत सोमसुंदर बी, कल्पना वेंकटचार और बी- एन- मधुकर। ऑनरेरी सेक्रेटरी की रेस में ईएस जयराम, सुजीत सोमसुंदर और संतोष मेनन हैं, जबकि जॉइंट सेक्रेटरी के लिए बीके रवि, एवी शशिधर और अविनाश वैद्य

2026 टी-20 विश्व कप

15 फरवरी को होगी भारत-पाक की भिड़ंत

● भारत और पाकिस्तान के ग्रुप में अमेरिका नीदरलैंड और नामिबिया को रखा गया है

मुम्बई, वार्ता। 2026 टी-20 विश्व कप में भारत और पाकिस्तान की भिड़ंत 15 फरवरी को कोलंबो में होगी। टूर्नामेंट के आधिकारिक कार्यक्रम की घोषणा मंगलवार को आईसीसी मुंबई में करेगी। 2025 एशिया कप में भारत और पाकिस्तान के बीच काफी गर्म माहौल में मैच खेले गए थे और इसके बाद ए दोनों टीमें पहली बार भिड़ती हुई नजर आएंगी। यह मैच आर प्रेमदासा स्टेडियम में खेला जाएगा जो टूर्नामेंट में भारत का ग्रुप स्टेज का तीसरा मैच होगा। ईएसपीएन क्रिकइंफो को पता चला है कि भारत और पाकिस्तान के ग्रुप में अमेरिका, नीदरलैंड और नाम. ीबिया को रखा गया है। 7 फरवरी को मुंबई में भारत अपना पहला ग्रुप स्टेज मैच अमेरिका के खलिाफ खेलेगा और यही टूर्नामेंट का पहला दिन भी होगा। 12 फरवरी को दिल्ली में नामीबिया, फिर पाकिस्तान और 18 फरवरी को अहमदाबाद में नीदरलैंड्स के खलिाफ आखरिरी ग्रुप स्टेज मैच खेलेंगे। ग्रुप स्टेज के दौरान टूर्नामेंट में प्रति दिन तीन मैच खेले जाएंगे। 7 फरवरी से 8 मार्च तक चलने वाले 2026 टी-20 विश्व कप को भारत और श्रीलंका मिलकर होस्ट करने वाले हैं जिसमें पाकिस्तान अपने सारे मैच कोलंबो या कैंडी में खेल सकता है। फ़ॉर्मेट को 2024 जैसा ही रखा गया है जिसमें 20 टीमों को चार ग्रुप में बांटा जाएगा। हर ग्रुप से टॉप-2 टीमें सुपर -8 में प्रवेश करेंगी जहां फिर से उन्हें दो ग्रुपों में बांटा जाएगा। सुपर-8 के ग्रुपों में टॉप-2 पर रहने वाली टीमें सेमीफ़ाइनल में जगह बनाएंगी। यदि भारत ग्रुप स्टेज से आगे बढ़ता है तो उनके सुपर-8 के तीन मैच अहमदाबाद, चेन्नई और कोलकाता में होंगे। यदि वे अंतिम-4 में पहुंचे तो उनका सेमीफ़ाइनल मुंबई में होगा। ऐसा समझा जा रहा है कि आईसीसी ने कोलंबो या कोलकाता को दूसरे सेमीफ़ाइनल के लिए विकल्प में रखा है जिसका निर्णय इस बात पर निर्भर करेगा कि श्रीलंका या पाकिस्तान में से कोई सेमीफ़ाइनल में पहुंच रहा है या नहीं। यदि पाकिस्तान फ़ाइनल में पहुंचा तो इसे कोलंबो में खेला जाएगा अन्यथा फ़ाइनल अहमदाबाद में होगा। मेजबान भारत और श्रीलंका के अलावा टी-20 विश्व कप में भाग लेने वाली अन्य 18 टीमें हैं: अफगानिस्तान, ऑस्ट्रेलिया, बंगलादेश, इंग्लैंड, दक्षिण अफ्रीका, अमे. रिका, वेस्टइंडीज, न्यूजीलैंड, पाकिस्तान, आयरलैंड, कनाडा, इटली, नीदरलैंड, नामीबिया, जिम्बाब्वे, नेपाल, ओमान और यूएई। भारत मौजूदा डिफ़ेंडिग चैंपियन है, जिसने 2024 टी-20 विश्व कप के फ़ाइनल में बारबाडोस में दक्षिण अफ्रीका को हराकर खिताब जीता था।

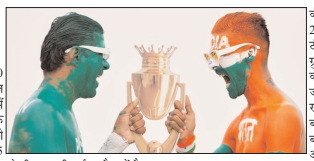

किसान की बेटी और अस्मिता साइक्लिस्ट पूजा बिश्नोई ने रचा इतिहास

● गेम्स के सातवें एडिशन में मेजबान राज्य राजस्थान के लिए मेडल जीतने वाली पहली एथलीट बन गई

जयपुर, वार्ता। मंगलवार की एक हवादार सुबह जयपुर-आगरा हाईवे पर, सुबह के ट्रैफिक की जानी-पहचानी शांति की जगह रेसिग टायरों की आवाज और दर्शकों का बढ़ता उत्साह ले रहा था। यह खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स 2025 का रोड साइक्लिग इवेंट था, और ठंडी हवा में साइकिल चला रहे राइडर्स में एक युवा महिला भी थी, जिसका स्टार्ट लाइन तक का सफर उन 30 किलोमीटर से कहीं ज्यादा लंबा और मुश्किल था, जिन्हें वह दौड़ने वाली थी। बीकानेर के एक छोटे से गांव की 22 साल की पूजा बिश्नोई, जो एक किसान की बेटी हैं और बिब नंबर-44 पहने हुए हैं, लाइनअप में सिर्फ़ एक और एथलीट नहीं थीं। वह हिम्मत और हिम्मत की कहानी थी-कोई ऐसा जिसने खड़ी सड़कों या तंग मोड़ों से कहीं ज्यादा बड़ी मुश्किलों को पार किया था। इवेंट के आखिर तक, वह महाराजा गंगा सिंह यूनिवर्सिटी को रिप्रेजेंट करते हुए, गेम्स के सातवें एडिशन में मेजबान राज्य राजस्थान के लिए मेडल जीतने वाली पहली एथलीट बन गई। महिलाओं का एलीट 30 किमी इंडिविजुअल टाइम ट्रायल कॉम्पिटिटिव साइक्लिग की तरह जबरदस्त शुरुआत के साथ शुरू हुआ-लेकिन सरप्राइज जल्दी ही आ गया। पूजा आगे निकल गई, और 10 किमी का पहला लैप लीड में पूरा किया। उसकी रिदम पक्की थी, उसका पोस्चर पक्का था, और उसका कॉन्फिडेंस सबको अपनी ओर खींच रहा था। ट्रैक पर कोच हैरान होकर एक-दूसरे को देख रहे थे। देखने वाले आगे झुक रहे थे जैसे उनकी सांसें उसे और आगे धकेल देंगी। ऐसा लग रहा था कि यह एक ऐसी कहानी है जो उलटफेर में बदलने का इंतजार कर रही है। लेकिन साइक्लिग एक ऐसा खेल है जहां अनुभव अक्सर अहम साबित होता है। गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी, अमृतसर के लिए राइडिग कर रही अनुभवी मीनाक्षी रोहिल्ला-पटियाला के नेशनल सेंटर ऑफ़ एक्सीलेंस की एक इंटरनेशनल साइक्लिस्ट, जिन्होंने एशिया कप और एशियन चैंपियनशिप में मेडल जीते हैं।

दीप्ति डब्ल्यूपीएल मेगा नीलामी में सबसे ज्यादा डिमांड वाली खिलाड़ी होंगी: वेदा

नई दिल्ली, वार्ता। जैसे-जैसे टीमें टाटा डब्ल्यूपीएल 2026 मेगा ऑक्शन की तैयारी कर रही हैं और अपनी टीम को मजबूत करना चाहती हैं, सभी की नजरें भारत की टॉप ऑलराउंडर दीप्ति शर्मा और भरोसेमंद बैट्समैन हरलीन देओल पर हैं, जो उनकी लाइन-अप को मजबूत करेंगी। जियो हॉटस्टार के शो 'मोस्ट वांटेड: टाटा डब्ल्यूपीएल 2026 ऑक्शन' में एक्सपर्ट अंजुम चोपड़ा और वेदा कृष्णमूर्ति ने दीप्ति शर्मा के ऑलराउंड असर और हरलीन देओल की वैल्यू को खास भारतीय खिलाड़ियों के तौर पर बताया, जिन पर हर फ्रेंचाइजी करीब से नजर रखेगी। अंजुम चोपड़ा ने अपनी राय साझा करते हुए कहा,ष्गुजरात जायंट्स को मेगा-ऑक्शन में दीप्ति शर्मा पर जरूर विचार करना चाहिए। दिल्ली कैपिटल्स भी उन्हें एक भारतीय खिलाड़ी के रूप में टारगेट कर सकती है जो बैटिंग और बॉलिंग दोनों को मजबूत करती है। गुजरात और दिल्ली के बाद यूपी वॉरियर्स उनकी सर्विस लेने में दिलचस्पी रखने वाली तीसरी टीम हो सकती है। गुजरात जायंट्स द्वारा हरलीन देओल को रिलीज किए जाने पर उन्होंने कहा कि मुझे हैरानी है कि गुजरात जायंट्स ने हरलीन देओल को रिलीज किया। वह एक मल्टी-टैलेंटेड भारतीय खिलाड़ी है जो थोड़ी बॉलिंग भी कर सकती है, और मुझे उम्मीद है कि वह अपनी बॉलिंग स्किल्स को और डेवलप करेगी। ऑक्शन में उसमें अच्छी दिलचस्पी होगी। दीप्ति शर्मा के साथ, वह एक ऐसी भारतीय खिलाड़ी होगी जिसे हर फ्रेंचाइजी टारगेट करेगी क्योंकि टीमें मजबूत भारतीय बैट्समैन और संभावित लीडरशिप ऑप्शन चाहती हैं।

कार्यालय नगरपालिका परिषद, रामनगर (नैनीताल)

पत्रांक: 3927/05-कर अनु0/2025-26 दिनांक- 24-11-25

आवश्यक सूचना

ई0 निविदा सूचना 3804 05-कर अनु0/25-26 दिनांक 10-11-2025 के द्वारा ठेका पशु पंजीकरण एवं पंजीकृत तहबाजारी शुल्क वसूली हेतु दिनांक 22-11-2025 तक आमंत्रित निविदा को शासनादेश सं0 1647/xxxi(15)G/2025-74(सा0)/2016 दिनांक 23-11-2025 द्वारा गुरु तेग बहादुर शहीद दिवस के राजकीय अवकाश तिथि दिनांक 24-11-2025 के स्थान पर दिनांक 25-11-2025 को घोषित कर दिये जाने के फलस्वरूप दिनांक 22-11-2025 तक प्राप्त ई0 निविदाओं को खोले जाने हेतु नियत दिनांक 25-11-2025 के स्थान पर प्राप्त ई0 निविदाओ को दिनांक 26-11-2025 को अपरान्ह: 11.00 बजे खोला जायेग, तदनुसार समस्त हितधारक सूचित हो।

अधिशासी अधिकारी
नगरपालिका परिषद, रामनगर।
(नैनीताल)

कार्यालय प्रभागीय वनाधिकारी, पिथौरागढ़ वन प्रभाग, पिथौरागढ़

e-mail: dfopithoragarh @rediffmail.com दूरभाष/फैक्स नं0-☎ (05964) 225234

पत्रांक 2764 / 4-6 पिथौरागढ़, दिनांक, 24 नवम्बर, 2025

धारचूला क्षेत्र अंतर्गत मानव-भालू संघर्ष की घटनाओं के संबंध में।

धारचूला वन क्षेत्र के जयकोट और पांगला ग्रामों में हाल में घटित मानव-भालू संघर्ष की घटनाओं को प्रभाग द्वारा अत्यंत गंभीरता से लिया गया है। घटनाओं की पुष्टि होते ही अधोहस्ताक्षरी द्वारा उप प्रभागीय वनाधिकारी, डीडीहाट को तत्काल जांच के निर्देश दिए गए थे। जाँच दौरान घटना स्थलों का स्थलीय निरीक्षण करने एवं ग्रामीणों, घायलों तथा प्रत्यक्षदर्शियों से विस्तृत जानकारी लेने पर निम्नलिखित तथ्य प्रकाश में आयेः-

1. पिछले कुछ दिनों में जयकोट और पांगला क्षेत्रों में भालू की गतिविधियों में वृद्धि देखी गई है।
2. ग्रामीणों के अनुसार, समीपस्थ क्षेत्र में चल रहे रोड कटान कार्य की आवाज एवं गतिविधियों से भालू संभवतः विचलित हुआ है।
3. जांच के दौरान संकेत मिले कि भालू अपने शावकों की सुरक्षा तथा भोजन की उपलब्धता के अनुरूप क्षेत्र में स्थान परिवर्तन कर रहा है, जिसके कारण उसकी आवाजाही गांवों के आसपास बढ़ी है।
4. सूचना मिलते ही विभागीय टीमें तत्काल घटनास्थलों पर पहुँचीं और घायलों को सहायता, गश्त बढ़ाने, कैमरा ट्रैप लगाने तथा जन-जागरूकता गतिविधियाँ प्रारंभ कर दी गई।

प्रभाग द्वारा की जा रही त्वरित कार्यवाहियाँ-

- संवेदनशील क्षेत्रों में दिन-रात गश्त को सुदृढ़ किया गया है।
- ग्रामीणों को सतर्कता, सुरक्षित मार्गों और वन्यजीवों के व्यवहार संबंधी महत्वपूर्ण जानकारी देने हेतु जागरूकता अभियान संचालित किए जा रहे हैं।
- भालू की गतिविधि पर निगरानी हेतु क्षेत्र में कैमरा ट्रैप तथा तकनीकी संसाधनों की संख्या बढ़ाई जा रही है।
- ग्राम स्तरीय वन सुरक्षा समितियों के साथ सूचना आदान-प्रदान प्रणाली को अधिक प्रभावी बनाया गया है।
- सभी घटनाओं एवं रोकथाम उपायों का विस्तृत प्रतिवेदन उच्च अधिकारियों को भेजा जा रहा है।

विशेष व्यवस्था

मानव-वन्यजीव संघर्ष की स्थिति को ध्यान में रखते हुए पिथौरागढ़ मुख्यालय से एक विशेष टीम को धारचूला भेजा जा रहा है। यह टीम स्थानीय कर्मचारियों के साथ समन्वय स्थापित करते हुए क्षेत्र में गश्त, निगरानी तथा आवश्यक निरोधक उपाय सुनिश्चित करेगी। टीम द्वारा भालू की गतिविधियों की वास्तविक समय पर जानकारी एकत्र की जाएगी तथा आवश्यकता पड़ने पर तत्काल नियंत्रक उपाय लागू किए जाएंगे।

जन-अपील

अधोहस्ताक्षरी क्षेत्रवासियों से अनुरोध करता है कि वन क्षेत्रों के आसपास सतर्क रहें। किसी भी वन्यजीव गतिविधि की सूचना तुरंत नियंत्रण कक्ष या निकटतम वन अधिकारी को दें। वन विभाग क्षेत्र की सुरक्षा और मानव-वन्यजीव संघर्ष की घटनाओं को न्यूनतम रखने के लिए पूर्णतः प्रतिबद्ध है।

प्रभागीय वनाधिकारी,
पिथौरागढ़ वन प्रभाग, पिथौरागढ़।

दिल्ली धमाके के बाद राज्य पुलिस प्रशासन पूरी तरह मुस्तैद

बॉर्डर पर यूपी-यूके पुलिस का चेकिंग अभियान

शाह टाइम्स संवाददाता

झबरेड़ा। झबरेड़ा सहारनपुर मार्ग उत्तराखंड व उत्तर प्रदेश पुलिस चेक पोस्ट बॉर्डर पर मंगलवार को पुलिस द्वारा बुलेट प्रूफ जैकेट पहनकर चौपहिया वाहनों की चेकिंग अभियान चला कर गहनता से चेकिंग की गई।

जानकारी के अनुसार झबरेड़ा से कुछ आगे सहारनपुर मार्ग उत्तर प्रदेश बॉर्डर पर पुलिस द्वारा मंगलवार को चेकिंग अभियान चला कर चौपहिया वाहनों की चेकिंग की गई। वहां से आने जाने वाले चौपहिया वाहनों को रोककर उनकी डिग्गी आदि खोलकर पुलिस द्वारा गहनता से चेकिंग की गई। थानाध्यक्ष अजय शाह का कहना है कि सर्दियों का मौसम शुरू होते ही आपराधिक गतिविधियां बढ़ जाती है। अपराधों पर अंकुश लगाने के लिए समय-समय पर चौपाहियां वाहन हो या दो पहिया वाहन उनकी चेकिंग आवश्यक है। थाना झबरेडा की सीमा कई स्थानों से उत्तर प्रदेश से मिल रही है। सर्दीयो का मौसम शुरू हो चुका है। कितनी ही बार उत्तर प्रदेश के सीमावर्ती गांव में अपराध कर कुछ अपराधी उत्तराखंड में आकर शरण ले लेते हैं। इसके

लिए भी समय-समय पर थाना देवबंद इंचार्ज तथा उत्तर प्रदेश में सहारनपुर मार्ग पर ग्राम खेड़ा मुगल में स्थित पुलिस चौकी इंचार्ज के साथ समय-समय पर बैठक करते हुए अपराधों पर अंकुश लगाने के लिए अपराधियों के बारे में एक दूसरे से जानकारी साझा की जाती है। सर्दी का मौसम शुरू होते ही उत्तर प्रदेश की सीमा पर लगने वाले गांव में भी पुलिस कि गश्त बढ़ा दी गई है। रात्रि में सीमाओं पर पुलिस द्वारा चेकिंग करते हुए विशेष ध्यान रखा जा रहा है। चेकिंग अभियान के अवसर पर थाना अध्यक्ष अजय शाह इकबालपुर पुलिस चौकी इंचार्ज नवीन चौहान लखनौता पुलिस चौकी इंचार्ज रोहित कुमार एस आई राजेंद्र सिंह मनोज कुमार तथा सुरेंद्र चौहान नसीमुद्दीन आदि शामिल रहे।

कार व बाइक की भिड़ंत में दंपति गंभीर, हायर सेंटर भर्ती

शाह टाइम्स संवाददाता

लक्सर। मोटरसाइकिल सवार को कार ने मारी भयंकर टक्कर मार दी जिसमें पति-पत्नी गंभीर रूप से घायल, हो गये। उन्हें हायर सेंटर रेफर किया है।

लक्सर-रायसी रोड पर मुंडा खेड़ा खुर्द के पास तेल सप्लाई करने वाली लाइन के समानांतर एक बड़ा सड़क हादसा हो गया। तेज रफ्तार कार सवार ने सामने से आ रही मोटरसाइकिल को भयंकर टक्कर मार दी, जिससे मोटरसाइकिल पर सवार पति-पत्नी गंभीर रूप से घायल हो गए। दुर्घटना के बाद कुछ स्थानीय लोगों ने घायलों को उठाकर नजदीकी प्राइवेट अस्पताल में भर्ती कराया। उनकी गंभीर हालत को देखते हुए, डॉक्टरों ने उन्हें तुरंत हायर सेंटर रेफर कर दियाघायल पति-पत्नी के परिजनों और रिश्तेदारों ने बताया कि नाजिश (पत्नी उस्मान) और उनके पति, जो बिजनौर जिले के रागढ़ पूरा के निवासी हैं, दवाई लेने के लिए लक्सर आ रहे थे। तभी लक्सर की ओर से आ रहे कार सवार ने उनकी साइड में आकर जबरदस्त टक्कर मार दी। इस दुर्घटना में पति-पत्नी के साथ मौजूद छोटे बच्चे को भी मामूली चोटें आईं नशे की आशंका हादसे वाली कार के भीतर दो शराब की बोतलें पड़ी मिली हैं, जिससे यह आशंका जताई जा रही है कि कार सवार व्यक्ति नशे की हालत में हो सकते थे। घायलों में महिला नाजिश की हालत ज्यादा गंभीर बताई जा रही है। अभी तक, महिला के परिजनों और रिश्तेदारों द्वारा पुलिस में कोई औपचारिक तहरीर (शिकायत) नहीं दी गई है।

विद्यालय में एनसीसी वरिष्ठ स्कंध की स्थापना

अनुशासन से ही मिलती है कामयाबी : कर्नल

शाह टाइम्स संवाददाता

रुड़की। 84 उत्तराखंड बटालियन एनसीसी, रुड़की के तत्वाधान में एक विश्वविद्यालय में शिविर के आठवें दिन विश्वविद्यालय में एनसीसी वरिष्ठ स्कंध की एक प्लाटून की स्थापना की गई। 84 उत्तराखंड बटालियन के अंतर्गत एनसीसी प्राप्त करने वाला 45वा विद्यालय है। आज स्थापना दिवस कार्यक्रम में बटालियन के कार्यवाहक कमान अधिकारी लेफ्टिनेंट कर्नल अमन कुमार सिंह द्वारा उपस्थित कैडेट्स को एनसीसी का उद्देश्य एकता और अनुशासन विषय पर एक लघु कहानी सुनाई और बताया कि अनुशासन से ही जीवन में हर पग पर कामयाबी प्राप्त की जा सकती है। उन्होंने बताया कि एनसीसी के माध्यम से विश्व विद्यालय के छात्र-छात्राएं भारतीय सेना में जाकर अपना भविष्य बनाने के नए अवसर खोज पाएंगे व एनसीसी 'सी' सर्टिफिकेट के माध्यम से एनसीसी स्पेशल एंट्री में भी प्रतिभाग करने का शुभ अवसर प्राप्त होगा। कार्यक्रम का शुभारंभ कमान अधिकारी द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। स्थापना दिवस के अवसर पर विश्वविद्यालय में एनसीसी की स्थापना को अध्यनरत छात्र-छात्राओं के लिए सेना में जाने का सुयोग्य अवसर बताया गया व उन्हें भविष्य में चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार रहने की भी सलाह दी गई। इस अवसर एनसीसी अधिकारी ने एनसीसी की स्थापना को मील का पत्थर होना बताया गया व कमान अधिकारी से एनसीसी की सीट्स बढ़ाने हेतु भी निवेदन

किया गया। इस अवसर पर बटालियन के ट्रेनिंग को-ऑर्डिनेटर रवि कपूर को पुष्प गुच्छ व स्मृति चिन्ह भेंट किया गया। स्थापना दिवस कार्यक्रम में बटालियन के सूबेदार मेजर अमर सिंह रावत की उपस्थिति रहे।

संविधान दिवस पर चमनलाल में युवा संसद प्रतियोगिता

शाह टाइम्स संवाददाता

लंढौरा। चमन लाल महाविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग द्वारा संविधान दिवस पर युवा संसद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। शासन के निर्देशानुसार प्रतियोगिता में महाविद्यालय की 55 छात्राओं ने भाग लेकर अपने उत्कृष्ट संसदीय कौशल एवं वक्तृत्व प्रतिभा का प्रदर्शन किया।

मंगलवार को कस्बे के चमनलाल महाविद्यालय में संविधान दिवस पर आयोजित युवा संसद प्रतियोगिता का शुभारंभ करते हुए मुख्य अतिथि एवं महाविद्यालय प्रबंधन समिति के अध्यक्ष पंडित रामकुमार शर्मा ने कहा कि युवा संसद प्रतियोगिता का उद्देश्य विद्यार्थियों को लोकतांत्रिक मूल्यों, संसदीय परंपराओं और भारतीय संसद की कार्यप्रणाली की गहन समझ प्रदान करना है। यह कार्यक्रम छात्रों को विवेकपूर्ण संवाद, वाद-विवाद, नीति-निर्माण प्रक्रिया तथा निर्णय क्षमता विकसित करने का अवसर देता है। इस अवसर पर प्राचार्य सुशील कुमार उपाध्याय ने छात्र-छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि युवा संसद कार्यक्रम युवाओं को राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाने, नेतृत्व क्षमता विकसित करने, तथा देश के भविष्य के जिम्मेदार नागरिक के रूप में उभरने हेतु सशक्त मंच प्रदान करता

है। कार्यक्रम के अंत में नोडल अधिकारी डॉ. निशु कुमार सहायक नोडल अधिकारी डॉ. धर्मेंद्र कुमार ने अतिथियों, प्रतिभागी छात्राओं तथा आयोजन से जुड़े सभी सदस्यों का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर महाविद्यालय के सचिव अरुण हरित, कोषाध्यक्ष अतुल हरित के अलावा महाविद्यालय के सभी शिक्षकगण एवं कर्मचारीगण मौजूद रहे।

अवैध खनन में तीन ट्रैक्टर टॉलियां सीज

शाह टाइम्स संवाददाता

रुड़की। ज्वाइंट मजिस्ट्रेट रूड़की के आदेश पर तहसील कर्मियों ने अवैध खनन के विरुद्ध प्रभावी रोकथाम अभियान चलाया। इस दौरान अलग अलग स्थानों पर खनन करते हुए तीन ट्रैक्टर ट्रालियों को अपने कब्जे में लिया। अवैध खनन गतिविधियों पर कठोर नियंत्रण एवं प्रभावी रोकथाम के उद्देश्य से ज्वाइंट मजिस्ट्रेट दीपक रामचंद्र शेट रूड़की के आदेश पर 24ख25 नवंबर 2025 की रात्रि में विशेष छापेमारी अभियान चलाया गया। इस दौरान अवैध खनन से संबंधित निम्न कार्रवाई की गई। जिसमें ग्राम बुक्कनपुर से अवैध खनन में प्रयुक्त एक ट्रैक्टर-ट्रॉली' को पकड़कर चौकी लंढौरा में सुपुर्द किया गया। गढ़ नगला इमरती से पकड़ी गई एक ट्रैक्टर-ट्रॉली को तहसीलदार आवास पर जमा कराया गया। ग्राम रामपुर से पकड़ी गई एक ट्रैक्टर-ट्रॉली को कोतवाली गंगनहर में सुपुर्द किया गया। अभियान में राजस्व निरीक्षक सुभाष जैमिनी, पीआरडी जोगेंद्र और सलीम अहमद शामिल रहे।ज्वाइंट मजिस्ट्रेट ने स्पष्ट निर्देश दिए हैं कि अवैध खनन के विरुद्ध ऐसी कार्रवाई आगे भी सतत रूप से जारी रहेगी तथा इसमें किसी भी प्रकार की शिथिलता बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

इनर व्हील क्लब ने शहर में रैली निकालकर बताए महिलाओं को उनके अधिकार

शाह टाइम्स संवाददाता

रुड़की। इनरव्हील क्लब द्वारा ऑरेंज कैंपेन के अंतर्गत महिला जागरूकता रैली का आयोजन किया गया।रैली को मेयर अनीता अग्रवाल ने झंडी दिखाकर रवाना किया। रैली का उद्देश्य महिलाओं को हिंसा के विरोध में जागरूक करना था। इनरव्हील क्लब 308, जोन-10 द्वारा ऑरेंज कैंपेन के अंतर्गत महिलाओं के विरुद्ध हिंसा के प्रति जागरूकता फैलाने हेतु एक प्रभावशाली रैली का आयोजन किया गया। रैली का शुभारंभ नगर निगम महापौर अनीता अग्रवाल ने हरी झंडी दिखाकर किया। उन्होंने क्लब सदस्यों के साथ पूरे सिविल लाइन बाजार में नारों के साथ उत्साहपूर्वक भाग लिया और समाज को यह सशक्त संदेश दिया कि "नारी किसी से कम नहीं है, और उसके सम्मान में ही समाज का मान है। रैली बोट क्लब तिराहे पर समाप्त हुई। रास्ते में मेथोडिस्ट कॉलेज की छात्राओं ने नुक्कड़ नाटक के माध्यम से महिला सशक्तिकरण और संवैधानिक अधिकारों पर जोरदार प्रस्तुति दी, जिसने उपस्थित जनसमूह को जागरूक किया। रैली के माध्यम से क्लब ने नारी सम्मान, सशक्तिकरण और हिंसा के विरुद्ध आवाज को जन-जन तक पहुँचाया। इस अवसर पर क्लब की सदस्या और समाज सेवी मनीषा बत्रा ने कहा "आज की नारी सब पर भारी। अगर महिलाओं को अपने पंख फैलाने का अवसर मिले, तो उनकी उड़ान आसमान तक जा सकती है। रैली में सुजाता आहूजा डॉ रमा भार्गव शशि कीर जोन 10 के पांचो क्लब के अध्यक्ष रजनी नागपाल

,निशा सुराणा , पूजा लूथरा , ममता सिंह, पूनम परिधा और अन्य सदस्य उपासना मित्तल, नीलम मधोक शूबी, तरण जीत, नेहा गुलाटी, कमलेश सरीन, साक्षी, रीतिका सोनिया, नीलू धवन, सांची सरीन, सरिता अरोड़ा, सरिता पुंडीर जनक कोहली, दिव्या, महिमा, शिल्पी, मोनिका पाल, सीमा जैन, ऋतु टंडन आदि उपस्थित रहे।

102 ग्राम अवैध चरस के साथ एक तस्कर दबोचा

शाह टाइम्स संवाददाता

पिरान कलियर। पुलिस ने चेकिंग के दौरान एक झुग्गी-झोपड़ी से एक व्यक्ति को 102 ग्राम अवैध चरस के साथ गिरफ्तार किया गया है।आरोपी के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट में मुकदमा दर्ज कर जेल भेज दिया। पिरान कलियर थाना प्रभारी रविन्द्र कुमार ने बताया कि धनौरी चौकी प्रभारी पुष्कर सिंह चौहान टीम के साथ सोमवार की रात को क्षेत्र में चेंकिग कर रहे थे।इस बीच अब्दाल शाह रोड पर सरकारी ट्यूबवेल के पास झुग्गी-झोपड़ियों की चेकिंग के दौरान एक व्यक्ति पुलिस को देखकर एक झोपड़ी से बाहर भागने की कोशिश करने लगा। जिसे मौके पर ही पकड़ लिया।घ्तलाशी लेने पर उसके पास 103 ग्राम चरस बरामद हुई। पूछताछ करने पर उसने अपना रैबर अली उर्फ चांद बाबा निवासी अब्दाल साहब रोड कलियर बताया।उसने बताया कि वह चरस पीता है और थोड़े मुनाफे के लिए इसकी बिक्री भी करता है।पुलिस ने आरोपी के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट में मुकदमा दर्ज कर जेल भेज दिया गया हैं।पकड़ा गया आरोपी पहले भी कई बार एनडीपीएस एक्ट में जेल जा जुका हैं।टीम में धनौरी चौकी प्रभारी पुष्कर सिंह चौहान, प्रकाश मनराल, सुनील चौहान आदि शामिल रहे।

पुलिस ने एक नशा तस्कर दबोचा 192 नशीले कैप्सूल बरामद

शाह टाइम्स संवाददाता

लक्सर। पुलिस के द्वारा एक अवैध नशा तस्कर गिरफ्तार किया है। उसके कब्जे से 192 अवैध नशे के कैप्सूल बरामद हुए हैं। राजीव रौथाण कोतवाली प्रभारी लक्सर ने जानकारी देते हुए बताया ड्रग्स फ्री देवभूमि मिशन 2025 को सफल बनाने के लिए एसएसपी हरिद्वार द्वारा पुलिस को निर्देशित किया था जिसमें पुलिस टीम गठित की गई। गठित पुलिस टीम के द्वारा उच्च अधिकारियों के आदेश पर 24 नवंबर 2025 को चेकिंग के दौरान सुल्तानपुर से एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया गया उसके कब्जे से 192 अवैध नशीले कैप्सूल बरामद हुए पूछताछ करने पर उस व्यक्ति ने अपना नाम शाहरुख पुत्र शराफत निवासी ग्राम मोहल्ला ढाब सुल्तानपुर कोतवाली लक्सर बताया।

वहीं दूसरी ओर 112 कंट्रोल रूम से सूचना प्राप्त हुई की कानहापुर में जमीन व खेत जोतने को लेकर दो पक्षों में विवाद हो रहा है। इस सूचना पर पुलिस फोर्स मौके पहुंचे तो पुलिस कर्मी को देखकर दूर खेत में जोताई कर रहे ट्रैक्टर व मौजूद अन्य लोग मौके से फरार हो गए जिनमें से एक व्यक्ति अजीत उपरोक्त को मौके से पकड़ लिया गया तथा अजीत के साथ विवाद करने वाला दूसरा व्यक्ति फरार हो गया इसके बारे में अजीत से पूछताछ की गई तो अजीत के द्वारा व्यक्ति का नाम अश्विनी पुत्र नामालूम निवासी कन्हापुर बताया

अधिकारियों ने एनसीसी कैडेट्स को आपदा प्रबंधन का दिया प्रशिक्षण

शाह टाइम्स संवाददाता

रुड़की। प्राधिकरण व जनपद आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, हरिद्वार के संयुक्त तत्वावधान में युवा आपदा मित्र योजना के अंतर्गत एनसीसी कैडेटों को आपदा प्रबंध न का प्रशिक्षण दिया 84 यूके बटालियन एनसीसी के लेफ्टिनेंट कर्नल अमन कुमार तथा आपदा प्रबंधन अधिकारी मीरा रावत द्वारा प्रतिभागी कैडेटों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए। अधिकारियों ने प्रशिक्षण के दौरान कैडेटों के अनुशासन एवं जागरूकता की सराहना की।कर्नल अमन ने छब्ब कैडेट्स को ट्रेनिंग में दी गई जानकारी को ओर अधिक पुख्ता व सुदृढ़ करने को उत्प्रेरित

किया। आपदा प्रबंधन अधिकारी ने एनसीसी कैडेट्स को युवा आपदा मित्र के रूप में चयनित होने पर बधाई देते हुए प्राप्त जानकारी को अपने व्यवहार में शामिल करने तथा किसी भी आपदा की स्थिति में स्वत: संज्ञान लेते हुए त्वरित रिस्पांस करते हुए सहयोग हेतुय आह्वान किया।

सहकारी समिति चुनाव में परिणाम घोषित होने के बाद नाम बदलने के आरोप

शाह टाइम्स संवाददाता

रुड़की। तेजजूपुर साधन सहकारी समिति लिमिटेड के चुनाव में चुनाव परिणाम घोषित होने के बाद नाम बदलने का आरोप एक व्यक्ति द्वारा चुनाव अधिकारी पर लगाया है। मामले की शिकायत जिलाधिकारी से की गई है।

जानकारी के अनुसार अवनीश कुमार पुत्र ब्रिजपाल सिंह निवासी बिन्दु खडक द्वारा जिलाधिकारी हरिद्वार को दी गई शिकायत में बताया गया कि जनपद हरिद्वार में सहकारिता के चुनाव गतिमान है। सहकारी समितियों के चुनाव परिणाम घोषित होने के बाद चुनाव अधिकारी शशि भूषण ने परिणाम में संशोधन कर नाम बदल कर कुछ लोगों को अनुचित लाभ देने का असंवैधानिक कार्य किया है। जिन संस्थाओं में नाम परिवर्तन किया है। शिकायतकर्ता ने शिकायत के साथ संस्था के नाम सूची सहित जिलाधिकारी को सौंपी है। जिसमें बताया गया है कि सहकारी संघ चुड़ियाला में क्रम संख्या तीन पर योगेश पुत्र हिरवा के स्थान पर ऋतु देवी पत्नी योगेश का नाम परिवर्तन किया है। क्रय विक्रय समिति मंगलौर में पहली सूची में कुल सं0 4 प्रतिनिधि को बढ़ाकर सं0 06 कर दी गई है। जिसमें दो नाम प्रदीप कुमार पुत्र सतीश कुमार व रश्मि पत्नी संदीप जोड़ दिए गए है।केन्द्रीय थोक उपभोक्ता भंडार में पुरानी सूची के अनुसार दो नाम थे जिसमें एक नाम रश्मि पत्नी संदीप जोड़ कुल संख्या 03 कर दी गई है।

जिला सहकारी बैंक लि0 हरिद्वार में भेजे गए प्रतिनधि में क्रम सं0 02 पर पुरानी सूची के अनुसार राजेन्द्र पुत्र रकमा को बदल कर संशोधित सूची में पुष्पा पत्नी राजेन्द्र किया गया है। शिकायतकर्ता के अनुसार निर्वाचन अधिकारी तेजूपुर साधन सहकारी समिति लि0 के द्वारा सूची में नामों को बदल कर आपराधिक कार्य किया है। उन्होंने जिलाधिकारी से मांग की है कि उक्त निर्वाचन अधिकारी के विरुद्ध कार्यवाही करते हुए बदले गए नामों को हटाकर पहली सूची के परिणाम को यथावत रखने के आदेश करने का कष्ट करें।

स्थापना दिवस पर आईआईटी रुड़की ने वैश्विक उपलब्धियों का किया सम्मान

शाह टाइम्स संवाददाता

रुड़की। आई.आई.टी. रुड़की ने अपने स्थापना दिवस पर पूर्व छात्रों की उत्कृष्टता को सम्मानित किया। विशिष्ट पूर्व छात्र पुरस्कार अकादमिक, उद्योग और समाज में आजीवन योगदान पर प्रकाश डालते हैं। 25 नवंबर, 2025: भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रुड़की (आईआईटी रुड़की) ने प्रतिष्ठित पूर्व छात्र पुरस्कार (डीएए) 2024 और 2025 की प्रस्तुति के माध्यम से अपने उत्कृष्ट पूर्व छात्रों को मान्यता देकर अपना स्थापना दिवस मनाया। संस्थान के प्रतिष्ठित मुख्य भवन के सामने आयोजित समारोह ने इस अवसर के लिए एक शांत और प्रेरक पृष्ठभूमि प्रदान की।

विशिष्ट पूर्व छात्र पुरस्कार शैक्षणिक या अनुसंधान उत्कृष्टता, इंजीनियरिंग या प्रौद्योगिकी नवाचार, सरकार या सार्वजनिक क्षेत्र में नेतृत्व, निजी क्षेत्र में नेतृत्व, उद्यमशीलता उत्कृष्टता और समाज की सेवा जैसी श्रेणियों में आईआईटी रुड़की (पूर्ववर्ती रुड़की विश्वविद्यालय) के पूर्व छात्रों द्वारा किए गए असाधारण योगदान को सम्मानित करते हैं। प्रतिष्ठित युवा पूर्व छात्र पुरस्कार (डी. वाई. ए. ए.) आगे 40 वर्ष से कम आयु के पूर्व छात्रों की उपलब्धियों को स्वीकार करता है। इसके अलावा, उत्कृष्ट सेवा पुरस्कार (ओएसए) आईआईटीआर के लिए संसाधनों के संवर्धन, अकादमिक और अनुसंधान में उत्कृष्टता को बढ़ावा देने और उद्यमशीलता की भावना को बढ़ावा देने में उत्कृष्टता को मान्यता देने के लिए प्रदान किए गए। इन प्रतिष्ठित पुरस्कारों के लिए नामांकन दुनिया भर के पूर्व छात्रों से आमंत्रित किए गए थे, जो विभिन्न क्षेत्रों में आईआईटी रुड़की की समृद्ध विरासत और दूरगामी प्रभाव को दर्शाते हैं।

प्रतिष्ठित छात्र पुरस्कार: 1. आई. अकादमिक/अनुसंधान उत्कृष्टता (2024): प्रो. कृष्णा

आर रेड्डी (1985-एम.ई.)-सिविल इंजीनियरिंग) डॉ. रेड्डी एक विश्वविद्यालय के विद्वान, प्रतिष्ठित शोधकर्ता और इलिनोइस शिकागो विश्वविद्यालय (यूआईसी) में सिविल और पर्यावरण इंजीनियरिंग के प्रोफेसर हैं वह सस्टेनेबल इंजीनियरिंग रिसर्च लेबोरेटरी (एसईआरएल) और जियोटेक्निकल एंड जियोएनवायरमेंटल इंजीनियरिंग लेबोरेटरी (जीएजीईएल) में निदेशक हैं। आईआईटी रुड़की के पूर्व छात्र और स्वर्ण पदक विजेता, डॉ. रेड्डी को पर्यावरण उपचार, अपशिष्ट प्रबंधन और एआई-संचालित स्थिरता समाधानों पर ध्यान केंद्रित करते हुए टिकाऊ भू-पर्यावरण इंजीनियरिंग में उनके काम के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त है। प्रो. वेंकट लक्ष्मी (1987-बी.ई. - सिविल इंजीनियरिंग) डॉ. वेंकट लक्ष्मी, पीएच.डी. प्रिंसटन विश्वविद्यालय से स्नातक, वर्जीनिया विश्वविद्यालय में इंजीनियरिंग के जॉन एल. न्यूकॉम्ब प्रोफेसर हैं। नासा के एक पूर्व शोध वैज्ञानिक, उनकी विशेषज्ञता जल विज्ञान, उपग्रह डेटा विश्लेषण और भूमि-वायुमंडल की अंत:क्रियाओं में फैली हुई है। अकादमिक/अनुसंधान उत्कृष्टता (2025): प्रो. गौरव शर्मा (1990-बी.ई. - ई एंड सी इंजीनियरिंग) प्रो. शर्मा रोचेस्टर विश्वविद्यालय में प्रोफेसर हैं, जो इलेक्ट्रिकल और कंप्यूटर इंजीनियरिंग, कंप्यूटर विज्ञान और बायोस्टैटिस्टिक्स विभागों में कार्यरत हैं। डेटा विज्ञान में उत्कृष्टता केंद्र में एक प्रतिष्ठित शोधकर्ता, उन्होंने पहले सेंटर फॉर इमर्जिंग एंड इनोवेटिव साइंसेज (सीईआईएस) का निर्देशन किया था। एक आईआईटी रुड़की के पूर्व छात्र, उन्होंने नॉर्थ कैरोलिना स्टेट यूनिवर्सिटी से पीएच.डी और एनसीएसयू और आईआईएससी बैंगलोर से मास्टर डिग्री प्राप्त की है। 2. आई. इंजीनियरिंग/प्रौद्योगिकी नवाचार में उत्कृष्टता (2024) डॉ. विनोद कुमार (1983-बी.ई., 1985-एम.ई. और 1991-पीएच.डी.-मेटलर्जिकल इंजीनियरिंग) डॉ. विनोद कुमार सेल के आर एंड डी सेंटर फॉर आयरन एंड स्टील, रांची में मुख्य महाप्रबंधक (उत्पाद) हैं। औद्योगिक अनुसंधान और विकास के 30 से अधिक वर्षों के अनुभव के साथ, उन्होंने रक्षा, ऊर्जा, रेलवे और बुनियादी ढांचा क्षेत्रों के लिए उन्नत स्टील के विकास का नेतृत्व किया है। इंजीनियरिंग/प्रौद्योगिकी नवाचार में उत्कृष्टता (2025) जय प्रकाश श्रीवास्तव (1985-बी.ई.)-मैकेनिकल इंजीनियरिंग) श्रीवास्तव भारत हैवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड (भेल) में निदेशक (इंजीनियरिंग, अनुसंधान और विकास) हैं ऊर्जा, औद्योगिक उपकरण और बुनियादी ढांचा क्षेत्रों में लगभग 37 वर्षों के अनुभव के साथ, उन्होंने प्रौद्योगिकी नवाचार, उत्पाद विकास और क्षमता निर्माण में परिवर्तनकारी पहलों का नेतृत्व किया है। 3. सरकार/सार्वजनिक क्षेत्र में नेतृत्व में उत्कृष्टता (2025)-डॉ. अनुपमा प्रकाश (1996-पीएच.डी.-भू विज्ञान) अलास्का फेयरबैंक्स विश्वविद्यालय में प्रोवोस्ट और कार्यकारी कुलपति डॉ. अनुपमा प्रकाश 2002 में यूएएफ में शामिल हुईं और उन्होंने प्रमुख अकादमिक और अनुसंधान नेतृत्व की भूमिकाएँ निभाई हैं। एक आईआईटी रुड़की पीएच.डी. भू -विज्ञान में, वह रिमोट सेंसिंग, प्राकृतिक संसाधन मानचित्रण, और भूमिगत कोयला खदान की आग में अपने शोध के लिए जानी जाने वाली भूभौतिकी की प्रोफेसर हैं। उन्होंने एनएसएफ-वित्त पोषित अलास्का ईपीएससीओआर कार्यक्रम जैसी प्रमुख पहलों का नेतृत्व किया है और अलास्का में अनुसंधान और शिक्षा को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। 4. आई. निजी क्षेत्र में नेतृत्व में उत्कृष्टता (2024)-डॉ. राजीव गौतम (1986-एम.एससी. और 1990-पीएच.डी.-जैव प्रौद्योगिकी) डॉ. राजीव गौतम हरिबा इंडिया के अध्यक्ष हैं और एक प्रतिष्ठित व्यापारिक नेता हैं जो अपनी रणनीतिक दृष्टि और उन्नत नेतृत्व के लिए जाने जाते हैं।

पुरस्कार विजेताओं को बधाई देते हुए, आईआईटी रुड़की के निदेशक प्रो. के.के. पंत ने कहा: ष्आईआईटी रुड़की के लिए इन प्रतिष्ठित व्यक्तियों को उनकी उत्कृष्ट उपलब्धियों और परिवर्तनकारी योगदान के लिए सम्मानित करना एक गौरव का क्षण है। ये सम्मान न केवल उनकी उत्कृष्टता को दर्शाते हैं, बल्कि संस्थान के स्थायी मूल्यों और शैक्षणिक शक्ति को भी दर्शाते हैं। मैं सभी पुरस्कार विजेताओं को बधाई देता हूँ और संस्थान के विजन को आगे बढ़ाने और एक बेहतर समाज के निर्माण में उनके निरंतर सहयोग की आशा करता हूँ।

शाह टाइम्स

सम्पादकीय

बुधवार, 26 नवम्बर 2025

एसआईआर का जाल

बिहार चुनाव के बाद देश के बारह राज्यों में एसआईआर का काम चल रहा है। इसकी जिम्मेदारी उन बीएलओ को दी गई है, जो लोकतंत्र का एक हिस्सा हैं। लेकिन सरकार उन्हें पूरी तरह नजरअंदाज कर रही हैं। ये बीएलओ घर-घर जाकर दस्तावेज इकट्ठा कर रहे हैं और मतदाता सूची को सही और अद्यतन बनाने में जुटे हैं। लोकतंत्र के सबसे बड़े पर्व चुनाव को और अधिक पारदर्शी बनाने के लिए यह प्रक्रिया बेहद जरूरी है। लेकिन जाल ऐसा हो गया है कि बीएलओ का उसमें से निकलना मुश्किल हो रहा है। नतीजतन देश के अलग अलग राज्यों में 16 बीएलओ की मौत हो गई। सरकार की इस प्रक्रिया पर विपक्ष सवाल उठा रहा है और आम जनता भी कई दिक्कतों का सामना कर रही है। इन सबके बीच हम उन बीएलओ को पूरी तरह नजरअंदाज कर रहे हैं, जो इस अभियान में सबसे सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। इन्हें लोकतंत्र के सच्चे सिपाही कहा जा सकता है, लेकिन यही सिपाही इस समय परेशान हैं, दबाव में हैं, डर में जी रहे हैं और कई ने तो अपनी जान भी गंवा दी है। ये सभी बीएलओ वर्तमान में किसी न किसी स्कूल में शिक्षक, शिक्षा मित्र के रूप में कार्यरत हैं। कई तो ऐसे हैं जो कई चुनाव देख चुके हैं, जिन्होंने हर बार बिना सवाल किए सरकार के आदेशों का हर बार पालन किया है, लेकिन इस बार जमीन पर मिसमैनेजमेंट ऐसी है कि ये शिक्षक भी त्रस्त हो चुके हैं। दूसरी तरफ अधिकारियों द्वारा काम समय से एसआईआर की प्रक्रिया पूरी करने के लिए दबाव बनाया जा रहा है। एक बीएलओ ने दावा किया कि उन्हें टारगेट पूरा न करने पर एफआईआर किए जाने की धमकी दी गई। चुनाव आयोग ने तो यहां तक कह दिया है कि यदि किसी बीएलओ ने सही प्रकार से काम नहीं किया, तो उसके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। बेहतर होता कि सरकार इन्हें पहले संसाधन उपलब्ध कराती और फिर कार्यभार सौंपती। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। नतीजा यह हुआ कि 21 नबंवर की रात से 22 नवंबर के मध्य प्रदेश में दो बीएलओ की बीमारी के कारण मौत हो गई। पश्चिम बंगाल में नदिया में बीएलओ रिंकू का शव घर की छत से लटका मिला। राज्य में एसआईआर से जुड़ा दूसरा सुसाइड, तीसरी मौत है। राजस्थान के जयपुर में रविवार को बीएलओ मुकेश जांगिड़ ने ट्रेन के आगे कूदकर जान दी। करौली में बीएलओ की मौत हो गई। सवाई माधोपुर में एक बीएलओ को हार्ट अटैक से मौत हो गई। मध्य प्रदेश में एक रात में 2 बीएलओ की मौत हो गई और एक लापता हो गया, जबकि दो को हार्ट अटैक आया। देश में एसआईआर का इतना विरोध हो रहा है, लेकिन सरकार के ऊपर कोई असर नहीं हो रहा है। इसी से दुखी पश्चिम बंगाल की सीएम ममता बनर्जी ने पैदल मार्च निकालना शुरू कर दिया है। सरकार को चाहिए कि एक बार फिर वह इस बारे में सोच और कोई सकारात्मक समाधान निकाले।

हमारे देश की आत्मा है संविधान

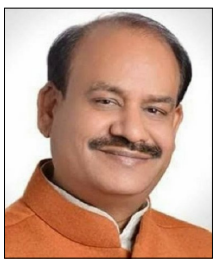

भारत का संविधान दुनिया के अन्य देशों के लिए भी मार्गदर्शक है, संविधान को जानो, अपनाओ और संविधान के अनुसार जियो, हमारे देश में बोली, भाषा, खानपान सहित अनेक विविधताएं हैं, लेकिन देश की समस्त विविधताओं को एक करने का काम हमारा संविधान करता है, हर विद्यालय, महाविद्यालय के शिक्षण पाठ्यक्रम में संविधान का अध्ययन होना चाहिए भारत का संविधान दुनिया के अन्य देशों के लिए भी मार्गदर्शक है और यह हमारे देश की आत्मा है।

-ओम बिरला
लोकसभा अध्यक्ष

यूपी विधानसभा चुनावों में ओवैसी का अखिलेश यादव से मुलाकात का वादा

रामगढ़ में बसपा उम्मीदवार के जुलूस में एआईएमआईएम के बैनर भी देखे गए। खबर है कि एआईएमआईएम ने अपने समर्थकों से उन जगहों पर बसपा को वोट देने की अपील की जहां उसका कोई उम्मीदवार नहीं था। जबकि बिहार में एआईएमआईएम का चंद्रशेखर आजाद और स्वामी प्रसाद मौर्य की पार्टियों के साथ गठबंधन था। बिहार में बसपा का कुल वोट प्रतिशत 1.62 रहा। ओवैसी ने उत्तर प्रदेश में अपना दल की पल्लवी पटेल और स्वामी प्रसाद मौर्य की राष्ट्रीय शोषित समाज पार्टी के साथ चुनावी गठबंधन के भी संकेत दिए हैं। गौरतलब है कि जून 2021 में एक समाचार चैनल की रिपोर्ट के बाद मायावती ने कहा था, ग्यह खबर पूरी तरह से झूठी, भ्रामक और निराधार है।

एम हसन

एआईएमआईएम के लिए उत्तर प्रदेश में अपनी जमीन मजबूत करना एक मुश्किल काम है क्योंकि उसे मुसलमानों को अपनी क्षमता का एहसास दिलाना होगा, जबकि सपा अभी तक इस समुदाय पर ऑक्टोपस जैसा नियंत्रण रखती है। यह देखना दिलचस्प होगा कि एआईएमआईएम, गठबंधन में या अकेले, भाजपा विरोधी वोटों को बांट पाती है या नहीं और इससे हिंदुत्व समर्थक ताकतों को एकजुट करने में भी मदद मिल सकती है, क्योंकि उत्तर प्रदेश 2027 के चुनावी संग्राम की ओर बढ़ रहा है।

बिहार विधानसभा चुनाव में 1.85 प्रतिशत वोटों के साथ पांच सीटें जीतने के बाद ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन के अध्यक्ष असदुद्दीन ओवैसी ने अब 2027 के यूपी विधानसभा चुनावों में समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव की राह में रोड़ा अटकाने की धमकी दी है। हालांकि, अपनी पार्टी के लिए मुस्लिम समर्थन की जमीनी हकीकत को अच्छी तरह से जानते हुए अखिलेश यादव ने अब तक ओवैसी के बयानों पर चुप्पी साधे रखी है। हालांकि बिहार में कांग्रेस के निराशाजनक प्रदर्शन के बाद, उत्तर प्रदेश में 2027 के भारतीय गठबंधन का स्वरूप अभी स्पष्ट नहीं है, फिर भी सपा 2027 में पार्टी के साथ चुनावी गठबंधन को लेकर बेहद सतर्क है। 2022 के विधानसभा चुनाव में सपा, कांग्रेस और राष्ट्रीय लोकदल (रालोद) तथा कुछ अलग-अलग गुटों के बीच एक व्यापक गठबंधन था। हालांकि, कांग्रेस केवल दो सीटें ही जीत पाई और रालोद आठ सीटें (2.9 प्रतिशत वोट) जीतने के बाद भाजपा में शामिल हो गई। लगभग 33 प्रतिशत वोटों के साथ सपा ने 111 सीटें जीती थीं। तब एआईएमआईएम का प्रदर्शन बेहद निराशाजनक रहा था। मुस्लिम समुदाय, जो सपा के साथ मजबूती से खड़ा था, ने एआईएमआईएम को पूरी तरह से नजरअंदाज कर दिया था। एआईएमआईएम ने 103 उम्मीदवार उतारे थे, लेकिन एक भी सीट नहीं जीत पाई और उसे केवल 0.49 प्रतिशत वोट मिले। उसे सबसे ज्यादा वोट 36460 (16.27 प्रतिशत) आजमगढ़ के मुबारकपुर से मिले थे, जहां से शाह आलम उर्फ गुड्डू जमाली मैदान में थे। गुड्डू जमाली विधानसभा में बसपा के नेता प्रतिपक्ष थे और चुनाव से पहले सपा में शामिल हो गए थे, लेकिन सपा से टिकट न मिलने पर वे एआईएमआईएम में शामिल हो गए। यह गुड्डू जमाली की व्यक्तिगत छवि ही थी जिसने एआईएमआईएम को भारी वोट दिलाए। इसलिए, बसपा, एआईएमआईएम और कुछ छोटे दलों के तीसरे मोर्चे की किसी भी संभावना की कल्पना करना अभी जल्दबाजी होगी। बसपा प्रमुख मायावती पहले ही यूपी चुनाव अकेले लड़ने का ऐलान कर चुकी हैं। 2022 में, एआईएमआईएम ने छोटे दलों के साथ गठबंधन करने की कोशिशें की थीं, लेकिन यह कोशिश कामयाब नहीं हो पाई। अब बिहार में बसपा और एआईएमआईएम के बीच बहुचर्चित अप्रत्यक्ष गठबंधन के बाद, जहां बसपा विजेता सतीश यादव रामगढ़ ने जीत के बाद एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में मायावती के साथ ओवैसी के पोस्टर लगाए थे, यूपी में दोनों दलों के सपा से मुकाबला करने के लिए एक साथ आने की कहानी गढ़ी जा रही है।

रामगढ़ में बसपा उम्मीदवार के जुलूस में एआईएमआईएम के बैनर भी देखे गए। खबर है कि एआईएमआईएम ने अपने समर्थकों से उन जगहों पर बसपा को वोट देने की अपील की जहां उसका कोई उम्मीदवार नहीं था। जबकि बिहार में एआईएमआईएम का चंद्रशेखर आजाद और स्वामी प्रसाद मौर्य की पार्टियों के साथ गठबंधन था। बिहार में बसपा का कुल वोट प्रतिशत 1.62 रहा। ओवैसी ने उत्तर प्रदेश में अपना दल की पल्लवी पटेल और स्वामी प्रसाद मौर्य की राष्ट्रीय शोषित समाज पार्टी के साथ चुनावी गठबंधन के भी संकेत दिए हैं। गौरतलब है कि जून 2021 में एक समाचार चैनल की रिपोर्ट के बाद मायावती ने कहा था, ग्यह खबर पूरी तरह से झूठी, भ्रामक और निराधार है। इसमें जरा भी सच्चाई नहीं है।ग मायावती ने तब 2022 में एआईएमआईएम के साथ गठबंधन की संभावना को सिरे से खारिज कर दिया था और वह अपने इस रुख पर अड़ी रहीं। लेकिन अब मायावती उत्तर प्रदेश में मुस्लिम समुदाय का समर्थन हासिल करने की पुरजोर कोशिश कर रही हैं और ओवैसी भाजपा की बी टीम के ठप्पे से छुटकारा पाने के लिए बेताब दिख रहे हैं। यह तभी संभव होगा जब वह बसपा के साथ गठबंधन करने में कामयाब हो जाएं। हालांकि, बसपा सूत्रों ने बताया कि वह अपने मूल वोट बैंक जाटवों की प्रतिक्रिया का आकलन कर रही हैं, जिनकी ग्रामीण इलाकों में मुसलमानों के साथ नजदीकियां बहुत अच्छी नहीं रही हैं, चूंकि इस बहुचर्चित गठबंधन का व्यापक प्रभाव पश्चिमी उत्तर प्रदेश में शाहजहांपुर से लेकर सहारनपुर तक लगभग 100 सीटों पर पड़ सकता है, इसलिए यह देखना दिलचस्प होगा कि क्या जाटव एआईएमआईएम को वोट देने के लिए तैयार होंगे। एआईएमआईएम की तरह, उत्तर प्रदेश का अल्पसंख्यक समुदाय भी बसपा को भाजपा की बी टीम मानता है।

नाम न छापने की शर्त पर एक सपा नेता ने कहा, इसलिए दो बी टीमें सपा से मुकाबला करने के लिए एक साथ आने की कोशिश कर रही हैं। इसमें कोई शक नहीं कि बसपा और एआईएमआईएम के बीच गठबंधन सपा में बड़ी खलबली मचा सकता है और मुस्लिम वोटों के बंटवारे की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता, लेकिन बसपा को छोड़कर छोटे दलों के साथ गठबंधन से ओवैसी को अपेक्षित परिणाम मिलने की संभावना कम है, जो अखिलेश यादव को सबक सिखाने को तैयार हैं। एआईएमआईएम ने बिहार महागठबंधन से गठबंधन के लिए संपर्क किया था और सिर्फ छह सीटें मांगी थीं, लेकिन यादव परिवार ने हिंदुओं के आक्रोश के डर से इनकार कर दिया। उत्तर प्रदेश में मौजूदा अत्यधिक सांप्रदायिक स्थिति के तहत, मायावती, जो पिछड़े समुदायों को लुभाने और खोए हुए दलित वोट को वापस पाने के लिए पुरजोर प्रयास कर रही हैं, ओवैसी से हाथ मिलाने से पहले गहराई से मूल्यांकन करेंगी, लेकिन दरवाजे के पीछे सौदा, जैसा कि बिहार में कुछ सीटों पर हुआ था, एक संभावना हो सकती है। उन्होंने पश्चिमी उत्तर प्रदेश में समर्थन आधार जुटाने के लिए 6 दिसंबर को नोएडा में एक रैली बुलाई है। पिछले कुछ चुनावों के दौरान बसपा के समर्थन में काफी गिरावट आई है, जो 2022 में लगभग 12 प्रतिशत और 2024 के लोकसभा चुनाव में घटकर नौ प्रतिशत रह गया। प्रतिशत में गिरावट दर्शाती है कि राज्य में जाटव भी भाजपा में चले गए हैं। इस प्रकार बसपा के लिए खोए हुए वोट को वापस लाना और फिर अपनी जीतने योग्य स्थिति में आना एक कठिन कार्य है। पिछले कुछ वर्षों में अधिकांश प्रमुख मुस्लिम नेता बसपा से अन्य दलों में चले गए हैं। एआईएमआईएम के लिए यह काम और भी मुश्किल है क्योंकि उसे मुसलमानों को अपनी क्षमता का एहसास दिलाना होगा, जबकि सपा अभी तक इस समुदाय पर ऑक्टोपस जैसा नियंत्रण रखती है। वरिष्ठ सपा नेता आजम खान की लंबी कैद और रामपुर में उनकी उच्च शिक्षा योजना को मिली क्षति ने समुदाय को काफी ष्भावनात्मक रूप से प्रभावितष्किया है। इसलिए, यह देखना दिलचस्प होगा कि क्या एआईएमआईएम, गठबंधन में या अकेले, भाजपा विरोधी वोटों को विभाजित कर पाती है और अप्रत्यक्ष रूप से हिंदुत्व समर्थक ताकतों को एकजुट करने में मदद कर पाती है, क्योंकि उत्तर प्रदेश 2027 के चुनावी समर की ओर बढ़ रहा है।

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

विपक्ष मुक्त लोकतंत्र के दुष्प्रयास अभी भी जारी

तनवीर जाफरी

7 जून 2013 को गोवा में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की चुनाव अभियान समिति की बैठक के दौरान जिस समय नरेंद्र मोदी को 2014 लोकसभा चुनावों के लिए अभियान समिति का अध्यक्ष मनोनीत किया गया उस समय उन्होंने अपने भाषण में कहा था कि कांग्रेस मुक्त भारत हमारा सपना होना चाहिए। इस आह्वान के फौरन बाद उन्होंने ट्विटर पर भी इसकी पुष्टि करते हुए लिखा था कि वरिष्ठ नेताओं ने मुझ में विश्वास जताया है। हम कांग्रेस मुक्त भारत का निर्माण करने में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ेंगे। उसके बाद से अब तक वे इसी बात को दूसरे शब्दों में अपनी चुनावी सभाओं या सार्वजनिक रैलियों आदि में कहते रहते हैं। जैसे कभी देश को ष्कांग्रेस संस्कृति से मुक्तिष्दिलाने की बात कभी पंजे से मुक्ति, कभी तुष्टिकरण से मुक्ति तो कभी परिवारवाद व भ्रष्टाचार से मुक्ति के रूप में देश के सबसे बड़े विपक्षी दल कांग्रेस को कोसकर विपक्ष मुक्त लोकतंत्र की अपनी हसरत की अभिव्यक्ति करते रहे हैं। हालांकि 2024 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस की 99 सीटें आने के बाद मोदी की इस हसरत पर विराम लग गया था। फिर भी कांग्रेस के दर्जनों नेताओं को भय लालच आदि के द्वारा अपने पाले में कर कांग्रेस को पूरी तरह कमजोर करने की कोशिश जरूर की गई। अब बिहार चुनाव परिणामों से उत्साहित भाजपा दिल्ली से लेकर कर्नाटक तक एक बार फिर कांग्रेस व विपक्ष को कमजोर करने की कोशिश करने लगी है। इसी उद्देश्य से पिछले दिनों प्रधानमंत्री मोदी ने सूरत में एक कार्यक्रम के दौरान फिर एक बयान दिया है। इस बार मोदी ने कांग्रेस व अन्य विपक्षी सांसदों की पैरवी करते हुए उनके राजनीतिक कैरियर के प्रति चिंता जाहिर की है। मोदी ने कहा कि कांग्रेस के युवा सां. सदों को पार्टी नेतृत्व बोलने नहीं देता, जिससे उनका राजनीतिक कैरियर बर्बाद हो रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि जब कांग्रेस और इंडिया गठबंधन के सांसद मुझसे मिलते हैं, तो वे कहते हैं, हम क्या कर सकते हैं? हमारा कैरियर खत्म हो रहा है। हमें संसद में बोलने का मौका ही नहीं मिलता। हर बार यही कहा जाता है कि संसद को ताला लगा दो। उन्होंने कांग्रेस पर और भी हमले किए। मोदी द्वारा विपक्षी सांसदों की फिक्र किए जाने के सन्दर्भ में यह सोचना जरूरी है कि अपनी ही पार्टी के शीर्ष नेताओं का बना बनाया कैरियर समाप्त करने या उन्हें अज्ञातवास अथवा राजनैतिक संन्यास पर भेजने के लिए मजबूर करने वाले प्रधानमंत्री मोदी को आखिर विपक्षी सांसदों के कैरियर की चिंता कैसे सताने लगी? गुजरात से लेकर दिल्ली तक कितने नेताओं को दरकिनार कर प्रधानमंत्री की कुर्सी तक पहुंचने वाले मोदी को विपक्षी सांसदों के कैरियर की चिंता सताने लगी? लाल कृष्ण आडवाणी ने तो खुद मोदी जी का कैरियर बचाने में उनकी मदद की थी। याद कीजिए 2002 के गुजरात दंगों के बाद तो तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई ने मोदी को गुजरात के मुख्यमंत्री पद से हटाने की ठान ली थी। उस समय आडवाणी ने ही मोदी का साथ देकर इन की कुर्सी बचाई थी। बाद में मोदी ने आडवाणी जी को कहां पहुंचा दिया? जिनके पैर छुआ करते थे उन्हें ऐसे मार्ग दर्शन मंडल में भेज दिया जहां से मार्ग दर्शन लेने की किसी को जरूरत ही नहीं होती? मुरली मनोहर जोशी का वाराणसी से टिकट काट कर पहले खुद चुनाव लड़ा बाद में उन्हें भी मार्ग दर्शन मंडल का रास्ता दिखा दिया? मार्गदर्शन मंडल के बारे में बताया गया कि 75 की आयु पार करने वालों को इसमें स्थान मिलेगा परन्तु स्वयं 1950 में जन्मे मोदी भी आज 75 वर्ष की आयु पार कर चुके हैं।

तो क्या 75 के नाम पर अपने अनेक वरिष्ठ नेताओं का कैरियर चौपट करने वाले मोदी जी को स्वयं अपनी आयु 75 होने पर मार्गदर्शक मंडल का रास्ता नजर नहीं आता? केंद्र में 79 वर्षीय जीतन राम मांझी मंत्री बनाए जा सकते हैं। 83 वर्षीय आनंदीबेन पटेल व 81 वर्षीय आचार्य देवव्रत राज्यपाल बनाए जा सकते हैं परन्तु सुब्रमण्यम स्वामी, यशवंत सिन्हा, शत्रुघ्न सिन्हा, अरुण शौरी जैसे नेताओं के कैरियर की कोई फिक्र नहीं? ऐसे और भी अनेक उदाहरण हैं जो यह दर्शाते हैं कि मोदी को अपने राजनैतिक कैरियर के सिवा किसी और के राजनैतिक कैरियर की कोई फिक्र नहीं होती। लंबे समय तक भाजपा में रहने वाले शत्रुघ्न सिन्हा ने खुद कहा था कि भाजपा में अब लोकतंत्र नहीं, तानाशाही है। पूर्व केंद्रीय मंत्री आर के सिंह को बिहार चुनाव परिणाम आते ही इसलिए पार्टी से निकाल दिया गया क्योंकि उन्होंने न केवल पार्टी के अपराधी नेताओं को पार्टी प्रत्याशी बनाने पर सवाल खड़ा किया था बल्कि अडानी पावर व नीतीश सरकार के बीच हुए कथित 62,000 करोड़ रूपए के बिजली घोटाले का भी खुलासा किया था और इस घोटाले की जांच की मांग की थी। इसलिए कांग्रेस या विपक्षी सांसदों के कैरियर को लेकर चिंतित होना दरअसल उनके कैरियर की चिंता करना नहीं बल्कि अपनी इन कथित चिंताओं का प्रदर्शन कर कांग्रेस व विपक्ष को कमजोर करने की कोशिश मात्र है। कुछ ऐसी ही कोशिशें इन दिनों लालू यादव के परिवार में पड़ी पारिवारिक फूट को लेकर देखी जा रही हैं। यहां भी लालू-तेजस्वी का विरोध करने वाले परिवार के सदस्यों को हवा देने की खबरें आ रही हैं।

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

विभिन्न धर्मों व संस्कृतियों को समाहित करता है भारतीय संविधान

अतुल गोयल

26 नवम्बर को भारतीय संविधान दिवस मनाया जाता है, जो वास्तव में भारत के लोकतांत्रिक स्वाभिमान का उत्सव है। संविधान सभा ने इसी दिन वह महान दस्तावेज अपनाया था, जिसने हर नागरिक को समान अधिकार, स्वतंत्रता, न्याय और गरिमा का आश्वासन दिया। डॉ. भीमराव अम्बेडकर की दूरदर्शिता और संविधान सभा की सूझ-बूझ ने भारत को विश्व का सबसे बड़ा और सर्वाधिक प्रगतिशील संविधान दिया, जो आज भी हमारी राष्ट्रीय एकता और शक्ति का आधार है। भारतीय संविधान विश्व का सबसे लंबा लिखित संविधान है, जिसे 26 जनवरी 1950 को लागू किया गया था। इसे तैयार करने में करीब तीन वर्ष लंबी अवधि लगी थी। संविधान सभा की अध्यक्षता डॉ। राजेंद्र प्रसाद ने की थी, जिन्होंने इस महान दस्तावेज को अंतिम रूप दिया। डॉ। भीमराव अंबेडकर, संविधान सभा की मसौदा समिति के अध्यक्ष थे, जिन्हें 'भारतीय संविधान के निर्माता' के रूप में जाना जाता है। लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता और सामाजिक न्याय के सिद्धांतों पर आधारित हमारा संविधान न केवल नागरिकों के अधिकारों की सुरक्षा करता है बल्कि उनके कर्तव्यों को भी परिभाषित करता है। भारत के संविधान को लागू करने के लिए 26 जनवरी का दिन ही इसलिए चुना गया था क्योंकि 1930 में इसी दिन पूर्ण स्वराज्य की घोषणा की गई थी। हालांकि इसे स्वीकृत 26 नवम्बर 1949 को ही कर लिया गया था। इसीलिए 26 नवम्बर को ही 'संविधान दिवस' मनाया जाता है। यह अवसर हमें संविधान के प्रति सम्मान व्यक्त करने और इसके आदर्शों को बनाए रखने के लिए प्रेरित करता है। यह दिन हमें हमारे संविधान और उसकी विशेषताओं की याद दिलाता है। दरअसल भारतीय संविधान ने देश को एक ऐसा ढांचा प्रदान किया, जो लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता और न्याय के सिद्धांतों पर आधारित है। यह दिवस हमें संविधान निर्माताओं के योगदान और उनकी मेहनत को याद करने का अवसर देता है। संविधान निर्माण की मांग का इतिहास 19वीं सदी के अंत से ही शुरू हो गया था। सन् 1895 में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने यह मांग की थी कि भारत का संविधान भारतीयों द्वारा ही बनाया जाना चाहिए। उनके सहयोगियों द्वारा तैयार किए गए स्वराज्य विधेयक के प्रारूप को ब्रिटिश सरकार ने ठुकरा दिया था। वह पहली बार था, जब स्वतंत्र संविधान सभा के गठन की बात उठाई गई थी। 1922 में महात्मा गांधी ने कहा था कि भारत का राजनैतिक भविष्य भारतीय स्वयं तय करेंगे। उसी के तहत 1924 में पं। मोतीलाल नेहरू ने संविधान सभा के गठन की मांग उठाई। हालांकि, वह मांग भी अंग्रेजों द्वारा अस्वीकार कर दी गई थी। उसके बाद संविधान सभा की मांग लगातार उठती रही लेकिन ब्रिटिश सरकार उसे मानने के लिए तैयार नहीं थी। 1939 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने अपने अधिवेशन में यह प्रस्ताव पारित किया कि स्वतंत्र भारत के संविधान का निर्माण केवल संविधान सभा द्वारा ही किया जा सकता है। इसके बाद 1940 में ब्रिटिश सरकार ने उस मांग को स्वीकार किया कि भारत का संविधान भारत के लोगों द्वारा बनाया जाएगा। 1942 में ब्रिटिश सरकार ने भारत में संविधान निर्माण की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के लिए क्रिप्स कमीशन का गठन किया। क्रिप्स मिशन ने अपनी रिपोर्ट में कहा कि भारत में एक निर्वाचित संविधान सभा का गठन किया जाएगा, जो भारत के संविधान का प्रारूप तैयार करेगी। यह प्रस्ताव भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ। 9 दिसंबर 1946 को सच्चिदानंद सिन्हा की अध्यक्षता में संविधान सभा की पहली बैठक आयोजित की गई। हालांकि, मुस्लिम लीग ने अलग पाकिस्तान की मांग को लेकर उस बैठक का बहिष्कार किया। इसके बावजूद संविधान निर्माण की प्रक्रिया जारी रही। 11 दिसंबर 1946 को संविधान सभा की बैठक में डॉ। राजेंद्र प्रसाद को इसका स्थाई अध्यक्ष चुना गया। वे संविधान निर्माण की पूरी प्रक्रिया के दौरान इस पद पर बने रहे। उनकी अध्यक्षता में संविधान सभा ने अनेक महत्वपूर्ण निर्णय लिए और संविधान का प्रारूप तैयार किया। 14 अगस्त 1947 को भारत डोमिनियन की प्रभुत्ता सम्पन्न संविधान सभा ने पुन: बैठक की। उस बैठक में 29 अगस्त 1947 को संविधान निर्मात्री समिति का गठन किया गया और डॉ. भीमराव अंबेडकर को सर्वसम्मति से उसका अध्यक्ष नियुक्त किया गया।

डॉ. अंबेडकर को भारतीय संविधान का मुख्य शिल्पकार माना जाता है। संविधान प्रारूप समिति की बैठकें कुल 114 दिनों तक चली। संविधान निर्माण के लिए विभिन्न वर्गों, समुदायों और संगठनों के सुझावों को ध्यान में रखा गया। भारतीय संविधान के निर्माण में कुल 2 वर्ष, 11 माह और 18 दिन का समय लगा। इस कार्य पर कुल 63 लाख 96 हजार 729 रूपए का खर्च हुआ। यह अपने आप में एक विशाल और जटिल कार्य था, जिसमें संविधान सभा के सदस्यों ने दिन-रात कड़ी मेहनत की। संविधान निर्माण के दौरान संविधान सभा ने कुल 7635 सूचनाओं पर चर्चा की गई। भारत के संविधान को भारत की विविधता और एकता को ध्यान में रखते हुए तैयार किया गया, जो विभिन्न धर्मों, भाषाओं और संस्कृतियों को समाहित करता है। भारत का संविधान दुनिया का सबसे लंबा लिखित संविधान है, जिसमें विभिन्न विषयों को विस्तारपूर्वक शामिल किया गया है। संविधान में भारत को एक संघीय राज्य घोषित किया गया है, जिसमें केंद्र और राज्य सरकारों के बीच शक्तियों का विभाजन किया गया है। भारतीय संविधान नागरिकों को छह प्रमुख मूल अधिकार प्रदान करता है। यह अधिकार नागरिकों की स्वतंत्रता और समानता की गारंटी देते हैं। भारत में संसदीय प्रणाली अपनाई गई है, जिसमें कार्यपालिका विधायिका के प्रति उत्तरदाई होती है। भारतीय संविधान न्यायपालिका को स्वतंत्र और निष्पक्ष बनाए रखने की व्यवस्था करता है। संविधान में समय-समय पर संशोधन की व्यवस्था की गई है ताकि इसे समय के साथ प्रासंगिक बनाए रखा जा सके। भारत का संविधान लागू हुआ था और उसके बाद से संविधान में कई संशोधन किए गए हैं। अब तक इसमें 440 से भी अधिक अनुच्छेद और 12 अनुसूचियां शामिल हो चुकी हैं। भारतीय संविधान समय के साथ बदलते सामाजिक, आर्थिक, और राजनैतिक परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखते हुए संशोधित किया जाता रहा है। डॉ. भीमराव अंबेडकर भारतीय संविधान के प्रमुख शिल्पकार थे।

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

भारत की सख्ती के बाद चीन ने पल्ला झाड़ा

शंघाई एयरपोर्ट विवाद में नया मोड-बीजिंग ने अरुणाचल की महिला के साथ दुर्व्यवहार का किया खंडन

बीजिंग/नई दिल्ली। चीन ने शंघाई एयरपोर्ट पर अरुणाचल प्रदेश की एक भारतीय महिला को परेशान किए जाने के आरोपों को सख्ती से खारिज कर दिया है। बीजिंग में चीनी विदेश मंत्रालय ने कहा कि लंदन से जापान जा रही भारतीय नागरिक पेमो वांगजॉम थोंगडोक के साथ कोई दुर्व्यवहार, हिरासत या दबाव नहीं डाला गया। यह बयान ऐसे समय आया है जब घटना के बाद भारत ने बीजिंग और दिल्ली दोनों जगह चीन को कड़ा विरोधपत्र सौंपा है और साफ कहा है कि अरुणाचल प्रदेश भारत का अभिन्न हिस्सा है।

चीनी विदेश मंत्रालय की प्रवक्ता माओ निंग ने आरोपों को खारिज करने के साथ ही यह भी कहा कि थोंगडोक की यात्रा के दौरान चीनी इमिग्रेशन अधिका. रियों ने सिर्फ कानून और नियमों के अनुसार प्रक्रिया अपनाई। उन्होंने कहा कि न तो महिला को किसी जबरन कार्रवाई का सामना करना पड़ा और न ही उसे हिरासत में लिया गया। माओ निंग ने कहा कि जांच पूरी तरह कानूनी थी और कानून प्रवर्तन निष्पक्ष रहा। साथ ही उन्होंने दावा किया कि एयरलाइंस ने उन्हें आराम की सुविधा और भोजन भी उपलब्ध कराया। थोंगडोक, जो यूके स्थित भारतीय नागरिक हैं, 21 नवम्बर को लंदन से जापान जा रही थीं। उनका तीन घंटे का ट्रांजिट था, लेकिन उन्होंने आरोप लगाया कि चीनी अधिका. रियों ने उनका पासपोर्ट अमान्य बताकर

■ सीमा पर चीन लगातार बढ़ा रहा ताकत, हवाईपट्टी से लेकर रेल नेटवर्क तक बनाने में जुटा, हरकतें जारी

उन्हें रोक लिया। उनका कहना है कि यह इसलिए किया गया, क्योंकि उनके पासपोर्ट में जन्मस्थान अरुणाचल प्रदेश दर्ज है। सोशल मीडिया पर साझा किए गए अपने पोस्ट में उन्होंने बताया कि उन्हें 18 घंटे तक रोका गया और बार-बार पूछताछ की गई। उन्होंने कहा कि यह अनुभव उनके लिए अपमानजनक रहा।

दिल्ली में आधिकारिक सूत्रों ने बताया कि घटना के दिन ही भारत ने चीन को कड़ा डिमार्श जारी किया। भारत ने साफ कहा कि अरुणाचल प्रदेश 'निस्संदेह' भारतीय क्षेत्र है और वहां के लोग भारतीय पासपोर्ट पर दुनिया में कहीं भी यात्रा करने का पूरा अधिकार रखते हैं। भारतीय वाणिज्य दूतावास ने शंघाई में स्थानीय स्तर पर तुरंत दखल दिया और महिला को सहायता प्रदान की। दूतावास अधिकारियों की मदद से वह देर रात की उड़ान से शंघाई छोड़ सकीं। अरुणाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री पेमा खांडू ने घटना पर नाराजगी जताते हुए इसे अंतरराष्ट्रीय मानकों का उल्लंघन बताया। उन्होंने कहा कि एक भारतीय नागरिक के साथ ऐसा व्यवहार अस्वीकार्य है और यह घटना चीन के रवैये को उजागर करती है।

खांडू ने कहा कि इस तरह की कार्रवाई भारतीय नागरिकों की गरिमा को ठेस पहुंचाने वाली है और भारत को इसे गंभीरता से लेना चाहिए। उन्होंने प्रभावित महिला के साहस की भी सराहना की, जिन्होंने कठिन परिस्थितियों में भारतीय दूतावास से संपर्क किया। वहीं तिब्बत से लगती सीमा पर चीन की पीपुल्स लिबरेशन आर्मी (पीएलए) वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) के करीब लगातार अपनी स्थिति को मजबूत करने में जुटी हुई है। चीनी सेना ने इस इलाके में रसद केंद्र से लेकर संपर्क मजबूत करने के लिए सुविधाएं स्थापित की हैं। हाल ही में चीन ने तिब्बत में एक ड्रोन (मानवरहित हवाई वाहन) परीक्षण केंद्र की स्थापना की है। माना जा रहा है कि 4300 मीटर की ऊंचाई पर बने इस परीक्षण केंद्र में पीएलए और चीनी ड्रोन निर्माता को इन यूएवी के भीषण मौसम और उच्च ऊंचाई वाले हालातों में परीक्षण में मदद मिलेगी।

इस नई एयरफील्ड में एक 720 मीटर लंबी एक हवाईपट्टी, चार हैंगर्स और प्रशासनिक इमारतें शामिल हैं। गौरतलब है कि तिब्बत के पठार का पहाड़ी इलाका और भीषण मौसम सैन्य अभियानों और रसद पहुंचाने की कोशिशों में काफी चुनौतियां पैदा करता है। इस इलाके में तैनात पीएलए के नए रंगरूटों को कई बार ऊंचाई से होने वाली बीमारियों की वजह से अतिरिक्त ऑक्सीजन की जरूरत पड़ती है। चीन की ये हरकतें भारत की जमीनी सीमाओं तक ही सीमित नहीं हैं। दक्षिणी चीन सागर में उसने फिर से पाई गई जमीन पर सैन्य सुविधाएं स्थापित की हैं। इनमें हथियारों को स्थापिक करने से लेकर मुख्य इलाकों में लगातार उपस्थिति बनाए रखने जैसी चीजें शामिल हैं। अमेरिकी वायुसेना के अंतर्गत आने वाले चीन एयरोस्पेस अध्ययन संस्थान (सीएएसआई) की सितम्बर, 2025 की रिपोर्ट के मुताबिक तिब्बत के अंदर और बाहर परिवहन नेटवर्क के अभाव चीनी सेना की भारत की सीमा पर सैन्यबल तैनात करने में एक प्रमुख वजह है।

छत्तीसगढ़। बस्तर जिले के बुरुंडवाड़ा सेमरा गांव में बूथ लेवल अधिकारी (बीएलओ) मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के लिए गणना फॉर्म भरने में मतदाताओं की सहायता करते हुए।

इजरायली पीएम नेतन्याहू का भारत दौरा फिर टला

तेल अवीव। इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू इस साल के अंत में भारत की यात्रा पर आने वाले थे, लेकिन अब एक बार फिर उन्होंने अपनी इस यात्रा को टाल दिया है। उनकी यह यात्रा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात के लिए तय की गई थी। सूत्रों के अनुसार, यह कदम नई दिल्ली में हुए एक भयानक आतंकवादी हमले के बाद सुरक्षा कारणों से उठाया गया है। इस हमले में कम से कम 15 लोग मारे गए और दर्जनों लोग घायल हुए।

मीडिया रिपोर्ट की माने तो नेतन्याहू अब अगले साल नई तारीख तय करेंगे, जब सुरक्षा परिस्थितियों का आकलन हो जाएगा। बता दें कि इस बार को लगाकर इस साल इजरायली पीएम नेतन्याहू ने तीन बार भारत की यात्रा रद्द की है। पहले उन्होंने नौ सितम्बर को भारत यात्रा रद्द की थी। इसका कारण था इजरायल में 17 सितम्बर को होने वाले चुनाव

■ बेंजामिन नेतन्याहू अब अगले साल नई तारीख तय करेंगे

और उससे जुड़े कार्यक्रम। इसके पहले अप्रैल में भी उनकी यात्रा रद्द हो गई थी। नेतन्याहू का भारत यात्रा इजरायल में उनके वैश्विक स्वीकार्यता दिखाने के प्रयास के रूप में देखा जा रहा था। कारण है कि इस साल जुलाई में उनकी पार्टी ने नेतन्याहू की पीएम मोदी, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प और रूस के राष्ट्रपति पुतिन के साथ तस्वीर वाले पोस्टर लगाकर उनकी छवि को मजबूत करने की कोशिश की थी। हालांकि इस बात में भी कोई दोहराई नहीं है कि उनका चुनाव अभियान हमेशा से यह दिखाने पर केंद्रित रहा है कि वह दुनिया के नेताओं के साथ घनिष्ठ संबंध रखते हैं, जो कि इजरायल की सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण हैं।

संक्षिप्त समाचार

यूक्रेन शांति योजना पर रूस की प्रतिक्रिया

मॉस्को। रूस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने सोमवार को कहा कि यूक्रेन संकट के समाधान के लिए यूरोपीय संघ का शांति प्रस्ताव रूस को पता है, लेकिन इसके प्रावधान 'अरचनात्मक' माने जा रहे हैं। रूसी राष्ट्रपति के सहयोगी यूरी उशाकोव ने कहा कि इस शांति प्रस्ताव को लेकर बहुत सारी अटकलें लगाई जा रही हैं, लेकिन रूस केवल संयुक्त राज्य अमेरिका से सीधे प्राप्त जानकारी पर ही भरोसा करता है। उशाकोव ने कहा कि अलास्का में चर्चा किए गए प्रस्ताव के कई प्रावधान मॉस्को को स्वीकार्य हैं। रूसी मीडिया के अनुसार, तथाकथित 'यूरा. पीय प्रस्ताव' में अमेरिका द्वारा पहले प्रस्तावित 28-सूत्रीय शांति योजना में कई बड़े बदलाव किए गए हैं।

रूस के साथ ऊर्जा साझेदारी को मजबूत को तैयार चीन

बीजिंग। चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने कहा है कि उनका देश रूस के के साथ व्यापक ऊर्जा साझेदारी को मजबूत करने के लिए तैयार है। चीनी राष्ट्रपति ने राजधानी बीजिंग में चल रहे सातवें चीन-रूस ऊर्जा व्यापार फोरम के प्रतिभागियों को टेलीग्राम के माध्यम से यह संदेश भेजा। चाइना सेंट्रल टेलीविजन (सीसीटीवी) ने टेलीग्राम संदेश के हवाले से बताया कि चीन रूस के साथ मिलकर व्यापक ऊर्जा साझेदारी को और मजबूत करने तथा संयुक्त रूप से वैश्विक ऊर्जा उत्पादन को बढ़ाने के लिए काम करने को तैयार है। साथ ही, आपूर्ति श्रृंखला की स्थिरता तथा सुचारू संचालन बनाए रखने के लिए भी काम करने के लिए सहमत है।

ड्रोन हमले में मरने वालों की संख्या बढ़कर तीन हुई

मॉस्को। रूस के रोस्तोव इलाके में ड्रोन हमलों के बाद दो और लोगों की मौत हो गई, जिससे रविवार रात मरने वालों की कुल संख्या तीन हो गई। गवर्नर यूरी स्ल्यूसर ने यह जानकारी दी। स्ल्यूसर ने पहले कहा था कि रोस्तोव इलाके में यूक्रेनी आर्म्ड फोर्सेज के हमलों में घायलों की संख्या बढ़कर 10 हो गई है, जिसमें टैगानरोग में एक व्यक्ति की मौत हो गई। गवर्नर ने टेलीग्राम पर कहा कि दुर्भाग्य से डॉक्टर दो और लोगों को नहीं बचा पाए, वे अस्पताल में अपने घावों से मर गए।

इथियोपिया में 12 हजार साल बाद ज्वालामुखी फटा

अदीस अबाबा। इथियोपिया का हेली गुब्बी ज्वालामुखी 12 हजार साल बाद रविवार को फट गया। इस विस्फोट से उठने वाली राख और सल्फर डाइऑक्साइड करीब 15 किमी ऊंचाई तक पहुंच गई। यह लाल सागर पार करते हुए यमन और ओमान तक फैल गई।

सोमवार रात करीब 11 बजे यह राख इथियोपिया से 4300 किमी दूर भारत के राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, दिल्ली-एनसीआर और पंजाब तक फैल गई। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (आईडीएफ) ने कहा है कि राख के बादल मंगलवार शाम 7:30 बजे तक भारत से साफ हो जाएंगे और चीन की ओर बढ़ जाएंगे। इस गुबार की वजह से एअर इंडिया ने अपनी 11 उड़ानें रद्द कर दी थीं। एक्सपर्ट्स ने बताया था कि इस गुबार की ऊंचाई

■ राख का 15km ऊंचा गुबार उठा, 4300km दूर दिल्ली पहुंचा, एअर इंडिया की 11 उड़ानें रद्द

इतनी ज्यादा थी कि आम लोगों की जिंदगी पर इसका असर काफी कम हुआ। फिलहाल ज्वालामुखी शांत हो गया है, लेकिन विशेषज्ञों का कहना है कि शील्ड वोल्केनो में शुरुआती विस्फोट के बाद कभी-कभी दोबारा धमाके भी हो सकते हैं। वैज्ञानिकों को यह पता लगाने के लिए कि वहां क्या हो रहा है, सैटेलाइट तस्वीरों और रिमोट सेंसिंग तकनीक पर ही भरोसा करना पड़ रहा है। यह विस्फोट अफार इलाके में हेली गुब्बी ज्वालामुखी में हुआ। यह इतना पुराना और शांत ज्वालामुखी था कि आज तक इसका कोई रिकॉर्ड नहीं था।

पाकिस्तान ने की आधी रात अफगानिस्तान में 3 एयरस्ट्राइक

9 बच्चे और 1 महिला की मौत, तालिबान की चेतावनी: सही समय पर मुंहतोड़ जवाब देंगे

इस्लामाबाद। पाकिस्तान ने सोमवार को आधी रात अफगानिस्तान के तीन प्रांत खोस्त, कुनार और पक्तिका में एयरस्ट्राइक की। खोस्त पर किए गए हमले में 10 आम लोगों की मौत हो गई, जिनमें 9 बच्चे और एक महिला शामिल हैं। तालिबान के प्रवक्ता जबीउल्लाह मुजाहिद ने बताया कि खोस्त प्रांत के मुगलगई इलाके में रात करीब 12 बजे पाकिस्तानी विमानों ने एक घर पर बमबारी की। इस हमले में 5 लड़के, 4 लड़कियां और एक महिला की मौत हो गई।

वहीं कुनार और पक्तिका प्रांतों में पाकिस्तान के हमले और छापेमारी में चार नागरिक घायल हो गए। अफगानिस्तान का कहना है कि पाकिस्तान ने यह हमला करके इस्तांबुल में हुए सीजफायर करार को तोड़ा है। घटना के बाद मंगलवार को मुजाहिद ने कहा कि अफगानिस्तान सही समय पर इसका मुंहतोड़ जवाब देगा। उन्होंने सोशल मीडिया पर एक बयान में

■ खोस्त प्रांत के मुगलगई इलाके में रात करीब 12 बजे पाकिस्तानी विमानों ने एक घर पर बमबारी की: जबीउल्लाह

कहा कि इस्लामिक अमीरात इस हमले की निंदा करता है, अपने हवाई क्षेत्र, क्षेत्र और लोगों की रक्षा करना उसका अधिक. ार है। इस घटना पर पाकिस्तान की सेना और विदेश मंत्रालय की ओर से अभी तक कोई प्रतिक्रिया नहीं आई है। यह हमला ऐसे समय हुआ जब पाकिस्तान खुद भी सुरक्षा चुनौतियों से जूझ रहा था। इसी शाम पाकिस्तान के पेशावर शहर में फ्रंटियर कांस्टेबुलरी मुख्यालय पर हमला हुआ। यह मुख्यालय सैन्य कैंट क्षेत्र के पास स्थित है। इस आत्मघाती हमले में 6 लोग मारे गए, जिनमें 3 कमांडो और 3 हमलावर शामिल हैं। कई लोग घायल भी हुए हैं। पुलिस की शुरुआती रिपोर्ट के मुताबिक हमलावर खुद को चादर से ढककर पहुंचा था। उसने चौकी पर पहुंचते ही खुद को उड़ा लिया। इसमें 3 पुलिसकर्मी मारे गए। सिक्योरिटी फोर्स के हेडक्वार्टर पर हमले के बाद इलाके में धुआं फैल गया। पाकिस्तान और अफगानिस्तान के बीच हाल के महीनों में तनाव काफी बढ़ा है। अक्टूबर में दोनों देशों की सेनाओं के बीच हुई झड़पों में दर्जनों लोग मारे गए थे, जो 2021 में तालिबान की सत्ता वापसी के बाद सबसे भीषण हिंसा थी। दोनों देशों ने अक्टूबर में दोहा में युद्धविराम समझौते पर हस्ताक्षर किए थे, लेकिन इसके बाद तुर्की में हुई शांति वार्ता किसी लंबे समझौते पर नहीं पहुंच सकी। मतभेद उन उग्रवादी संगठनों को लेकर सामने आए, जिन्हें पाकिस्तान अपने खिलाफ बताता है और जो अफगानिस्तान में पनाह लेते हैं। पाकिस्तान बार-बार अफगानिस्तान पर आरोप लगाता है कि वह पाकिस्तान-तालिबान (टीटीपी) को अपनी धरती से पाकिस्तान में हमले करने दे रहा है। हालांकि, काबुल बार-बार इन आरोपों से इन्कार करता रहा है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, अफगान सरकार सीधे तौर पर टीटीपी के साथ मिलकर काम नहीं कर रही, लेकिन वह इसे रोकने के लिए भी कोई कदम नहीं उठा रही है। तालिबान सरकार को डर है कि अगर वह टीटीपी पर सख्ती करेगी तो उसके अंदर बगावत हो सकती है।

खालिस्तानी आतंकियों ने तिरंगे का किया अपमान

'भारतीय पीएम को मारो' के नारे लगाए, बच्चे-प्रेग्नेंट महिलाएं शामिल

ओटावा। कनाडा के ओटावा में खालिस्तान जनमत संग्रह के दौरान खालिस्तानी आतंकियों ने भारतीय ध्वज शितिरंगेश का अपमान किया। इन लोगों ने भारतीय पीएम और अधिकारियों को मार डालने के नारे लगाए। ये लोग एक अनौपचारिक और गैर-कानूनी वोटिंग में हिस्सा ले रहे थे, जिसे 'खालिस्तान रेफरेंडम' कहा जा रहा है।

इस वोटिंग में एक सवाल पूछा जा रहा था कि श्क्या पंजाब को भारत से अलग करके एक नया आजाद देश खालिस्तान बनाया जाना चाहिए? मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, हजारों लोगों ने इसमें भाग लिया। लोग सुबह से शाम तक पीले रंग के खालिस्तान झंडे हाथ में लेकर करीब दो किलोमीटर लंबी कतार में खड़े रहे। इसका आयोजन आतंकवादी संगठन सिख फॉर जस्टिस (एसएफजे) ने किया था। आयोज. कों का दावा है कि ओंटेरियो, अल्बर्टा, ब्रिटिश कोलंबिया और क्यूबेक प्रांतों से

■ पंजाब को अलग करने पर वोटिंग की

53000 से ज्यादा खालिस्तान समर्थक वोट डालने आए। लोग छोटे-छोटे बच्चे, प्रेग्नेंट महिलाओं और बुजुर्गों के साथ आए। वोटिंग स्थल मैकनैब कम्युनिटी सेंटर के बाहर खालिस्तान समर्थकों ने भारत के प्रधानमंत्री, गृह मंत्री और दूसरे नेताओं के खिलाफ 'मार डालो-मार डालो' जैसे नारे लगाए गए। लोगों को भारत के खिलाफ उकसाया। कनाडाई पीएम मार्क कार्नी ने हाल ही में दक्षिण अफ्रीका में जी-20 समिट के दौरान पीएम मोदी से मुलाकात की थी। एसएफजे ने इस बात पर सवाल उठाया कि जब कनाडा में भारत-विरोधी और अलगाववादी गति. विधियां हो रही हैं, तब कनाडाई पीएम भारतीय पीएम से क्यों मिले। भारत सरकार ने इस आयोजन को अवैध बताया और कहा कि यह भारत की संप्रभुता पर हमला है। कनाडा की धरती का इस्तेमाल भारत तोड़ने के लिए किया जा रहा है। दूसरी तरफ भारत और कनाडा ने ट्रेड डील के लिए फिर से बातचीत शुरू करने का ऐलान किया है। दो साल के तनाव के बाद अब दोनों देश व्यापार समझौते पर बातचीत के लिए तैयार हुए हैं। यह फैसला जोहांसबर्ग में जी-20 समिट के दौरान पीएम मोदी और कनाडा के प्रधानमंत्री मार्क कार्नी की द्विपक्षीय मुलाकात में लिया गया है। ऐलान के बाद कॉमर्स एंड इंडस्ट्री मिनिस्टर पीयूष गोयल ने सोमवार को कहा कि 2030 तक दोनों देशों के बीच व्यापार 50 बिलियन डॉलर (4.45 लाख करोड़) तक ले जाने का टारगेट है।

चीनी अंतरिक्ष यान का सफल प्रक्षेपण

बीजिंग। चीन ने मंगलवार को स्पेस स्टेशन से जुड़े अपने मलबे से टकराए स्पेसशिप की जगह एक नया स्पेसक्राफ्ट सफलतापूर्वक लॉन्च किया, जिससे उसके क्रू प्रोग्राम का पहला इमरजेंसी लॉन्च पूरा हो गया। नया लॉन्च किया गया शेनझोउ-22 स्पेसशिप, जो तियांगोंग स्पेस स्टेशन से डॉक किया गया है, ऑर्बिट में मौजूद तीन एस्ट्रोनॉट्स के लिए एक वापसी का स्पेसक्राफ्ट देगा, जो अगले साल अप्रैल में लौटने वाले हैं। पिछले क्रू ने 14 नवम्बर को अपने वापसी स्पेसक्राफ्ट का इस्तेमाल घर लौटने के लिए किया था, जब उनका स्पेसशिप मलबे से टकरा गया था, जिससे व्यू विंडो खराब हो गई थी और वह असुरक्षित हो गई थी। इससे मौजूदा तीन सदस्यों वाले क्रू के पास इमरजेंसी की स्थिति में

■ आईएसएस से चालक दल की वापसी का मिशन अगले वर्ष अप्रैल में वापस लौटेंगे यात्री

बचने का कोई सुरक्षित तरीका नहीं बचा। बता दें कि चीन हर छह महीने में अपने स्पेस स्टेशन के क्रू को रोटेट करता है।

चाइना मैन्ड स्पेस एजेंसी (सीएमएसए) ने कहा कि मंगलवार को, बिना पायलट वाला शेनझोउ-22 स्पेसशिप स्पेस फूड, मेडिकल सप्लाई, ताजे फल और सब्जियों का कार्गो ले गया, साथ ही शेनझोउ-20 स्पेसशिप की टूटी हुई खिड़की को ठीक करने के लिए डिवाइस भी थे। इसका इस्तेमाल अगले साल अप्रैल में मौजूदा तीन मेंबर क्रू को वापस लाने के लिए किया जाएगा। सीएमएसए ने कहा कि क्षतिग्रस्त स्पेसशिप को रिपेयर किया जाएगा और आखिरकार यह धरती पर वापस आएगा, लेकिन सिर्फ कार्गो के साथ और बिना एस्ट्रोनॉट्स के। शेनझोउ-22 स्पेसशिप को लॉन्ग मार्च-2एफ वाई22 कैरियर रॉकेट के ऊपर, उत्तर-पश्चिम चीन के जिउक्वान सैटेलाइट लॉन्च सेंटर से लॉन्च किया गया था। लॉन्च के लगभग 10 मिनट बाद, स्पेसशिप रॉकेट से अलग हो गया और अपनी तय ऑर्बिट में चला गया और बाद में स्पेस स्टेशन से डॉक हो गया। सीएमएसए ने लॉन्च मिशन को पूरी तरह सफल बताया। चीन ने अपना स्पेस स्टेशन तब बनाया जब उसे कथित तौर पर इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन (आईएसएस) से बाहर कर दिया गया था, क्योंकि इस बात की चिंता थी कि चीन का स्पेस प्रोग्राम उसकी मिलिट्री की तरफ से कंट्रोल किया जाता है।

भारत में बचे 5800 मेनाशे यहूदियों को ले जाएगा इजरायल

तेल अवीव। इजराइल ने भारत के पूर्वोत्तर राज्यों में रहने वाले बनेई मेनाशे समुदाय के बचे हुए 5800 यहूदियों को अपने यहां बसाने का फैसला किया है। इन्हें अगले 5 साल में इजराइल ले जाया जाएगा।

ज्यूइश एजेंसी फॉर इजराइल के मुताबिक, सरकार ने रविवार को इस प्लान को मंजूरी दी है। इसके तहत 2030 तक पूरी कम्युनिटी को इजराइल में बसाया जाएगा। इनमें से 1200 लोगों को 2026 में बसाने के लिए पहले ही मंजूर किया जा चुका हैं। ये वे लोग हैं जिनके करीबी रिश्तेदार पहले से इजराइल में बस चुके हैं। 2005 में इजराइल के धार्मिक गुरु लोमो अमार ने इस समुदाय को इजराइली मूल के लोगों की मान्यता दी थी। अभी लगभग इस समुदाय के 2500 लोग इजराइल में रह रहे हैं। वर्तमान में इस समुदाय के कई युवा इजराइली सेना में कॉम्बैट यूनिट्स में सेवाएं दे रहे हैं। इजराइल सरकार के फैसले के बाद यहूदी धर्मगुरुओं (रब्बियों) की अब तक की सबसे बड़ी टीम भारत आएगी है। यह पिछले दस वर्षों में भारत आने वाली पहली आधिकारिक धार्मिक जांच टीम होगी। टीम में रब्बी (यहूदी धर्मगुरु) और धार्मिक कानून (हलाखा) के जानकार शामिल होंगे। यह टीम पूर्वोत्तर भारत के बनेई मेनाशे समुदाय के उन सदस्यों की धार्मिक पहचान की जांच करेगी।

फ्लाइट में पजामा-चप्पल पहनना बंद करें

अमेरिकी ट्रांसपोर्ट मिनिस्टर एयरपोर्ट ने कहा: ड्रॉइंग रूम नहीं समझे

वाशिंगटन। अमेरिका के ट्रांसपोर्ट मिनिस्टर शॉन डफी ने लोगों से फ्लाइट के दौरान पजामा, स्लीपर और दूसरे घरेलू कपड़े पहनकर एयरपोर्ट नहीं आने को कहा है।

उन्होंने कहा कि, बच्चों को कुछ छूट मिल सकती है, लेकिन बड़ों को एयरपोर्ट को अपना ड्रॉइंग रूम समझने की जरूरत नहीं। उन्होंने बताया कि पिछले कुछ सालों में हवाई यात्रियों की सभ्यता में बहुत गिरावट आई है, इसलिए थैंक्स गिविंग की छुट्टियों से पहले पूरे देश में 'सभ्यता अभियान' शुरू किया जा रहा है। न्यू जर्सी के नेवार्क एयरपोर्ट पर शॉन डफी ने कहा कि कृपया एयरपोर्ट पर स्लीपर और पजामा पहनकर न आएं। जींस और एक साफ-सुथरी शर्ट ही काफी है।

■ बच्चों को कुछ छूट मिल सकती है

थोड़ा सम्मान के साथ कपड़े पहनें तो सबका सफर बेहतर हो जाएगा। उन्होंने यात्रियों से कहा कि पायलट और फ्लाइट अटेंडेंट से 'प्लीज' और 'थैंक यू' बोलें, दूसरों की बैग रखने में मदद करें ये छोटी-छोटी बातें पूरे सफर को खुशगवार बना देती हैं। दरअसल, एफएए के आंकड़ों के मुताबिक 2019 के बाद फ्लाइट में झगड़े और बदतमीजी के मामले 400 प्रतिशत तक बढ़ गए हैं। वहीं, बिहेवियरल एक्सपर्ट का कहना है कि कपड़े सिर्फ फैशन नहीं, सम्मान दिखाते हैं। टेक्सास की एटिकेट एक्सपर्ट डायने गॉट्समैन बोलीं पजामा घर में ठीक है, एयरपोर्ट पर नहीं। पूर्व फ्लाइट अटेंडेंट जैकलीन व्हिटमोर ने कहा जैसे कपड़े पहनते हैं, वैसा ही व्यवहार करने लगते हैं। अच्छे कपड़े पहनने से आत्म-सम्मान बढ़ता है और दूसरों के प्रति भी आदर दिखता है। विशेषज्ञों का मानना है कि अच्छे कपड़े पहनना अमीरी-गरीबी का सवाल नहीं, बल्कि एक-दूसरे के प्रति सम्मान का मामला है।